भारतीय वैश्विक परिषद

यूक्रेन संकट

उभरती वैश्विक व्यवस्था
के लिए
एक संक्रमण बिंदु

पी. एस. राघवन

डी. बी. वेंकटेश वर्मा

स्वर्ण सिंह

उम्मु सलमा बावा

भारतीय वैश्विक परिषद

सप्रू हाउस, नई

दिल्ली 2022

भारतीय वैश्विक परिषद

यूक्रेन संकट

उभरती वैश्विक व्यवस्था

के लिए

एक संक्रमण बिंदु

पी.एस. राघवन

डी.बी. वेंकटेश वर्मा

स्वर्ण सिंह

उम्मु सलमा बावा

भारतीय वैश्विक परिषद

सप्रू हाउस, नई दिल्ली

2022

©आईसीडब्ल्यूए 2022

अस्वीकरण: इन पत्रों में व्यक्त विचार, विश्लेषण और सिफारिशें लेखकों के हैं।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना.....**5**

यूक्रेन संकट: उभरती वैश्विक व्यवस्था के लिए एक संक्रमण बिंदु..... 7
राजदूत पी.एस. राघवन

यूक्रेन संकट: संघर्ष के आर्थिक आयाम और भारत के लिए सबक.....21
राजदूत डी. बी. वेंकटेश वर्मा

यूक्रेन संकट और यूएस हिंद-प्रशांत रणनीति 31
प्रो. स्वर्ण सिंह

यूरोपीय संघ के लिए यूक्रेन संकट के निहितार्थ:
एक अन्योन्याश्रित विश्व में सुरक्षा पर फिर से बातचीत करना.....49
प्रो. उम्मू सलमा बावा

योगदानकर्ताओं के बारे में 65

प्रस्तावना

फरवरी 2022 में छिड़े रूस-यूक्रेन संघर्ष ने विश्व की व्यवस्था में व्याप्त व्यवधानों को और बढ़ा दिया है। यह बात उत्तरोत्तर स्पष्ट होती जा रही है कि यूक्रेन में उभरती स्थिति ने यूरोप की सुरक्षा संरचना और उसके तत्काल हितधारकों से परे भी प्रभाव डाला है। पश्चिमी सहयोगियों द्वारा रूस पर यूक्रेन से संबंधित प्रतिबंधों को लागू करने और रूस द्वारा जवाबी-प्रतिबंधों ने पूर्व और पश्चिम के विभाजन को त्वरित कर अन्योन्याश्रितता को हथियार बना दिया है। विशेष रूप से उच्च ऊर्जा और खाद्य कीमतों ने दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण पर गहरा आघात किया है, जिसने हाल ही में कोविड-19 से उबरने की प्रक्रिया शुरू की थी। यूक्रेन संघर्ष का प्रभाव, अमेरिका और चीन की रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता और रूस-चीन के बढ़ते तालमेल की पृष्ठभूमि में बढ़ते हुए तनाव का सामना कर रहे भारत-प्रशांत क्षेत्र सहित दूर-दूर तक महसूस किया जा रहा है।

आईसीडब्ल्यूए के वर्तमान प्रकाशन में पूर्व राजदूतों और प्रख्यात विद्वानों द्वारा लिखे गए चार पत्र शामिल हैं, जिन्होंने इस प्रस्थापना पर शोध करने की मांग की है कि मौजूदा भू-राजनीतिक बदलावों की पृष्ठभूमि में, यूक्रेन संकट उभरती हुई विश्व व्यवस्था में एक संक्रमण बिंदु सिद्ध होगा। राजदूत पी.एस. राघवन यूक्रेन संकट के निहितार्थों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करते हैं। वे वे संघर्ष का कारण बनने वाले विभिन्न हितधारकों के राजनीतिक और रणनीतिक दृष्टिकोणों और शीत युद्ध के बाद बन रही व्यवस्था पर इसके संभावित प्रभाव की पहचान करते हैं। राजदूत डी.बी. वेंकटेश वर्मा संघर्ष के आर्थिक आयामों पर चर्चा करते हैं। वे कहते हैं कि यूक्रेन संघर्ष ने पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण आयामों के साथ वैश्विक विभाजन को और गहरा कर दिया है, बड़ी शक्तियों के बीच आपसी सामंजस्य की नैतिकता को खत्म कर दिया है, वैश्विक व्यापार और विकास के आधार को कम किया है, क्षेत्रीय संघर्षों को बढ़ाया है और संयुक्त राष्ट्र को विशेष रूप से यूएनएससी की वैधता, और भू-राजनीतिक अस्थिरता को भविष्य के लिए आदर्श बनाने में कमजोर कर दिया है। प्रो. स्वर्ण सिंह का शोधपत्र यूक्रेन संकट और अमरीकी-भारत-प्रशांत रणनीति पर केंद्रित है। उनका तर्क है कि यूक्रेन संकट भारत-प्रशांत के गुरुत्वाकर्षण के केंद्र के रूप में एक नई विश्व व्यवस्था की ओर बढ़ने का एक चालक बिंदु है। प्रो. उम्मू सलमा बावा का शोधपत्र इस संकट का एक यूरोपीय परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है। वे यूरोपीय संघ के लिए यूक्रेन संकट के निहितार्थ पर प्रकाश डालती है। वे उल्लेख करती हैं कि यूक्रेन के युद्ध ने यूरोपीय संघ और रूस के संबंधों पर भी प्रकाश डाला है, जिसका राजनीतिक, आर्थिक और ऊर्जा संबंधों का एक लंबा इतिहास रहा है, संघर्ष की तीव्रता बढ़ने के साथ-साथ यह तेजी से स्पष्ट होने लगा।

भारत ने, एक उत्तरदायी उभरती शक्ति के रूप में मौजूदा संकट के प्रति एक सैद्धांतिक और स्वतंत्र दृष्टिकोण बनाए रखा है। भारत ने शत्रुता को समाप्त करने, नागरिकों को हताहत करने से बचने, नागरिक बुनियादी ढांचे को नष्ट करकरने से बचने, नागिरक बुनियादी ढांचे को नष्ट करने, परमाणु प्रतिष्ठानों की सुरक्षा और बातचीत और कूटनीति के रास्ते खुले रखने का आह्वान किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक से अधिक अवसरों पर इस बात पर जोर दिया है कि यह युद्ध का युग नहीं है। भारत ने इस बात को लगातार रेखांकित किया है कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर में वर्णित राज्यों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सिद्धांतों का सम्मान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के आवश्यक स्तंभ हैं। भारत ने यूक्रेन को मानवीय सहायता भी प्रदान की है।

आईसीडब्ल्यूए को आशा है कि यह प्रकाशन यूक्रेन संकट पर चल रही बातचीत में योगदान करेगा और वैश्विक भू-राजनीति के मौजूदा रुझानों में रुचि रखने वाले विद्वानों और पेशेवरों के लिए उपयोगी होगा।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह
महानिदेशक

भारतीय वैश्विक परिषद
सप्रू हाउस
दिसंबर 2022

यूक्रेन संकट

उभरती विश्व व्यवस्था
के लिए
एक संक्रमण बिंदु

राजदूत पी.एस. राघवन

यूक्रेन में युद्ध ने शीत युद्ध की समाप्ति
के बाद विकसित हुए वैश्वीकरण, बहुपक्षवाद और वित्तीय तंत्र
पर एक गहरी छाया डाली है।

यूक्रेन में युद्ध ने शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विकसित हुए वैश्वीकरण, बहुपक्षवाद और वित्तीय तंत्र पर एक गहरी छाया डाली है। कोविड-19 ने शीत युद्ध के बाद की राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा साझेदारी और गठजोड़ में पहले से ही विद्यमान दोषपूर्ण रेखाओं को स्पष्ट कर दिया था। यूक्रेन युद्ध ने इन दोषों को और बढ़ा दिया और क्षेत्रों, महाद्वीपों, राजनीतिक प्रणालियों और आर्थिक रणनीतियों में नए विभाजन शुरू कर दिए।

युद्ध की नैतिकता, वैधता, राजनीतिक ज्ञान और सैन्य रणनीति की तीव्र आलोचना हो रही है, जो पूर्णतया उचित है। यह विश्लेषण विभिन्न हितधारकों के राजनीतिक और रणनीतिक दृष्टिकोणों की पहचान करना चाहता है, जो युद्ध और शीत युद्ध के बाद बन रही व्यवस्था पर इसके संभावित प्रभाव का कारण बना।
हाल के महीनों में युद्ध और प्रचार की धुंध ने इस तथ्य को पूरी तरह से अस्पष्ट कर दिया है कि, लगभग एक वर्ष पहले, एक संभावित संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस)-रूस जुड़ाव की बात प्रमुखता से चल रही थी, पारस्परिक प्रत्यारोप की नहीं। तब एक मौन स्वीकृति थी कि यूरोप के सुरक्षा व्यवस्था में कुछ सही करने की आवश्यकता है। अब अक्सर मीडिया, शिक्षा जगत और राजनीतिक प्रवचनों में अक्सर यह दावा किया जाता है-कि यूक्रेन पर रूस के आक्रमण ने एक स्थिर सुरक्षा व्यवस्था को बाधित कर दिया, एक अतिशयोक्ति है। इसने जो किया, वह ये है कि इसने शीत युद्ध के बाद की सुरक्षा व्यवस्था में विद्यमान और बिगड़ते असंतुलन को उजागर कर दिया है।

शीत युद्ध के बाद, सोवियत संघ खंडित हो गया और उसका राजनीतिक-सैन्य गठबंधन, वारसॉ पैक्ट, भंग हो गया। लेकिन उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) गठबंधन भंग नहीं हुआ; यह पूर्व की ओर चला गया और वारसॉ संधि के देशों और सोवियत संघ के कई पूर्व घटकों को अवशोषित कर लिया। रूस ने इसे रोकने और इसे और कमजोर करने के नाटो के दबाव के रूप में देखा। काकेशस और मध्य एशिया में हो रहे लोकतंत्र के आंदोलनों को भी उसी पश्चिमी दबाव के हिस्से के रूप में देखा गया। इसके बाद, जब अधिकांश हथियार नियंत्रण समझौते समाप्त हो गए और उनकी तैनाती पर लगा प्रतिबंध हटा लिया गया, रूस-नाटो भौगोलिक इंटरफ़ेस अत्यधिक हथियारबंद बन गया, जिसमें दोनों पक्षों द्वारा परिष्कृत घातक हथियार विकसित और तैनात किए गए। रूस ने, 2000 के दशक के आरंभ में धीरे-धीरे राजनीतिक स्थिरता, सामाजिक सामंजस्य और आर्थिक ताकत का एक स्तर प्राप्त किया, राष्ट्रपति पुतिन की रूस की शिकायतों की अभिव्यक्ति अधिक मुखर हो गई: नाटो के विस्तार ने सोवियत संघ के टूटने से पहले किए गए वादों का उल्लंघन किया; नाटो में यूक्रेन का प्रवेश रूस की खतरे की रेखाओं को पार कर जाएगा; और यह भी कि नाटो की रणनीतिक मुद्रा रूस की सुरक्षा के लिए एक सतत खतरा है।

सोवियत संघ के टूटने और वारसॉ संधि के विघटन के बाद नाटो का विस्तार, अमेरिका की एक रणनीतिक पहल थी-जिसका उद्देश्य एकमात्र महाशक्ति से रणनीतिक स्वायत्तता की यूरोपीय महत्वाकांक्षाओं को कम करना और पूर्वी और मध्य यूरोप के हिस्सों में रूस के पुनरुत्थान की आशंकाओं को दूर करना था। इन वर्षों में, अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ाने और अपने क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव को मजबूत करने के रूस के प्रयास-दोनों पक्षों में संदेह और तनाव की अनुमानित वृद्धि के साथ शीत युद्ध के वर्षों के अनुभवों से सूचित पश्चिमी प्रतिक्रियाओं के खिलाफ रहे। 2008 में, नाटो के यूक्रेन की सदस्यता पाने की आकांक्षाओं को मान्यता देने के निर्णय और बाद में, 2014 में कीव में सरकार के परिवर्तन के लिए इसके प्रोत्साहन ने

क्रीमिया के रूसी कब्जे को उकसाया। पूर्वी यूक्रेन (डोनबास) में रूस समर्थित अलगाववादी आंदोलन ने 2014-15 के मिन्स्क समझौते का नेतृत्व किया, जिसने यूक्रेन के भीतर इस क्षेत्र को एक विशेष दर्जा प्रदान करवाया। यूक्रेन ने इसे अपनी क्षेत्रीय अखंडता को कम करने वाला एक अनुचित परिणाम माना, और अमेरिका के समर्थन से-अपने लाभ के लिए समझौता करने की मांग की। रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा समर्थित एक समझौते से मुकरने का जवाब गुस्से के साथ आरोपों से दिया। कुछ यूरोपीय देशों-विशेष रूप से फ्रांस और जर्मनी ने समय-समय पर गतिरोध को तोड़ने की कोशिश की, जिन्होंने इन समझौतों में मध्यस्थता की-जिसमें यूक्रेन और पूर्वी और मध्य यूरोप के कई देशों के विरोध में थोड़ी सफलता मिली। इस बीच, रूस-पश्चिम के संबंध तेजी से बिगड़े, अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा रूस पर वित्तीय और क्षेत्रीय प्रतिबंधों की एक श्रृंखला के जवाब में रूसी प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं। शीत युद्ध-की तरह महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुद्दों और सैन्य टकरावों के प्रति उनके दृष्टिकोण पर आपसी अंतर ने-रूस-पश्चिम गतिरोध को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से-काकेशस से कैस्पियन और भूमध्य सागर तक और यूक्रेन, जॉर्जिया, सीरिया, ईरान और अफगानिस्तान तक के भौगोलिक क्षेत्रों में बढ़ा दिया गया था।

यूक्रेन की सदस्यता आकांक्षाओं को मान्यता देने के लिए 2008 में नाटो के निर्णय और बाद में 2014 में कीव में सरकार के बदलाव के लिए उसके प्रोत्साहन ने रूस को क्रीमिया पर कब्जे के लिए उकसाया।

शीत युद्ध-की तरह महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुद्दों और सैन्य टकरावों के प्रति उनके दृष्टिकोण पर आपसी अंतर ने-रूस-पश्चिम गतिरोध को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से-काकेशस से कैस्पियन और भूमध्य सागर तक और यूक्रेन, जॉर्जिया, सीरिया, ईरान और अफगानिस्तान तक के भौगोलिक क्षेत्रों में बढ़ा दिया था।

ये तथ्य पश्चिमी और रूसी अकादमिक और राजनीतिक साहित्य में अच्छी तरह से प्रलेखित हैं, हालाँकि राजनीतिक दृष्टिकोण और विश्लेषकों की भौगोलिक स्थिति के अनुसार इन कार्यों और उद्देश्यों की अलग-अलग व्याख्या की गई है, जो स्वाभाविक है।

हालाँकि, यह विडंबना है कि वर्तमान संकट रूस-नाटो कार्यप्रणाली की एक स्पष्ट पहल से बढ़ा है। अमेरिका के राष्ट्रपति, बाइडेन जून 2021 में अपने रूसी समकक्ष से संपर्क किया, ताकि अमेरिका-रूस वार्ता का एक नया चरण शुरू किया जा सके। राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा कि वे रिश्ते में पूर्वानुमान की तलाश कर रहे हैं, जहां वे कम से कम उन वैश्विक मुद्दों पर सहयोग कर सकें, जहां उनके हित जुड़े हों। स्पष्ट रूप से, कारण यह था कि अमेरिका अपनी विदेश नीति की पूरी ऊर्जा, अमेरिका को प्रमुख रणनीतिक चुनौती देने वाले चीन पर केंद्रित करना चाहता था और यूरोप और एशिया में होने वाले कई संघर्षों में संलग्न होकर प्रभावित नहीं होना चाहता था। अमेरिका का अफगानिस्तान से निकल जाना, चाहे जितना भी अराजक हो, पर वह कदम इस मूल मंशा का संकेत देता है। जिनेवा में बाइडेन की प्रेस कॉन्फ्रेंस और बाद में अपने यूरोपीय सहयोगियों के साथ उनकी कूटनीति ने इस परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया।

श्री पुतिन ने इसे रूस की लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने और विश्व स्तर पर राजनीतिक कार्रवाई की अपनी स्वतंत्रता का विस्तार करने के अवसर के रूप में देखा। उन्होंने संकेत दिया कि अगर - अपनी क्षेत्रीय अखंडता की जांच करने और इसके बाहरी प्रभाव को नियंत्रित करने के पश्चिमी पदक्षेप को, जिन्हें रूस द्वारा नाटो की रणनीतिक मुद्रा और अमेरिकी नीतियों के रूप में देखा गया, के संबंध में, रूस की सुरक्षा चिंताओं को पूरा किया जाता है तो रूस इस भू-राजनीतिक पुनर्संतुलन में सहयोग करेगा।

जिनेवा में राष्ट्रपतियों की बैठक ने "रणनीतिक स्थिरता" (हथियारों पर नियंत्रण के लिए) और पारस्परिक रूस-नाटो सुरक्षा पर मसौदा समझौतों के आदान-प्रदान से बातचीत कुछ आगे बढ़ी। दोनों पक्षों ने साइबर सुरक्षा पर चर्चा में हुई प्रगति को स्वीकार किया। अमेरिकी संस्थानों पर रूस की ओर से रैनसमवेयर हमलों में कमी आई है। अमेरिका और रूसी रक्षा प्रमुखों ने संघर्ष की स्थिति और अफगानिस्तान से आतंकवाद पर पर चर्चा करने के लिए सहयोग और संघर्ष के मंचों पर भेंट की। सीआईए के प्रमुख विलियम बर्न्स ने मास्को में राष्ट्रपति पुतिन के साथ विचार-विमर्श किया। ईरान को परमाणु समझौते में वापस लाने के लिए संयुक्त व्यापक कार्य योजना (जेसीपीओए) वार्ता में कुछ सहयोग किया गया था। यूक्रेन के मूल मुद्दे पर भी बातचीत आगे बढ़ी। कीव और मॉस्को में चर्चाओं में, अमेरिका के स्टेट विक्टोरिया नूलैंड के अवर सचिव ने मिन्स्क समझौते के पूर्ण कार्यान्वयन के लिए फ्रेंको-जर्मन मध्यस्थ प्रयासों पर अमेरिकी समर्थन का वादा किया था।

वर्ष 2021 के आखिरी कुछ महीनों में वातावरण में अचानक खटास फैल गई, रूसियों ने डोनबास क्षेत्र की सीमा पर यूक्रेनी सैनिकों के साथ- साथ नाटो के मिसाइल जहाजों और रणनीतिक बमवर्षकों ने काला सागर में और कथित रूप से डोनबास पर कब्जा करने की कोशिश की शिकायत की। पश्चिमी मीडिया ने रूस और बेलारूस के साथ यूक्रेन की सीमाओं पर रूसी सैनिकों के लगातार जमाव पर ध्यान दिया। इसके अतिरिक्त, यूक्रेन के "यूरो-अटलांटिक संस्थानों" का समर्थन करने वाली यूएस-यूक्रेन घोषणा और नॉरमैंडी समूह के राजनीतिक सलाहकारों की बैठक में एक गतिरोध से रूसियों को यह संदेश मिला कि अमेरिका ने यूक्रेन समझौते पर जो वादा किया था, उसे पूरा करने में या तो अनिच्छुक था या ऐसा करने में असमर्थ था। रूस ने यह भी आरोप लगाया कि झूठे संचालन के लिए रूसी तैयारियों के बारे में, पश्चिमी 'खुफिया' खबर, वास्तव में एक नियोजित यूक्रेनी हमले के लिए बनाया गया आवरण था। यह दो पूर्वी "गणराज्यों" की मान्यता और 24 फरवरी के आक्रमण के लिए उकसाने वाला कार्य था। यह रूसी पक्ष की कहानी है।

दूसरी तरफ, यह स्पष्ट था कि, राष्ट्रपति बाइडेन ने जब रूस के संबंध में अपनी पहल शुरू की, तो उन्होंने खुद को अमेरिकी राजनीतिक प्रतिष्ठान की एक शक्तिशाली लहर के विपरीत तैरते हुए पाया।

इस संघर्ष ने विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद से 75 वर्षों में बड़े पैमाने पर शांतिपूर्ण रहे महाद्वीप में मौत, तबाही और विस्थापन का एक अकल्पनीय चक्र खोल दिया है। इसने शीत युद्ध के बाद की दुनिया में भू-राजनीतिक गतिशीलता के बारे में कुछ आश्चर्यजनक घरेलू सच्चाइयों का भी खुलासा किया है।

दूसरी तरफ, यह स्पष्ट था कि, जब राष्ट्रपति बाइडेन ने रूस के संबंध में अपनी पहल शुरू की, तो उन्होंने खुद को अमेरिकी राजनीतिक प्रतिष्ठान की एक शक्तिशाली लहर के विपरीत तैरते हुए पाया। कांग्रेस, खुफिया एजेंसियों और सैन्य-औद्योगिक परिसर के कई लोगों ने राष्ट्रपति पुतिन को एक द्रोही नेता के रूप में देखा, हमेशा की तरह, अमेरिका को उनके साथ वापस व्यापार आरंभ नहीं करना चाहिए। यूरोप में भी रूस के प्रति नीतियों को लेकर तीखे मतभेद हैं। यूनाइटेड किंगडम (यूके) द्वारा दृढ़ता से समर्थित, पोलैंड, रोमानिया और बाल्टिक गणराज्य द्वारा उनकी सुरक्षा और रणनीतिक हितों के लिए रूस पर नाटो की आक्रामक स्थिति को सर्वोत्तम माना जाता है। जॉर्ज डब्ल्यू बुश के बाद से अमेरिकी प्रशासन ने रूस पर दबाव बढ़ाने के लिए जानबूझकर यूरोपीय राय के इस पहलू का समर्थन किया है। पोलैंड और समान विचारधारा वाले यूरोपीय देशों ने, अमेरिका के उकसावे पर ही 2008 में बुखारेस्ट नाटो शिखर सम्मेलन घोषणा में यूक्रेन की नाटो आकांक्षाओं को शामिल करने के लिए जर्मनी और अन्य पर दबाव डाला था।
अमेरिका और कुछ यूरोपीय देशों ने, विशेष रूप से 2014 के बाद यूक्रेन में राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य निवेश किया है। वे यूक्रेन के संघीकरण और रूस से यूरोपीय ऊर्जा के आयात में वृद्धि से प्रभावित होंगे। इन हित समूहों के अलावा यूक्रेनी भी हैं, जिनका 2014 के बाद से अमेरिकी राजनीतिक, व्यापार और रणनीतिक हलकों में प्रभाव बढ़ा है, और जिन्होंने जिनेवा शिखर सम्मेलन द्वारा निर्धारित व्यवस्था के खिलाफ पैरवी की।

जून 2021 और फरवरी 2022 से आठ महीने की उस दुर्भाग्यपूर्ण अवधि में हुई घटनाओं पर इन कारकों का प्रभाव पड़ा या नहीं और किस हद तक पड़ा, इसका खुलासा होना अभी बाकी है। एक संभावना यह है कि बाइडेन प्रशासन ने रूस के साथ शांति "स्थापित" करने के लिए, कभी भी उस हद तक जाने का इरादा नहीं किया था, जिस हद तक रूस चाहता था। एक और संभावना, जिसे आक्रमण के बाद व्यापक रूप से दोहराया गया है, वह यह है कि वास्तव में रूस की कभी भी वार्ता करने में रुचि नहीं थी और पुतिन यूक्रेन पर आक्रमण करने के अवसर की तलाश में थे। यह सिद्धांत मानता है कि उन्होंने अफगानिस्तान से अमेरिका की अराजक वापसी के बाद की कमजोरी और नाटो की अव्यवस्था को देखा और इस अवसर को भुनाने का प्रयास किया।

इस संघर्ष ने विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद से 75 वर्षों में बड़े पैमाने पर शांतिपूर्ण महाद्वीप रहे दिल में मौत, तबाही और विस्थापन के एक अकल्पनीय चक्र को खोल दिया है। इसने शीत युद्ध के बाद की दुनिया में भू-राजनीतिक गतिशीलता के बारे में कुछ आश्चर्यजनक घरेलू सच्चाइयों का भी खुलासा किया है।
निरंकुशता के खिलाफ लोकतंत्र की कथा, के आधार पर रूस के खिलाफ लामबंद होने की मांग की गई थी, पर इस कहानी को व्यापक समर्थन नहीं मिला। पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार शिवशंकर मेनन ने अमेरिकी पत्रिका फॉरेन अफेयर्स के एक लेख में उल्लेख किया कि कई लोकतंत्रों ने युद्ध को इस दृष्टि से नहीं देखा।

जर्मनी में जी7 शिखर सम्मेलन ने दुनिया के प्रमुख लोकतंत्रों के नेताओं के साथ अपनी अब प्रथा बन चुकी आउटरीच बैठक की मेजबानी की। बैठक के बाद अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में, जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज़ ने स्वीकार किया कि उनमें से सभी-भारत, इंडोनेशिया, सेनेगल, दक्षिण अफ्रीका और अर्जेंटीना-इस युद्ध पर जी7 से अलग दृष्टिकोण रखते हैं।

कई अलग-अलग कारणों से, उन्होंने रूस की निंदा नहीं की या अमेरिका के नेतृत्व में उस पर लगे प्रतिबंधों

में शामिल नहीं हुए। एशिया और अफ्रीका के एक बड़े हिस्से ने संयुक्त राष्ट्र के आक्रमण की निंदा करने वाले प्रस्तावों का समर्थन नहीं किया। प्रमुख दक्षिण अमेरिकी देश भी समान रूप से मितभाषी रहे; अक्तूबर की शुरुआत में, जब अर्जेंटीना, बोलीविया, ब्राजील और मैक्सिको ने अमेरिकी राज्यों के संगठन (ओएएस) के एक मजबूत बयान का विकल्प चुना, जिसमें यूक्रेन में रूस की सैन्य तैनाती और यूक्रेन के चार क्षेत्रों पर कब्जा करने की निंदा की गई थी, उस समय भी यही रवैया फिर से प्रदर्शित किया गया था।. जर्मनी में जी7 शिखर सम्मेलन ने दुनिया के प्रमुख लोकतंत्रों के नेताओं के साथ अपनी अब प्रथा बन चुकी आउटरीच बैठक की मेजबानी की। बैठक के बाद अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में, जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज़ ने स्वीकार किया कि उनमें से सभी-भारत, इंडोनेशिया, सेनेगल, दक्षिण अफ्रीका और अर्जेंटीना-इस युद्ध पर जी 7 से अलग दृष्टिकोण रखते हैं।द इकोनॉमिस्ट द्वारा एक और दोषपूर्ण रेखा पर प्रकाश डाला गया। उत्तरी अमेरिका और यूरोप के अधिकांश अमीर देश रूस की कार्रवाई का विरोध करते हैं, इन देशों के पास दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद का 70 प्रतिशत से अधिक है, लेकिन इनकी आबादी का केवल 36 प्रतिशत है। दुनिया के बाकी दो-तिहाई लोग ऐसे देशों में रहते हैं जो तटस्थ या 'रूस के प्रति झुकाव' वाले हैं। इस संघर्ष में पक्ष लेने की अनिच्छा इस तथ्य से भी स्पष्ट होती है कि संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद से रूस को बाहर करने के लिए यूएनजीए के प्रस्ताव पर 82 देशों ने या तो इसका विरोध किया अथवा अनुपस्थित रहे। इसलिए, मानवाधिकार परिषद से निष्कासन के बावजूद, रूस का एक अंतरराष्ट्रीय अलगाव प्रभावी रूप से व्यर्थ सिद्ध हुआ। ब्रिक्स और एससीओ की बैठकों का आयोजन जारी रहा, इंडोनेशिया ने नवंबर में जी-20 शिखर सम्मेलन से रूस को बाहर करने के दबाव का विरोध किया और ओपेक प्लस ने अपने निर्णय लेने के क्रम में रूस को शामिल करना जारी रखा।

वास्तव में, अधिकांश विश्व संघर्ष को विरोधी विचारधाराओं के टकराव या वैश्विक व्यवस्था के लिए एक अस्तित्वगत खतरे के रूप में देखने की बजाय, यूरोपीय सुरक्षा व्यवस्था पर एक विवाद के रूप में देखता है। समान राजनीतिक प्रणालियों के बजाय साझा हितों पर आधारित उनकी संरेखण विचारधारा-संशयवादी और शायद अवसरवादी भी हैं।

प्रतिबंधों का शस्त्रीकरण और इसके मिश्रित परिणाम युद्ध से हुआ एक और रहस्योद्घाटन है। अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत, प्रतिबंध तब तक अवैध हैं, जब तक उन्हें संयुक्त राष्ट्र द्वारा अनुमोदित नहीं किया जाता है।आज यह धारणा लगभग अप्रासंगिक है, जब कि प्रतिबंध देशों के राजनयिक शस्त्रागार में उनकी पसंद का पहला हथियार बन गए हैं, जो कमजोरों पर मजबूत के आर्थिक उत्तोलन पर जोर देते हैं। माध्यमिक प्रतिबंध, जब प्रतिबंधित देश से निपटने के लिए तीसरे देशों को भी "दंडित" किया जा सकता है, वास्तव में मजबूत देशों के खास विशेषाधिकार हैं।

अमेरिका और उसके नाटो सहयोगियों ने रूस के खिलाफ प्रतिबंधों की झड़ी लगा दी, जिसमें जापान, कोरिया और ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य सहयोगी भी शामिल हो गए। उनमें सरकार के मंत्रियों, अधिकारियों और "पुतिन के साथी"-"कुलीन वर्ग" या सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में उद्योग के कप्तानों के रूप में वर्णित अब जाने-पहचाने यात्रा प्रतिबंध और संपत्ति जब्त करना शामिल हैं। कई पहले के प्रतिबंधों से आच्छादित थे, लेकिन इस बार सूची पेकिंग ऑर्डर के शीर्ष पर चली गई-जिसमें राष्ट्रपति पुतिन, उनके राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और रूसी विदेश और रक्षा मंत्री भी शामिल थे। रूस ने दुनिया में प्रतिबंधित व्यक्तियों की सबसे अधिक संख्या-लगभग 5500 होने का संदिग्ध स्तर प्राप्त कर लिया, एक गणना के अनुसार, इसने ईरान के 3600 और सीरिया के 2600 प्रतिबंधित व्यक्तियों को भी पीछे छोड़ दिया।

रूसी बैंकों को स्विफ्ट मैसेजिंग सिस्टम से अलग करने के वित्तीय "परमाणु विकल्प" के द्वारा, अधिकांश

प्रमुख रूसी बैंकों के साथ अमेरिकी और सहयोगियों के बैंकिंग लिंक को तोड़ कर वित्तीय प्रतिबंध पहले से कहीं अधिक बढ़ा दिए गए। 2014 से पहले से लगे कड़े निर्यात नियंत्रण और प्रौद्योगिकी खंडन व्यवस्था को और कठोर कर दिया गया था। तेल और गैस, प्रौद्योगिकी, रसद, शिपिंग, विमानन, उपभोक्ता और अन्य क्षेत्रों की पश्चिमी कंपनियों ने अपनी रूसी गतिविधियों को समाप्त या निलंबित कर दिया। दुनिया भर के आयातकों ने-अपनी सरकारों या नागरिक समाजों से प्रतिबंधों या नैतिक दबाव की आशंका के कारण स्वेच्छा से रूस के साथ व्यापार निलंबित कर दिया।

इसकी क्षेत्रीय और भौगोलिक पहुंच पहले से निस्संदेह रूप से कहीं अधिक कठोर है, लेकिन प्रतिबंध व्यवस्था में अंतराल ने इसकी सीमाओं को उजागर कर दिया है। उनमें महत्वपूर्ण अलग-अलग तरीके थे। अमेरिका ने रूसी तेल और गैस के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया, लेकिन यूरेनियम पर नहीं लगाया, क्योंकि इससे घरेलू बिजली की कीमतों में तेजी से वृद्धि होती। अमेरिका अपने बिजली संयंत्रों के लिए 38 प्रतिशत यूरेनियम का आयात रूस और कजाकिस्तान से करता है (जिनकी खदानें बड़े पैमाने पर रूस के स्वामित्व वाली रोसाटॉम के स्वामित्व में हैं)। अमेरिका ने उर्वरकों को भी प्रतिबंधों से छूट दी: रूस और बेलारूस दुनिया के 40 प्रतिशत पोटाश का उत्पादन करते हैं, और उर्वरक आयात प्रतिबंध से अमेरिकी कृषि आदानो की कीमतों को नुकसान होगा। यूरोपीय संघ अपने लगभग 60 प्रतिशत ऊर्जा आयात-तेल, गैस और कोयले के लिए रूस पर निर्भर है और उनके आयात पर तुरंत प्रतिबंध नहीं लगाया है। रूस से बिजली के आयात को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने पर यूरोपीय संघ के भीतर की वार्ता कष्टप्रद रूप से भग्न और विभाजनकारी रही है। यूके ने शुरू में कहा था कि वह रूसी तेल और गैस के आयात को समाप्त कर देगा, लेकिन इस वादे की वर्तमान स्थिति स्पष्ट नहीं है। जापान ने घोषणा की कि वह सखालिन द्वितीय परियोजना में अपने निवेश से पीछे नहीं हटेगा, क्योंकि यह उसकी ऊर्जा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

एक गणना के अनुसार, रूस ने 3600 प्रतिबंधित व्यक्तियों वाले ईरान और 2600 प्रतिबंधित व्यक्तियों वाले सीरिया को पीछे छोड़ते हुए दुनिया में प्रतिबंधित व्यक्तियों की सबसे बड़ी संख्या-लगभग 5500 प्रतिबंधित व्यक्तियों का संदिग्ध अंतर प्राप्त किया।

रूस से बिजली के आयात को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने पर यूरोपीय संघ के भीतर की वार्ता कष्टप्रद रूप से भग्न और विभाजनकारी रही है।

कुलीन वर्गों पर भी अमेरिका और यूरोप ने सावधानी से कदम रखा है। प्रारंभिक रिपोर्टें थीं कि रूस के पांच सबसे अमीर व्यक्तियों में से चार (और शीर्ष बीस में से लगभग आधे) को अमेरिका या यूरोप में प्रतिबंधित नहीं किया गया था। एक मामले में, यूएस ट्रेजरी ने स्टील और लौह अयस्क पर अपने स्वयं के प्रतिबंधों के आदेश का संचालन जारी रखने के लिए उसके द्वारा आयोजित कंपनियों को लाइसेंस देकर स्पष्ट रूप से उल्लंघन किया। तथ्य यह है कि कुलीन वर्ग के कई लोग सार्वजनिक रूप से कारोबार करने वाली कंपनियों में प्रमुख शेयरधारक हैं, जो पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण कच्चे माल का उत्पादन करते हैं। 2018 से कुछ सबक मिले थे, जब रूस के एल्युमीनियम के प्रमुख अरबपति प्रमोटर रुसल पर प्रतिबंधों ने अमेरिका से लेकर यूरोप और ऑस्ट्रेलिया तक के निवेशकों को नुकसान पहुँचाया और एल्युमीनियम की कीमतों में उछाल का कारण बना। प्रतिबंधों को वापस लेने के लिए मान वाला तरीका खोजना पड़ा था।
तुर्की प्रतिबंधों पर एक महत्वपूर्ण रुकावट है, जो नाटो का सदस्य है, यह रणनीतिक रूप से काला सागर पर

और बोस्फोरस जलडमरूमध्य में स्थित है। इसने रूसी काला सागर बंदरगाहों से व्यापार की सुविधा प्रदान की है। यूएई भी प्रतिबंध व्यवस्था में भी शामिल नहीं हुआ है, जिससे अबू धाबी और दुबई रूस के अंदर और बाहर लेनदेन के लिए प्रमुख वित्तीय केंद्र बन गए हैं। वास्तव में, अधिकांश पश्चिम एशियाई देशों ने रूसी कार्रवाई की निंदा करने या प्रतिबंध व्यवस्था में भाग लेने से काफी हद तक परहेज किया है।

पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण ऊर्जा और कच्चे माल के आदान-प्रदान के आपूर्तिकर्ता के रूप में रूस की प्रमुख भूमिका प्रतिबंधों की दुखती रग साबित हुई। इन तत्वों को प्रतिबंधों से बाहर करने का मतलब था कि सभी प्रमुख रूसी बैंकों को स्विफ्ट से अलग नहीं किया जा सकता था। उनमें से दो ऊर्जा व्यापार की सेवा के लिए स्विफ्ट प्रणाली में बने रहे, जिसका अर्थ था कि वे प्रभावी रूप से अन्य व्यापार के लिए भी काम कर सकते थे। बड़ी संख्या में छोटे रूसी बैंक स्विफ्ट प्रणाली से जुड़े हुए हैं और प्रतिबंधों के अधीन नहीं हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि रूस ने 2022 की पहली तिमाही में 65 बिलियन अमेरिकी डॉलर (द इकोनॉमिस्ट द्वारा उद्धृत आंकड़ों के अनुसार) के ऊर्जा निर्यात राजस्व में वृद्धि की-वर्ष-दर-वर्ष 80 प्रतिशत की वृद्धि है! अप्रैल 2022 में, जब यूरोपीय आयोग रूसी तेल पर प्रतिबंध लगाने पर आम सहमति बनाने की कोशिश कर रहा था, अमेरिकी ट्रेजरी सचिव ने चेतावनी दी कि पूर्ण यूरोपीय प्रतिबंध का मतलब अमेरिकी जनता के लिए गैसोलीन की कीमतों में असहनीय वृद्धि होगी। भारतीय, चीनी और अन्य ऊर्जा आयातकों ने प्रस्ताव पर सस्ते रूसी तेल की उनकी खरीद की मौन सहमति के रूप में इसकी सही व्याख्या की। इसलिए, प्रतिबंधों से एक महत्वपूर्ण सबक यह मिला था कि वे अत्यधिक संसाधन-संपन्न देश के खिलाफ उतने प्रभावी नहीं हैं, जितने कम संपन्न देश के खिलाफ। सीधे शब्दों में कहें तो रूस ईरान या वेनेजुएला नहीं था।

इसलिए, प्रतिबंधों से एक महत्वपूर्ण सबक यह मिला था कि वे अत्यधिक संसाधन-संपन्न देश के खिलाफ उतने प्रभावी नहीं हैं, जितने कम संपन्न देश के खिलाफ। सीधे शब्दों में कहें तो रूस ईरान या वेनेजुएला नहीं था।

प्रतिबंधों (इसे लगाने वालों के लिए) से दूसरा अप्रिय सबक रूस पर करारा वार कर पाने में उनकी विफलता थी। रूस के विदेशी मुद्रा भंडार को फ्रीज करने और इसके प्रमुख बैंकों को "डी-स्विफ्टिंग" करने का हथौड़ा रूसी अर्थव्यवस्था को तेजी से अपने घुटनों पर लाने के लिए चलाया गया था। तत्काल प्रभाव, वास्तव में, नाटकीय था, क्योंकि डॉलर के मुकाबले रूबल 23 फरवरी के अपने मूल्य के करीब आधा हो गया था, और मॉस्को स्टॉक एक्सचेंज को जल्दबाजी में बंद करना पड़ा था। लेकिन, जैसा कि पश्चिमी व्यापार मीडिया ने नियमित रूप से रिपोर्ट किया है, रूसी अर्थव्यवस्था ने अपने सेंट्रल बैंक द्वारा मौद्रिक हस्तक्षेप और बढ़ते ऊर्जा निर्यात राजस्व के साथ प्रतिबंधों को कम कर दिया है। 2022 के पहले चार महीनों में रूस का चालू खाता अधिशेष 2021 की समान अवधि की तुलना में लगभग चौगुना हो गया, रूबल ने अपना पूर्व-आक्रमण मूल्य पुनः प्राप्त ही नहीं किया बल्कि इसे और मजबूत किया, और रूस ने अपने विदेशी-मुद्रा बांड दायित्वों का सम्मान करना जारी रखा। द इकोनॉमिस्ट ने बताया कि रूसी एक बार फिर कैफे, बार और रेस्तरां में "काफी स्वतंत्र रूप से" खर्च कर रहे थे। रूस के सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट के अनुमान उत्तरोत्तर कम निराशावादी होते गए। रूस लगभग निश्चित रूप से मध्यम से लंबी अवधि के लिए प्रौद्योगिकी इनकार वाली व्यवस्थाओं द्वारा नकारात्मक रूप से प्रभावित होगा, लेकिन तत्काल अवधि में, प्रतिबंध लगाने वाले देशों पर प्रभाव को कम करते हुए, प्रतिबंधों ने रूस को कड़ी टक्कर देने के "स्मार्ट" उद्देश्य को पूरा नहीं किया।

तीसरा प्रासंगिक बिंदु, जिसे दुनिया और विशेष रूप से विकासशील दुनिया ने प्रतिबंधों से नोट किया है, वह यह है कि वे वस्तुतः हर संस्था के शस्त्रीकरण और वैश्वीकरण की व्यवस्था-माल, प्रौद्योगिकियों, लोगों और वित्त की मुक्त आवाजाही में किस तरह से शामिल हैं। रूस के खिलाफ प्रतिबंधों को अंततः वापस लिया जा सकता है-शायद धीरे-धीरे और अपूर्ण रूप से-लेकिन उन्होंने मजबूत आर्थिक विकल्पों की एक व्यापक सूची का खुलासा किया है जो कमजोरों के खिलाफ ताकतवर लोगों के लिए उपलब्ध है। यह अनिवार्य रूप से कम शक्तिशाली राष्ट्रों के आर्थिक व्यवहार को प्रभावित करेगा, ऐसे उपायों के खिलाफ एहतियाती व्यवस्था की दिशा में: वे वर्तमान अंतरराष्ट्रीय वित्तीय धमनियों को दरकिनार करने के लिए वाशिंगटन और ब्रुसेल्स से स्वतंत्र प्लेटफॉर्म विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की उप प्रबंध निदेशक गीता गोपीनाथ ने टिप्पणी की है कि वित्तीय प्रतिबंध वैश्विक वित्तीय प्रणाली के विखंडन में योगदान दे सकते हैं, क्रिप्टो मुद्राओं से स्थिर सिक्कों और सेंट्रल बैंक डिजिटल मुद्राओं तक, डिजिटल वित्त को अपनाने को बढ़ावा दे सकते हैं और दीर्घावधि में, अमेरिकी डॉलर के वैश्विक प्रभुत्व को कम करते हैं।

निश्चित रूप से, डॉलर निकट भविष्य के लिए वैश्विक आरक्षित मुद्रा बना रहेगा, लेकिन अमेरिकी डॉलर को दरकिनार कर द्विपक्षीय/बहुपक्षीय व्यवस्था करने की मांग करने वाले देशों और मुद्राओं के लिए दरवाजे को थोड़ा सा खोला जा सकता है।

रूस के खिलाफ प्रतिबंधों को अंततः वापस लिया जा सकता है-शायद धीरे-धीरे और अपूर्ण रूप से-लेकिन उन्होंने मजबूत आर्थिक विकल्पों की एक व्यापक सूची का खुलासा किया है जो कमजोरों के खिलाफ ताकतवर लोगों के लिए उपलब्ध है।

बहुपक्षीय निर्णय लेना, विशेष रूप से प्रमुख वैश्विक राजनीतिक या सुरक्षा मुद्दों पर, मृतप्राय हो चुका है।

बहुपक्षीय निर्णय लेना, विशेष रूप से प्रमुख वैश्विक राजनीतिक या सुरक्षा मुद्दों पर, मृतप्राय हो चुका है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद बीच से विभाजित हो गई है, जिससे यह शांति और सुरक्षा के सभी प्रमुख मामलों से निपटने में अक्षम हो गई है। व्यापार, आवाजाही और प्रौद्योगिकियों की बाधाएं वैश्वीकरण के लाभों को नष्ट करने का खतरा बन गई हैं।नाटो के महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने मई में दावोस में विश्व आर्थिक मंच से की गई घोषणा में व्यापार के नए राजनीतिक निर्धारकों को परिभाषित किया, जब उन्होंने कहा कि "स्वतंत्रता मुक्त व्यापार से अधिक महत्वपूर्ण है" और "मूल्यों की सुरक्षा लाभ से अधिक महत्वपूर्ण है"।

जून में, विकसित देशों के एक समूह (ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, जापान, कोरिया गणराज्य, स्वीडन, ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोपीय आयोग) ने "मजबूत, जिम्मेदार महत्वपूर्ण खनिज आपूर्ति श्रृंखलाएं" बनाने के लिए खनिज सुरक्षा भागीदारी (एमएसपी) बनाने की घोषणा की। आपूर्ति श्रृंखला लचीलेपन के लिए इस तरह के बंद समूह वैश्विक उत्तर-दक्षिण विभाजन को केवल और बढ़ा सकते हैं।
रूसी ऊर्जा दुविधा युद्ध के बाद भी यूरोप को डगमगाएगी (जब भी और जैसे भी यह समाप्त होगा)। रूसी जीवाश्म ईंधन से अपने को दूर करने के त्वरित प्रयास में, इसे उच्च लागत और अंतरिम कमी को स्वीकार करते हुए, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों के लिए अपने कार्यक्रमों को तेजी से चलाना होगा। अक्षय ऊर्जा के उत्पादन

को एक बिंदु से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है, यूरोपीय देशों ने युद्ध शुरू होने से पहले ही यह पता लगा लिया था। उनके वर्तमान तीव्र ऊर्जा संकट का कारण यह है कि यूरोप के नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादन से संबंधित पहले के अनुमान गलत साबित हुए-सूरज देर तक नहीं चमका और हवाएँ पर्याप्त रूप से नहीं चलीं। इसके अलावा, संक्रमण के दर्द को अलग-अलग वितरित किया जाएगा-आज कोई देश जितनी अधिक मात्रा में सस्ती रूसी गैस खरीदता है, वैकल्पिक स्रोतों से उसकी ऊर्जा लागत में उतनी ही अधिक वृद्धि होती है, और इसलिए इसके आर्थिक विकास पर उतना ही अधिक दबाव पड़ता है। यह "सुरक्षा प्रीमियम" है, यूरोपीय लोगों को गारंटीकृत वैकल्पिक आपूर्ति के लिए इसका भुगतान करने के लिए कहा जा रहा है। यह देखा जाना बाकी है कि क्या युद्ध से उत्पन्न भावनाओं के कम होने और चुनावी मजबूरियों के बाद भी राजनीतिक नेता इस आर्थिक बलिदान के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे।

अमेरिकी हितों को यूरोप की ऊर्जा सुरक्षा बहस के साथ घनिष्ठ रूप से जोड़ा गया है। जर्मनी के लिए, नॉर्डस्ट्रीम 2 (एनएस2) रूस-जर्मनी गैस पाइपलाइन उसके उद्योगों के लिए गैस का सबसे सस्ता स्रोत है। दूसरों ने इसे एक भू-राजनीतिक परियोजना के रूप में निरूपित किया, जिससे रूसी ऊर्जा पर यूरोपीय निर्भरता बढ़ गई। इस तर्क ने स्वार्थी हितों पर परदा डाल दिया। यूक्रेन के लिए, रूस और यूरोप दोनों के साथ, गैस पारगमन राजस्व महत्वपूर्ण था, साथ ही पारगमन ने इसे लाभ भी दिया था। एनएस2 के खिलाफ अमेरिका का "भू-राजनीतिक" तर्क यूरोप को एलएनजी निर्यात करने में उसके व्यावसायिक हित से अच्छी तरह से मेल खाता है, रूस से गैस पाइपलाइन बनाने वाली कंपनियों के खिलाफ अमेरिकी प्रतिबंधों द्वारा प्रबलित है। यूरोप में एलएनजी निर्यात में वृद्धि को स्पष्ट रूप से प्रतिबंधों के लिए प्रेरणा बताया गया है। जो यूरोपीय देश एनएस2 का विरोध करते हैं, वे अमेरिका से आयात बढ़ाने के लिए अपने एलएनजी आयात के बुनियादी ढांचे को बढ़ा रहे हैं। युद्ध का परिणाम यूरोप के ऊर्जा केंद्र को पूर्व की ओर ले जाना हो सकता है, जिसमें उत्तर-दक्षिण आपूर्ति मार्गों को पूर्व-पश्चिम वाले मार्गों से बदलना शामिल है, जिसमें अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का मजबूत निवेश हो सकता है।

यूक्रेन पर रूस की आक्रामकता के सामने यूरोप की ठोस एकता का जश्न मनाया जा रहा है। लेकिन युद्ध द्वारा उजागर किए गए राजनीतिक, सैन्य, आर्थिक और ऊर्जा के मुद्दे मध्यम अवधि में यूरोप में राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों के विन्यास को प्रभावित कर सकते हैं। वर्तमान स्थिति में एक संयुक्त मोर्चे के महत्व पर जोर देते हुए भी, फ्रांस और जर्मनी के नेताओं ने यूरोप के भीतर और बाहर अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक और सैन्य स्थानों के साथ, यूरोप के लिए रणनीतिक स्वायत्तता के लक्ष्य को दोहराया है। यूरोप का अपने लिए एक रणनीतिक स्वायत्तता बनाने का पहला प्रयास 1990 के दशक के अंत/2000 के दशक की शुरुआत में हुआ था, जब एक महत्वाकांक्षी लिस्बन एजेंडा और समान रूप से महत्वाकांक्षी यूरोपीय सामान्य सुरक्षा और रक्षा नीति का अनावरण किया गया था। यूरोपीय संघ के विस्तार और अमेरिकी पहल (नाटो विस्तार और इराक युद्ध) की चुनौतियों ने उन महत्वाकांक्षाओं के लिए आधार बनाया। अमेरिका में ट्रम्प के राष्ट्रपतित्व के समय रणनीतिक स्वायत्तता पर फ्रेंको-जर्मन आर्टिकुलेशन को पुनर्जीवित किया गया था। बाइडेन प्रशासन ने 2021 के मध्य में, चीन से चुनौती पर अपनी बाहरी ऊर्जा को केंद्रित करने की इसे अपनी रणनीति में निहित किया था, जो एक अंतर्निहित स्वीकृति थी कि यूरोप को अपनी परिधि का प्रबंधन करने के लिए अपने साधन विकसित करने चाहिए। यह राष्ट्रपति बाइडेन द्वारा जी7, नाटो और यूरोपीय संघ की बैठकों के लिए यूरोप के अपने विस्तारित दौरे के दौरान व्यक्त किए गए संदेशों के माध्यम सामने आया जो, जहां उन्होंने दुनिया के लोकतंत्रों के चीन पर अभिसरण और नाटो से इससे उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों को पहचानने के बारे में बात की। यूक्रेन युद्ध ने उस विचार को ताक पर रख दिया है लेकिन व्यापक अमेरिकी समर्थन के बिना अपनी रक्षा करने में यूरोप की असमर्थता, अपनी रणनीतिक दिशा पर यूरोपीय आत्मनिरीक्षण को पुनर्जीवित कर सकती है। रूस के खिलाफ खड़े होने में

अमेरिका का समर्थन महत्वपूर्ण रहा है, लेकिन ऐसे प्रश्न भी उठे हैं कि क्या इस युद्ध में अमेरिका का दृष्टिकोण पूरे यूरोप के दृष्टिकोण के अनुरूप है। महाद्वीप में युद्ध के बाद उभरते प्रतिबिंबों से यूरोप के भविष्य के दिशा का पता चलेगा। साथ ही, यह पहचानना की आवश्यक है कि आज का यूरोप अधिक विविध और अधिक अस्थिर है-जिससे एक केंद्रित महाद्वीप-व्यापी सामरिक कंपास की खोज में समस्या हो सकती है।

रूस के खिलाफ प्रतिबंधों को अंततः वापस लिया जा सकता है-शायद धीरे-धीरे और आध-अधूरे रूप में-लेकिन उन्होंने मजबूत आर्थिक विकल्पों की एक व्यापक सूची का खुलासा किया है जो कमजोरों के खिलाफ ताकतवर लोगों के लिए उपलब्ध है।

बहुपक्षीय निर्णय लेना, विशेष रूप से प्रमुख वैश्विक राजनीतिक या सुरक्षा मुद्दों पर, मृतप्राय हो चुका है।

इससे नाटो का भविष्य भी संबद्ध है। नाटो की एकता और विस्तार के इस विजयी क्षण में यह विरोधाभास जैसा लग सकता है, युद्ध के बाद का भविष्य फिर से सवालों के घेरे में आ सकता है।

नाटो देश आज असमान आर्थिक विकास के भूगोल और राजनीतिक परंपराओं और ऐतिहासिक चेतना की विविधता में फैले हुए हैं। वैचारिक एकजुटता (कम्युनिस्ट विस्तार के खिलाफ मुक्त दुनिया) और एक अस्तित्वगत सैन्य खतरे के जिस मूल गोंद ने नाटो को जोड़े रखा -वह साम्यवाद और वारसॉ संधि के पतन के साथ भंग हो गया। कोई विचारधारा नहीं है जिसका विरोध करना हो, साथ ही भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर खतरे की धारणा भी अलग-अलग होती है। इस विषमता का अर्थ है हितों की विविधता। अमेरिकी नेतृत्व मतभेदों को खत्म करने में सफल रहा है, लेकिन अगर यह युद्ध रूस से सैन्य खतरे की स्पष्ट कमी के साथ समाप्त होता है तो देशों की बढ़ती महत्वाकांक्षाएं इसे तेजी से कठिन बना देंगी। यूरोप के नाटो सदस्यों को यह तय करने के लिए कि क्या यह शीत युद्ध के बाद की दुनिया के लिए एक उपयुक्त राजनीतिक- सैन्य मॉडल है, इसकी निर्णय लेने की प्रक्रिया और अनुच्छेद V (सामूहिक आत्मरक्षा) के व्यावहारिक (घोषणात्मक के बजाय) निहितार्थ, और वर्तमान संघर्ष में इसकी भूमिका और कार्यों की जांच करने की आवश्यकता हो सकती है।

जब भी युद्ध समाप्त होगा, यूरोप को युद्ध से उत्पन्न एक प्रमुख सामाजिक आर्थिक चुनौती के साथ छोड़ दिया जाएगा। यूक्रेन का पुनर्निर्माण और इसकी विस्थापित आबादी का पुनर्वास एक बहु-वर्षीय, बहु-अरब डॉलर की परियोजना होगी, जिसके लिए संसाधन खोजने होंगे। इसके अलावा, रूसी ऊर्जा से फिर से उन्मुख होना और तेजी से कम हो रहे जलवायु लक्ष्यों को पूरा करना, क्योंकि रूसी ऊर्जा स्रोतों से दूर जाना यूरोपीय देशों को अस्थायी अंतर को भरने के लिए अधिक प्रदूषणकारी ईंधन की ओर ले जाता है। कई अनुमानों के अनुसार लगभग 7 मिलियन यूक्रेनियन विस्थापित हुए हैं।

पोलैंड जैसे देशों ने अप्रवासन का खामियाजा उठाया है-कुछ ने अपनी राष्ट्रीय आबादी के 5 प्रतिशत से अधिक संख्या में शरणार्थियों को स्वीकार कर लिया है। जिसके आर्थिक और सामाजिक परिणाम होने निश्चित हैं। ये ऐसी समस्याएं हैं, जिनकी कीमत युद्ध के हर दिन के साथ बढ़ती जा रही है।

राष्ट्रपति पुतिन के यूक्रेन पर आक्रमण ने उनके और उनकी सरकार पर निर्देशित आक्रोश का एक आधार उत्पन्न कर दिया है।

स्वयं रूस, उसके लोगों, उसके झंडे, उसके सांस्कृतिक संस्थानों और खेल हस्तियों का भी बहिष्कार हुआ है। हालाँकि, यह अपने राजनीतिक नेतृत्व के कृत्यों के लिए पूरे देश, उसके लोगों, इतिहास और संस्कृति को अस्वीकार करना सही विकल्प नहीं है।

इससे भी बड़ी बात, अगर वह देश दुनिया का सबसे बड़ा देश हो, जो चीन से यूरोप तक, एक विशाल यूरेशियन भूभाग में फैला हुआ है। रूस दुनिया में प्राकृतिक गैस, तेल और कोयले के शीर्ष तीन निर्यातकों में से एक है, जो विश्व की अधिकांश यूरेनियम आपूर्ति को नियंत्रित करता है। यह दुनिया के एल्यूमीनियम और तांबे का दसवां हिस्सा, बैटरी-ग्रेड निकल का पांचवां हिस्सा प्रदान करता है और ऑटोमोटिव, इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा उद्योगों में महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों वाले कीमती धातुओं के बाजार पर हावी है। यह गेहूं और उर्वरकों का दुनिया का सबसे बड़ा निर्यातक है। इसलिए, यदि इस युद्ध का अंत टिकाऊ होना है, तो न केवल यूरोप में, बल्कि एशिया में भी दुनिया के सबसे बड़े देश को एक समान सुरक्षा व्यवस्था में समायोजित करना होगा।

उत्तरार्द्ध के संदर्भ में, चीन-रूस और अमेरिका-चीन समीकरणों पर युद्ध का प्रभाव महत्वपूर्ण है। युद्ध की शुरुआत में, लोकप्रिय जानकारी यह थी कि रूस-चीन रणनीतिक साझेदारी अपने शिखर पर पहुंच गई थी। चार फरवरी के पुतिन-शी के संयुक्त बयान में दोनों देशों के बीच संबंधों को "शीत युद्ध के दौर के राजनीतिक और सैन्य गठजोड़ से बेहतर" के रूप में वर्णित किया गया है, साथ ही यह घोषणा की गई कि "सहयोग का कोई 'निषिद्ध' क्षेत्र नहीं हैं"। रूस-चीन के बयानों में ऐसी अतिशयोक्ति आम है; 2021 के मध्य में पहले के एक बयान में भी बहुत भिन्न समीकरण नहीं थे।

वास्तव में, चीन युद्ध पर अपनी सार्वजनिक मुद्रा में चौकस रहा है: रूस के अविभाज्य सुरक्षा के अधिकार का समर्थन करने और संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न प्रस्तावों पर रूस के साथ मतदान (या अनुपस्थित) करने के लिए सही शोर करते हुए, उसने राजनीतिक, आर्थिक या सैन्य रूप से रूस का समर्थन करने के लिए कोई बड़ी पहल नहीं की है।

रूस और यूक्रेन के बीच शत्रुता के प्रकोप ने जून 2021 में राष्ट्रपति बाइडेन द्वारा आरंभ की गई पहल को बाधित कर दिया। जैसा कि रेखांकित किया गया था, उस पहल का मूल अमेरिका के लिए रूस के साथ एक थोड़े समय के समझौते पर काम करना था ताकि वह यूरोपीय मंच से कम संलग्न हो सके और हिंद-प्रशांत में अधिक, जहां इसने अगले दशकों के लिए अपनी प्रमुख रणनीतिक चुनौती देखी। राष्ट्रपति बाइडेन ने राष्ट्रपति पुतिन के साथ अपनी बैठक के बाद सार्वजनिक बयानों में काफी पारदर्शी रूप से संकेत दिया था कि अमेरिका का प्रयास रूस के साथ तनाव कम करने की पेशकश करके रूस और चीन के बीच जगह बनाना होगा।

जारी युद्ध के दौरान, अमेरिकी कार्रवाइयों ने संकेत दिया है कि इसका ध्यान चीन की चुनौती से नहीं हटा है। हालाँकि, युद्ध की समाप्ति यह निर्धारित करेगी कि क्या अमेरिका रूस-चीन बंधन को कमजोर करने में सफल होगा, इस प्रकार चीन के प्रति अपने हाथ मजबूत करेगा, या उसे चीन से निपटना होगा जो एक कमजोर रूस पर हावी होगा-जिससे रूस के अपार प्राकृतिक संसाधनों और सैन्य प्रौद्योगिकियों तक उसकी आसान पहुंच होगी। उत्तरार्द्ध का अर्थ मध्य एशिया में एक अधिक प्रभावशाली चीनी उपस्थिति और भारत

के उत्तर और पश्चिम में व्यापक यूरेशियन भूभाग भी होगा। भारत के लिए इसके निहितार्थ स्पष्ट हैं।

भारत की विदेश नीति ने रूस की निंदा करने और प्रतिबंधों में शामिल होने के दबाव का सामना किया। इसके कार्य इसके रणनीतिक और सुरक्षा हितों से प्रेरित होते हैं, जो इसके भूगोल, ऐतिहासिक अनुभवों और रक्षा आवश्यकताओं द्वारा तैयार किए गए हैं। यूक्रेन युद्ध ने भारत के महाद्वीपीय और समुद्री किनारों पर बलों की पहले से ही जटिल बातचीत को और जटिल बना दिया है, जिससे इसकी रणनीतिक चुनौतियां और अधिक कठिन हो गई हैं और इसके विकल्प अधिक जटिल हो गए हैं। इसका मतलब है कि प्रत्येक के हितों के अनुकूल तरीके से कई साझेदारियों को बनाए रखना। हालाँकि, पूरे संघर्ष के दौरान भारत द्वारा जारी रखी गई निरंतर उच्च-स्तरीय द्विपक्षीय और बहुपक्षीय बातचीत से स्पष्ट होता है कि भारत के साझेदारों ने उसकी रणनीतिक स्वायत्तता के चालक हितों को स्वीकार किया है।

वर्तमान स्थिति में एक संयुक्त मोर्चे के महत्व पर जोर देते हुए भी, फ्रांस और जर्मनी के नेताओं ने यूरोप के भीतर और बाहर अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक और सैन्य स्थान के साथ, यूरोप के लिए रणनीतिक स्वायत्तता के लक्ष्य को दोहराया है।

व्यापक अमेरिकी समर्थन के बिना अपनी रक्षा करने में यूरोप की असमर्थता, अपनी रणनीतिक दिशा पर यूरोपीय आत्मनिरीक्षण को पुनर्जीवित कर सकती है।

यूक्रेन युद्ध और उस पर प्रतिक्रिया का ग्राफिक संदेश यह है कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से दुनिया नाटकीय रूप से बदल गई है। हाल के दशकों में, दुनिया भर में वस्तुओं, लोगों, विचारों और प्रौद्योगिकियों की मुक्त आवाजाही ने अलग-अलग राजनीतिक और आर्थिक भार वाले कई राज्य पक्षों को सशक्त किया है। वे अपनी राष्ट्रीय आकांक्षाओं के लिए जगह को अधिकतम करने के लिए विचारधारा से निरपेक्ष रहकर बाहरी साझेदारी बनाना चाहते हैं। एक नई वैश्विक व्यवस्था, या एक क्षेत्रीय व्यवस्था के लिए भी इन वास्तविकताओं को पहचानना आवश्यक है; इसे शीत युद्ध के साँचे निकाल कर नहीं ढाला जा सकता है।
प्रभावी रूप से रूस-नाटो युद्ध के बीच जारी अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति, इन वास्तविकताओं को स्वीकार करती है। यह दावा करती है कि "शीत युद्ध के बाद का युग निश्चित रूप से समाप्त हो गया है और प्रमुख शक्तियों के बीच एक प्रतियोगिता चल रही है कि आगे क्या होगा"। यह लोकतंत्रों के साथ "भले ही वे सभी मुद्दों पर हमसे सहमत न हों" और गैर-लोकतांत्रिक देशों के साथ, जब तक कि वे एक नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली का समर्थन करते हैं, अमेरिकी सहयोग की परिकल्पना करती है। यह स्वीकार करती है कि जलवायु परिवर्तन, खाद्य असुरक्षा, संचारी रोग, आतंकवाद, ऊर्जा की कमी और मुद्रास्फीति जैसी सीमा पार की चुनौतियों से भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, राष्ट्रवाद और लोकलुभावनवाद को बढ़ाने के अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में निपटना होगा। यह अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को दोबारा बदलने के इरादे और व्यापक शक्ति दोनों के साथ एकमात्र प्रतियोगी के रूप में चीन की पहचान करती है। यह देशों की इन आशंकाओं को भी स्वीकार करता है कि अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा संघर्ष का कारण बन सकती है, और "कठोर गुटों" की दुनिया को रोकने के लिए प्रतिबद्ध है। अमेरिकी रणनीति में यह समझ शामिल होगी कि एक अधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों पर सहयोग को प्रभावित करती है और सहयोग की अनिवार्यता प्रतिस्पर्धा को, समान रूप से प्रभावित करती है। वर्तमान विश्व अव्यवस्था में संघर्ष को नियंत्रण में रखने के लिए यह एक व्यावहारिक दृष्टिकोण है, भले ही शीत युद्ध के बाद का क्रम अभी भी निर्मित हो रहा हो।

इसलिए, यदि इस युद्ध का अंत टिकाऊ होना है, तो उसे न केवल यूरोप में, बल्कि एशिया में भी दुनिया के सबसे बड़े देश को एक समान सुरक्षा व्यवस्था में समायोजित करना होगा।

यूक्रेन युद्ध ने भारत के महाद्वीपीय और समुद्री किनारों पर बलों की पहले से ही जटिल बातचीत को जटिल बना दिया है, जिससे इसकी रणनीतिक चुनौतियां और अधिक कठिन हो गई हैं और इसके विकल्प अधिक जटिल हो गए हैं।

यूक्रेन संकट

संघर्ष के आर्थिक आयाम

और

भारत के लिए सबक

राजदूत डी बी वेंकटेश वर्मा

रूस और यूक्रेन के बीच लंबे समय से चल रहा युद्ध एक अभूतपूर्व संक्रमण बिंदु रहा है, जिसने वैश्विक स्तर पर अस्थिरता और अव्यवस्था उत्पन्न की है।

रूस और यूक्रेन के बीच लंबे समय से चल रहा युद्ध एक अभूतपूर्व संक्रमण बिंदु रहा है, जिसने वैश्विक स्तर पर अस्थिरता और अव्यवस्था उत्पन्न की है। हालाँकि, यह फरवरी 2022 में रूस और यूक्रेन के बीच एक सैन्य युद्ध के रूप में शुरू हुआ, पर अब यह रूस और पश्चिम के बीच एक व्यापक संघर्ष में बदल गया है। सैन्य आयाम के अलावा, आर्थिक, सूचनात्मक और साइबर आयामों के साथ संघर्ष किया जा रहा है। इसका प्रभाव अब दो युद्धरत देशों तक ही सीमित नहीं है। लाखों यूक्रेनी शरणार्थियों के आने के कारण यूरोप में इसका बड़ा मानवीय प्रभाव पड़ा है। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, विकासशील दुनिया के कई देशों के लिए ऊर्जा, भोजन, उर्वरक और वस्तुओं की आपूर्ति में व्यवधान के संदर्भ में इसके वैश्विक प्रभाव ने लाखों लोगों को प्रभावित किया है। कोविड महामारी से उत्पन्न अनिश्चित आर्थिक स्थिति को यूक्रेन संघर्ष की शुरुआत ने और भी बदतर बना दिया।

युद्ध की शुरुआत

फरवरी 2022 में रूसी सैन्य हस्तक्षेप, जिसे आधिकारिक तौर पर 'विशेष सैन्य अभियान' कहा जाता है, रूस और यूक्रेन के बीच 8 वर्ष से अधिक समय से संबंध तनावपूर्ण थे। फरवरी 2014 में मैदान की घटनाओं और राष्ट्रपति *यानुकोवीच* के हिंसक तख्तापलट के बाद, जो बाद में रूस भाग गए, ये संबंध और तेजी से बिगड़ गए। यूक्रेन में गहरे विभाजन पैदा हुए-लुगांस्क और डोनेट्स्क के रूसी भाषी बहुसंख्यक क्षेत्रों के साथ, डोनबास क्षेत्र के हिस्से को, खुद को अलग 'पीपुल्स रिपब्लिक' घोषित करना और रूस से समर्थन के साथ मिलिशिया बनाने के कारण गृह-युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो गई। एक जनमत संग्रह के बाद, क्रीमिया 2014 में, औपचारिक रूप से रूस में शामिल हो गया। 2015 के, द्वितीय मिन्स्क समझौते, जिसमें डोनबास के लिए संवैधानिक रूप से अनिवार्य स्वायत्तता प्रदान करते हुए यूक्रेन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को संरक्षित करने की परिकल्पना की गई थी, नॉरमैंडी प्रारूप के गारंटर फ़्रांस और जर्मनी दोनों ही-यूक्रेन और रूस के बीच आम जमीन खोजने में सक्षम नहीं थे। संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) और यूरोपीय संघ (ईयू) से बढ़ते समर्थन के साथ, यूक्रेनी स्थिति उत्तरोत्तर मिन्स्क समझौते के खिलाफ सख्त हो गई।

रूसी अल्पसंख्यकों के अधिकार प्रतिबंधित थे। यूक्रेन के सशस्त्र बलों और स्थानीय मिलिशिया के बीच डोनबास में संघर्ष के परिणामस्वरूप 14000 से अधिक नागरिक हताहत हुए। अमेरिका, ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों के साथ-साथ तुर्की से यूक्रेन को सैन्य सहायता में वृद्धि और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के मानकों के लिए 80,000 से अधिक यूक्रेनी सैनिकों के प्रशिक्षण को रूस में इसके सुरक्षा हितों के लिए एक प्रत्यक्ष खतरा माना गया था। 2014 के बाद रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए थे। रूस ने अमेरिका और फ्रांस और जर्मनी के साथ नॉरमैंडी प्रारूप वाले देशों के साथ राजनयिक जुड़ाव की दोहरी ट्रैक नीति अपनाई, लेकिन 2021 के दौरान बड़े पैमाने पर सैन्य अभ्यास भी किए। भविष्य में नाटो की सदस्यता से यूक्रेन को बाहर रखने की कोई गारंटी नहीं होने के कारण, रूस ने यूक्रेन के 'नाज़ीवाद से मुक्त' और 'विमुद्रीकरण' के दोहरे युद्ध के उद्देश्य से फरवरी 2022 में यूक्रेन में सैन्य रूप से हस्तक्षेप करने का फैसला किया। सैन्य हस्तक्षेप से पहले, अमेरिका और यूरोपीय संघ दोनों ने रूस को गंभीर आर्थिक प्रतिबंधों की चेतावनी दी थी।

युद्ध के चरण

अब तक रूस-यूक्रेन युद्ध चार चरणों से गुजरा है। पहला चरण जो लगभग 10 सप्ताह तक चला, एक गतिरोध के रूप में सामने आया-यूक्रेन ने दक्षिण और पूर्वी हिस्सों में अपने क्षेत्र खो दिये, लेकिन उत्तर में अपनी जमीन पर डटे रहने में सफल रहा, जिससे रूस को कीव, सुमी और खार्किव से पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। रूस पर अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा लगाए गए गंभीर आर्थिक प्रतिबंध रूस को सैन्य अभियान जारी रखने से रोकने में विफल रहे क्योंकि रूबल को मजबूत करने के उपायों सहित व्यापक आर्थिक स्थिरता को बहाल करने के लिए तत्काल उपाय किए गए थे। युद्ध के दूसरे चरण में रूस ने अगस्त 2022 तक मारियुपोल सहित लुगांस्क, आज़ोव सागर क्षेत्र में बढ़त बना ली। इसके बाद, तीसरे चरण में, यूक्रेनी जवाबी हमलों ने खार्किव के पूर्व और दक्षिण के क्षेत्रों को फिर से हासिल किया। रूस पर कड़े प्रतिबंधों के अलावा, यूक्रेनी सशस्त्र बलों के लिए तेजी से परिष्कृत हथियारों के रूप में बड़ी मात्रा में सैन्य सहायता ने एक सैन्य गतिरोध को सक्षम किया जिसमें रूस को जीतने के लिए बहुत कमजोर माना गया और यूक्रेन को हारने के लिए बहुत मजबूत माना गया। युद्ध का चौथा चरण सितंबर में शुरू हुआ जब रूस ने 300,000 सैनिकों की लामबंदी की घोषणा की और रूस के क्षेत्रों के रूप में रूसी बहुसंख्यक आबादी (लुगांस्क, डोनेट्स्क, खेरसॉन और ज़ापोरिज़्ज़िया) के साथ यूक्रेन के चार क्षेत्रों को शामिल किया। केर्च पुल पर यूक्रेनी हमले के बाद, रूस ने यूक्रेन में नागरिक बुनियादी ढांचे पर ड्रोन हमले बढ़ा दिए। पहले चरण में, तुर्की और संयुक्त राष्ट्र की सहायता से रूस और यूक्रेन के बीच शांति वार्ता के कुछ प्रयास थे, जब रूस एक एकजुट, तटस्थ और गैर-परमाणु यूक्रेन को स्वीकार करने के लिए तैयार था, अब ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों पक्षों के युद्ध के उद्देश्यों के टकराव ने बातचीत से समझौता करना पहले से अधिक कठिन बना दिया है। रूस के उद्देश्य विशिष्ट क्षेत्रीय हैं, जबकि यूक्रेन और पश्चिम में उसके समर्थक यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि युद्ध रूस के लिए एक 'रणनीतिक विफलता' बने। यूक्रेन को भारी मात्रा में हथियारों की आपूर्ति करने के अलावा, रूस पर अभूतपूर्व प्रतिबंध लगाए गए हैं, जो युद्ध के बढ़ने के साथ-साथ बढ़ते जा रहे हैं।

आर्थिक प्रतिबंध

संघर्ष के उभरने में, अमेरिका, यूरोपीय संघ और जापान एवं ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य अमेरिकी सहयोगियों ने अपनी स्थिति के समन्वय के लिए गहन परामर्श किया और वे युद्ध के प्रकोप पर गंभीर प्रतिबंध लगाने के लिए तैयार थे। रूस, या ईरान या वेनेजुएला के खिलाफ प्रतिबंधों के पिछले उदाहरणों के विपरीत, जब यूरोपीय संघ प्रतिबंध लगाने में अमेरिका से पीछे हो गया, तो अमेरिका ने यह सुनिश्चित किया कि यूरोप और एशिया में उसके सभी सहयोगी अमेरिका द्वारा प्रस्तावित प्रतिबंधों के बराबर प्रतिबंध लगाएं। अमेरिका और यूरोपीय संघ ने अलग-अलग प्रतिबंध लगाए थे, पर ये समन्वित और पारस्परिक रूप से मजबूत थे। अमेरिकी दबाव ने सुनिश्चित किया कि जो यूरोपीय राज्य ऐसा करने में अनिच्छुक थे, वे जल्दी से इस पर सहमत हो गए। अमेरिका ने नाटो से संबंधित मामलों में अपनी इच्छा थोपने के लिए यूरोप के सैन्य क्षेत्र में अपने प्रभुत्व का जिस तरह से इस्तेमाल किया, उसी तरह उसने रूस के खिलाफ गंभीर प्रतिबंध लगाने के लिए आर्थिक क्षेत्र में अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया।

पहले चरण में, तुर्की और संयुक्त राष्ट्र की सहायता से रूस और यूक्रेन के बीच शांति वार्ता के कुछ प्रयास थे, जब रूस एक एकजुट, तटस्थ और गैर-परमाणु यूक्रेन को स्वीकार करने के लिए तैयार था, अब ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों पक्षों के युद्ध के उद्देश्यों के टकराव ने बातचीत से समझौता करना पहले से अधिक कठिन

बना दिया है।

अंततः यूरोपीय संघ के देशों ने प्रतिबंधों को स्वीकार कर लिया, भले ही इससे उनके आर्थिक कल्याण को भारी कीमत चुकानी पड़ी।

अब रूस के खिलाफ 13000 से अधिक विभिन्न प्रतिबंध हैं, जो अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा लगाए गए हैं, उनमें से कुछ फरवरी 2022 के सैन्य हस्तक्षेप से पहले के हैं। इन प्रतिबंधों का सामान्य उद्देश्य रूस को आर्थिक नुकसान पहुँचाना, इसकी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय और व्यापारिक गतिविधियों को प्रतिबंधित करना और युद्ध को वित्तपोषित करने और रूस के राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक नेतृत्व का गठन करने वाले प्रमुख निर्णय निर्माताओं और व्यक्तियों को लक्षित करने की इसकी क्षमता को कमजोर करना है। जिन मुख्य क्षेत्रों को लक्षित किया गया उनमें वित्तीय, बैंकिंग और व्यापार क्षेत्र, रक्षा और ऊर्जा उद्योग के साथ-साथ हवाई परिवहन और शिपिंग लिंक पर प्रतिबंध और विख्यात रूसी सांस्कृतिक और खेल हस्तियों का सामाजिक अलगाव शामिल है। विदेशों में रूसी सेंट्रल बैंक की संपत्ति के साथ-साथ प्रमुख रूसी व्यक्तियों की व्यक्तिगत संपत्ति को भी जब्त कर लिया गया।

पश्चिम द्वारा वीजा प्रतिबंध भी लगाए गए हैं। तुर्की और संयुक्त राष्ट्र द्वारा मध्यस्थता किए गए एक समझौते के बाद गेहूं और उर्वरक निर्यात पर कुछ प्रतिबंधों को कम कर दिया गया। हालाँकि संयुक्त राष्ट्र में 140 से अधिक देशों ने रूस के खिलाफ मतदान किया, लेकिन 50 से अधिक देश रूस के खिलाफ कुछ प्रकार के प्रतिबंध लगाने में शामिल नहीं हुए, जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय के एक तिहाई से भी कम है।

प्रतिबंधों का प्रभाव

युद्ध के संचालन में क्रेमलिन में निर्णय लेने की गणना को बदलने के लिए रूस के खिलाफ गंभीर प्रतिबंधों का आरोपण अपने मुख्य उद्देश्य को प्राप्त करने में विफल रहा है। एक बहुत ही सक्षम केंद्रीय बैंक की मदद से, रूस रूबल को स्थिर करने, एक सकारात्मक चालू खाता शेष बनाए रखने, मुद्रास्फीति को उचित स्तर पर रखने, स्वस्थ विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखने और अमेरिका और यूरोपीय संघ के लिए निर्यात पर प्रतिबंध के बावजूद ऊर्जा निर्यात से मजबूत आय बनाए रखने में सक्षम रहा। यह ओपेक-प्लस के साथ तेल की कीमतों को ऊंचा रखने, भारत और चीन जैसे प्रमुख आयातकों को मूल्य छूट की पेशकश, निर्यात मार्गों के विविधीकरण और यूरोप में ग्राहकों पर एक अंशांकित निचोड़ के माध्यम से एक सामान्य यूरोपीय संघ की स्थिति को विभाजित करने के माध्यम से हासिल किया गया था। 2022 की सर्दियों में, यूरोपीय संघ में सामाजिक असंतोष, आर्थिक मंदी और राजनीतिक अस्थिरता में चरम वृद्धि होने की आशा है, रूस को आशा है कि यह यूरोपीय संघ के संकल्प और एकता को कमजोर करेगा। अमेरिका ने यूरोपीय संघ के लिए कुछ विकल्पों की पेशकश की है लेकिन यह रूसी आपूर्ति की लागत से चार गुना अधिक पर है। यूरोपीय ऊर्जा सुरक्षा के लिए व्यवहार्य विकल्पों की कमी से आने वाले वर्षों में इसे विऔद्योगीकरण की ओर ले जाने की आशा है। लंबे समय में यूरोप की राजनीतिक अर्थव्यवस्था नाटकीय रूप से बदल जाएगी।

युद्ध के संचालन में क्रेमलिन में निर्णय लेने की गणना को बदलने के लिए रूस के खिलाफ गंभीर प्रतिबंधों का आरोपण अपने मुख्य उद्देश्य को प्राप्त करने में विफल रहा है।

अल्पावधि में रूस प्रतिबंधों के तूफान का सामना करने में सफल रहा है, जबकि उनके मध्यम और दीर्घकालिक प्रभाव अनिवार्य रूप से रूसी अर्थव्यवस्था को कमजोर करेंगे।

अल्पावधि में रूस प्रतिबंधों के तूफान का सामना करने में सफल रहा है, जबकि उनके मध्यम और दीर्घकालिक प्रभाव अनिवार्य रूप से रूसी अर्थव्यवस्था को कमजोर करेंगे। आईएमएफ और ओईसीडी के अनुमानों के मुताबिक इस वर्ष इसकी जीडीपी में लगभग 5.5 से 6% की गिरावट आने की आशा है, हालाँकि रूसी व्यापार मंत्रालय को केवल 2.9% की गिरावट की आशा है। रूसी सरकार का अनुमान है कि रूस 2024 और 2025 में 2.6% की वृद्धि पर वापस आ जाएगा। रूस को 2021 की तुलना में 2022 में, निर्यात में लगभग 17.2% और आयात में लगभग 25% की भारी गिरावट का सामना करना पड़ा है। अर्थव्यवस्था में मंदी की भी आशा है, 2023 में लगभग 14% की उच्च मुद्रास्फीति की वापसी से प्रभावित होने की आशंका है।

रूस से एक हजार से अधिक अमेरिकी और यूरोपीय कंपनियों की वापसी और विशेष रूप से एयरलाइंस, ऑटोमोबाइल, सटीक मशीनरी, स्वचालन, फार्मा, कंप्यूटर, दूरसंचार उपकरण और सेमीकंडक्टर उपकरणों में प्रौद्योगिकी साझेदारी में कटौती से इसके भविष्य के आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की आशा है। युद्ध की लामबंदी के कारण बड़ी संख्या में युवा पुरुषों को कार्यबल से वापस लेने और अन्य देशों में प्रवास करने वाले युवा पेशेवरों की एक बड़ी संख्या को देखते हुए मौजूदा जनसांख्यिकीय कठिनाइयों में वृद्धि होने की आशा है।

प्रत्युत्तर के उपाय

पश्चिम से पूर्व की ओर अपने मुख्य व्यापारिक भागीदारों का विविधीकरण अब रूसी विदेश नीति की प्राथमिकता है। इन देशों में चीन, भारत, ईरान, दक्षिण अफ्रीका, आसियान, ब्राजील और खाड़ी देश शामिल हैं।

रूस ने आयात प्रतिस्थापन और स्वदेशीकरण के लिए प्रमुख कार्यक्रम शुरू करके आर्थिक प्रतिबंधों का जवाब दिया है, जो निश्चित रूप से फल देने में कुछ समय ले सकता है। पश्चिम से पूर्व तक अपने मुख्य व्यापारिक भागीदारों का विविधीकरण अब रूसी विदेश नीति की प्राथमिकता है। इन देशों में चीन, भारत, ईरान, दक्षिण अफ्रीका, आसियान, ब्राजील और खाड़ी देश शामिल हैं। 2022 के दौरान, तुर्की के साथ रूस के व्यापारिक संबंध 100% से अधिक बढ़ गए हैं। तुर्की पश्चिमी प्रतिबंधों को दूर करने में रूस के लिए एक महत्वपूर्ण भागीदार बनकर उभरा है। रूस को चीन के निर्यात में लगभग 40% की वृद्धि हुई जबकि रूस से आयात में 6.2% की गिरावट आई। रूस ने ईएईयू में साझा बाजार बनाने के अपने प्रयास तेज कर दिए हैं। इसने स्विफ्ट की जगह एसपीएफएस (सिस्तेमे पेरेदाची फिननासोविख सोबशेनी) नामक एक वैकल्पिक वित्तीय संदेश प्रणाली को अधिक सशक्त रूप से बढ़ावा दिया है। वीज़ा और मास्टरकार्ड के विकल्प के रूप में एक एमआईआर कार्ड लाया गया है। रूस ब्रिक्स और एससीओ के संदर्भ में विदेशी मुद्रा होल्डिंग्स को डॉलर से मुक्त करने और द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार के लिए राष्ट्रीय मुद्राओं के उपयोग का सक्रिय समर्थक रहा है। रूस के साझेदार, विशेष रूप से वे जो पश्चिमी प्रतिबंधों में शामिल नहीं हुए हैं, विकल्प तलाशने के इच्छुक हैं, जबकि विश्वसनीयता और लेनदेन की लागत जैसे मुद्दे चिंता का विषय बने हुए हैं, इसके अलावा वे अमेरिका के साथ अनावश्यक रूप से विरोध नहीं करना चाहते हैं, जिनके साथ उनके पर्याप्त

व्यापारिक संबंध हैं।

ऊर्जा

रूसी निर्यात का ऊर्जा, वस्तुओं, खाद्य और रक्षा क्षेत्रों में तीव्र पश्चिमी प्रतिबंधों का सामना करना जारी रहेगा। यूरोप में कोयले और गैस के निर्यात पर गंभीर रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया है, जिसमें महत्वपूर्ण पाइपलाइनों को बंद करना या क्षति पहुंचाना भी शामिल है, दिसंबर 2022 की शुरुआत से अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा रूसी तेल निर्यात पर मूल्य सीमा लागू करने का उद्देश्य रूसी तेल निर्यात आय के दायरे को और सीमित करना है। इसका कारण यह तथ्य है कि अधिकांश तेल टैंकर बेड़े उन देशों के हैं जो रूस के खिलाफ अमेरिका प्रायोजित प्रतिबंधों में भाग ले रहे हैं। मूल्य सीमा का उद्देश्य रूसी तेल को वैश्विक बाजार से बाहर करना नहीं है, जिसका प्रभाव कीमतों के बढ़ने पर पड़ेगा बल्कि रूस के तेल निर्यात राजस्व को प्रतिबंधित करना है। अपनी ओर से, रूस ने यह कहा है कि वह उन देशों को तेल बेचने से इंकार कर देगा जो मूल्य सीमा से सहमत हैं।

सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के सहयोग से ओपेक प्लस के संदर्भ में, रूस ने उच्च मूल्य स्तर बनाए रखने में काफी सफलता हासिल की है। इसने यह भी कहा है कि यह उन देशों को निर्यात नहीं करेगा जो अमेरिका द्वारा लगाई गई मूल्य सीमा को स्वीकार करते हैं, जो अप्रत्यक्ष रूप से तेल के वैश्विक मूल्य निर्धारण में ओपेक की भूमिका को कमजोर करता है।रूसी निर्यात के लिए पश्चिम में ऊर्जा बाजारों के अपेक्षित दीर्घकाल तक बंद रहने से रूस को इन निर्यातों को पूर्व की ओर मोड़ने पर बाध्य होना पड़ेगा, भले ही इसमें समय लगेगा क्योंकि इसकी पाइपलाइन का एक बड़ा हिस्सा ऐतिहासिक रूप से पश्चिम-की ओर रहा है। पिछले एक दशक में, रूस से दो प्रमुख गैस और तेल पाइपलाइनों के संचालन से चीन को लाभ हुआ है। दक्षिण की ओर पाइपलाइन का बुनियादी ढांचा-भारत की ओर अभी भी कमजोर है, हालाँकि भारत में रूसी गैस/एलएनजी/तेल लाने के लिए ईरान, खाड़ी या तुर्की में ऊर्जा केंद्रों का उपयोग करने की संभावनाएं मौजूद हैं। पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण, रूस के पास नए सहयोगियों के साथ अपने ऊर्जा सहयोग को गहरा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा, जिससे भारत के लिए आकर्षक रास्ते खुलेंगे।

भारत का दृष्टिकोण

फरवरी 2022 में युद्ध छिड़ने के बाद से, भारत ने राष्ट्रीय और संयुक्त राष्ट्र दोनों में एक सैद्धांतिक और सुसंगत स्थिति बना ली है। भारत ने रूस के खिलाफ एक निंदनीय प्रकृति के संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों का समर्थन नहीं किया है, जबकि इसने शत्रुता को समाप्त करने, नागरिक हताहतों की संख्या से बचने और नागरिक बुनियादी ढांचे को नष्ट करने और बातचीत और कूटनीति के लिए रास्ते खुले रखने का आह्वान किया है, और इस बात पर बल दिया है कि युद्ध समाधान नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की दोनों से बात कर इस बात पर ज़ोर दिया है कि 'यह युद्ध का युग नहीं है'।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की दोनों से बात कर इस बात पर ज़ोर दिया है कि 'यह युद्ध का युग नहीं है'। भारत ने युद्ध को समाप्त करने के लिए शांति प्रयासों का समर्थन करने का भी प्रस्ताव

दिया है।

भारत ने युद्ध को समाप्त करने के लिए शांति प्रयासों का समर्थन करने का भी प्रस्ताव दिया है। भारत ने लगातार इस बात को रेखांकित किया है कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर में वर्णित राज्यों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सिद्धांतों का सम्मान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के आवश्यक स्तंभ हैं। भारत ने यूक्रेन को मानवीय सहायता भी दी है।

प्रतिबंधः भारत की प्रतिक्रिया

रूस पर पश्चिमी प्रतिबंध लगाने से भारत की सुरक्षा और आर्थिक हितों को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। जबकि इन प्रतिबंधों को यूएनएससी द्वारा नहीं अपनाया गया है और इसलिए अंतरराष्ट्रीय वैधता नहीं है, भारत को अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ अपने संबंधों को नुकसान सीमित करते हुए भी रूस के संबंध में अपने हितों को संतुलित करना पड़ा है। इस संबंध में राष्ट्रीय हितों की रक्षा और अपने लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना ही भारत का मार्गदर्शक सिद्धांत रहा है। इस संबंध में भारत ने रियायती दरों पर उपलब्ध रूस के कच्चे तेल के आयात में काफी वृद्धि की, 2021 में कुल आयात लगभग 1% से बढ़कर इस वर्ष के हमारे आयात का लगभग 18-20% हो गया। साथ ही, भारत ने खाड़ी, अमेरिका और कनाडा सहित अन्य प्रमुख ऊर्जा आपूर्तिकर्ताओं के साथ बातचीत को खुला रखा है। अमेरिका द्वारा प्रस्तावित मूल्य सीमा के संबंध में, भारत ने बातचीत के लिए दरवाजा खुला रखा है, यह दर्शाता है कि वह ऐसे किसी भी आपूर्तिकर्ता से खरीदारी करेगा जो सबसे अच्छा वाणिज्यिक प्रस्ताव देगा। एक्सॉन मोबाइल के परियोजना से बाहर निकलने के बाद भारत ने सखालिन-I में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने में रुचि दर्शाई है। भारतीय कंपनियों ने भी पश्चिमी कंपनियों द्वारा खाली किए गए स्थान का लाभ उठाते हुए रूसी बाजार में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने में रुचि दिखाई है। भारत ने अपने इस्पात उद्योग के लिए उर्वरकों और कोकिंग कोयले की दीर्घकालिक आपूर्ति के लिए समझौते किए हैं। कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना में रूस की भागीदारी निर्धारित समय पर आगे बढ़ी है।

रूस पर पश्चिमी प्रतिबंध लगाने से भारत की सुरक्षा और आर्थिक हितों को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

रूस भारत के सशस्त्र बलों के लिए दीर्घकाल से एक रक्षा भागीदार रहा है। जबकि भारत अपने पारंपरिक रक्षा संबंधों को जारी रखता है, और यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न कठिनाइयों के बावजूद, पुर्जों और सेवाओं की समय पर उपलब्धता के संदर्भ में, अब मेक-इन-इंडिया रक्षा उपकरणों के निर्माण पर अधिक जोर दिया जा रहा है। भारत और रूस ने भारत में S-400 मिसाइलों की आपूर्ति और एके-203 असॉल्ट राइफलों के निर्माण सहित रक्षा क्षेत्र में सहमत परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के अपने दृढ़ संकल्प की फिर से पुष्टि की है। हमारी रक्षा आवश्यकताओं पर अमेरिका के साथ निरंतर जुड़ाव के माध्यम से, भारत अमेरिका को यह समझाने में भी सक्षम रहा है कि अमेरिका विरोधियों पर प्रतिबंध अधिनियम (सीएएटीएसए) के माध्यम से हमारे द्विपक्षीय रक्षा संबंधों में एक नई बाधा न बनाए।

रूस पर जारी पश्चिमी प्रतिबंध चीन को एक भू-राजनीतिक लाभ दे सकते हैं, विशेष रूप से एक निर्भरता संबंध को लागू करने और चीन को विकासशील देशों के बीच हथियारों के बाजार पर रूस के साथ पहले

कब्जा करने में सक्षम कर सकते हैं।
सामान्य बैंकिंग और परिवहन चैनलों का व्यवधान द्विपक्षीय व्यापार संबंधों के लिए एक चुनौती रहा है। जबकि द्विपक्षीय बैंकिंग संबंध मजबूत हुए हैं, राष्ट्रीय मुद्राओं और प्रत्यक्ष बैंकिंग संदेश प्रणाली के बढ़ते उपयोग पर चर्चा आगे बढ़ रही है।

डॉलर के बदले अन्य मुद्राओं के माध्यम से भुगतान पर भी विचार किया जा रहा है। रूस के खिलाफ पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण उत्पन्न परिवहन बाधाओं को कम करने के लिए ईरान और चेन्नई-व्लादिवोस्तोक पूर्वी समुद्र तट के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर (आईएनएसटीसी) के संचालन में रुचि बढ़ रही है। यूक्रेन संघर्ष से उत्पन्न सभी कठिनाइयों के बावजूद, 2022 में द्विपक्षीय व्यापार 2021 की तुलना में लगभग 120% बढ़ कर, 18 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया है।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर, भारत ने यूक्रेन संघर्ष के नकारात्मक परिणामों और विकासशील देशों पर प्रतिबंधों के प्रभाव- ऊर्जा और वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि, लेन-देन की लागत में वृद्धि, व्यापार में कमी और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान के परिणामस्वरूप उच्च मुद्रास्फीति और ब्याज दरों, बढ़ा हुआ कर्ज और वैश्विक मंदी के बढ़ते जोखिम को उजागर किया है-ये सभी वैश्विक दक्षिण में लाखों लोगों की भलाई को प्रभावित कर रहे हैं। 2023 में एससीओ और जी20 के अध्यक्ष के रूप में, वैश्विक दक्षिण खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, ऋण स्थिरता और जलवायु परिवर्तन-वैश्विक परस्पर निर्भरता के अनियंत्रित शस्त्रीकरण के परिणामों के महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने के भारत के नेतृत्व की ओर देखेगा।

निष्कर्ष

यूक्रेन संघर्ष ने पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण आयामों के साथ वैश्विक विभाजन को और गहरा कर दिया है, बड़ी शक्तियों के बीच आपसी सामंजस्य की नैतिकता को नष्ट कर रहा है, वैश्विक व्यापार और विकास के आधार को कम कर रहा है, क्षेत्रीय संघर्षों को बढ़ा रहा है, संयुक्त राष्ट्र और विशेष रूप से यूएनएससी की वैधता को कमजोर कर रहा है, और भू-राजनीतिक अस्थिरता को भविष्य के लिए आदर्श बना रहा है।

यूक्रेन संघर्ष में आर्थिक युद्ध के साधन के रूप में रूस पर प्रतिबंध लगाने के अनपेक्षित और अभूतपूर्व परिणाम सामने आए हैं। ये प्रतिबंध स्वयं रूस को अपने युद्ध के लक्ष्यों को बदलने और अपने सैन्य अभियानों को वापस लेने के लिए मजबूर करने के अपने प्राथमिक उद्देश्य में अब तक विफल रहे हैं, रूस जैसी एक बड़ी अर्थव्यवस्था पर प्रतिबंध लगाने के प्रभावों का, जो दुनिया की अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से ऊर्जा, वस्तुओं, रक्षा और कृषि के क्षेत्र में गहराई से एकीकृत था, वैश्विक अर्थव्यवस्था पर अनुपातहीन रूप से बड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यूक्रेन संघर्ष ने पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण आयामों के साथ वैश्विक विभाजन को और गहरा कर दिया है, बड़ी शक्तियों के बीच आपसी सामंजस्य की नैतिकता को नष्ट कर रहा है, वैश्विक व्यापार और विकास के आधार को कम कर रहा है, क्षेत्रीय संघर्षों को बढ़ा रहा है, संयुक्त राष्ट्र, विशेष रूप से यूएनएससी की वैधता को कमजोर कर रहा है और भू-राजनीतिक अस्थिरता को भविष्य के लिए आदर्श बना रहा है।

वैश्विक अन्योन्याश्रितता के शस्त्रीकरण ने वैश्वीकरण के प्रमुख स्तंभों में से एक - इस सिद्धांत को उलट दिया है कि राज्यों के बीच परस्पर निर्भरता जितनी अधिक होगी, राज्यों के एक-दूसरे के खिलाफ कठोर उपायों का उपयोग करने की संभावना उतनी ही कम होगी। वास्तव में, पश्चिमी प्रतिबंधों के लागू होने से पता चला है कि वैश्वीकरण अन्य राज्यों की तुलना में कुछ राज्यों में जबरदस्ती की शक्ति की एकाग्रता के साथ असममित विकास के लिए एक आवरण है। यह वित्तीय, सूचनात्मक और ऊर्जा बाजारों में विशेष रूप से स्पष्ट है। वैश्विक वित्तीय और सूचनात्मक नेटवर्क में प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अमेरिका ने भू-रणनीतिक परिणामों को आकार देने के लिए यूक्रेन संघर्ष में अपने प्रभुत्व का उपयोग किया है। रूस मुख्य लक्ष्य था, पर यह कई अन्य देशों के लिए, कुछ देशों द्वारा अपने लाभ के लिए वैश्विक परस्पर निर्भरता को हथियार बनाने से उत्पन्न होने वाले जोखिमों के संबंध में एक आंख खोलने वाली घटना थी। यह निश्चित रूप से देशों को पसंदीदा अंतरराष्ट्रीय आरक्षित मुद्रा, पेट्रोडॉलर की पवित्रता के रूप में डॉलर की विश्वसनीयता पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करेगा और विविध आरक्षित मुद्राओं और वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों की खोज को गति देगा। इस प्रक्रिया में समय लगेगा क्योंकि विचाराधीन विकल्पों में से कोई भी तत्काल भविष्य में अमेरिकी डॉलर के वर्चस्व वाली प्रणाली को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है। इस तरह, भारत जैसे देशों को विकल्पों को देखने में दिलचस्पी होगी, लेकिन अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ अपने पर्याप्त व्यापारिक संबंधों को जोखिम में डालने की कीमत पर नहीं। इसलिए, यह भारत के हित में है कि यूक्रेन विवाद को युद्ध के माध्यम से नहीं बल्कि बातचीत और कूटनीति के माध्यम से सुलझाया जाए ताकि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को कम से कम समय में उलटा किया जा सके।

यह चुनौतीपूर्ण समय रहा है लेकिन भारत हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रमुख सिद्धांत के रूप में रणनीतिक स्वायत्तता के महत्व की पुष्टि करते हुए काफी सफलता के साथ इस तनाव परीक्षण में उत्तीर्ण हुआ है।

यूक्रेन संघर्ष छिड़ने के बाद से भारतीय विदेश नीति ने अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप एक स्वतंत्र स्थिति लेने और शांति के पक्ष में मजबूती से खड़े होने और बातचीत और कूटनीति के माध्यम से संघर्ष के समाधान में परिपक्वता का परिचय दिया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिबंधों का आर्थिक प्रभाव काफी कम हो गया है जिससे भारत आने वाले वर्षों में प्रमुख देशों के बीच उच्चतम विकास दर दर्ज करने में सक्षम हुआ है। यह समय चुनौतीपूर्ण रहा है लेकिन भारत हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रमुख सिद्धांत के रूप में रणनीतिक स्वायत्तता के महत्व की पुष्टि करते हुए काफी सफलता के साथ इस तनाव परीक्षण में उत्तीर्ण रहा है। भारत की सफलता एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उद्भव के लिए एक आवश्यक स्तंभ है, जो केवल बल के उपयोग के माध्यम से नहीं बल्कि इसके कई ध्रुवों का निर्माण करने वाले देशों के बीच आपसी सामंजस्य के माध्यम से आ सकती है।

यूक्रेन संकट
और
अमेरिकी हिंद-प्रशांत रणनीति

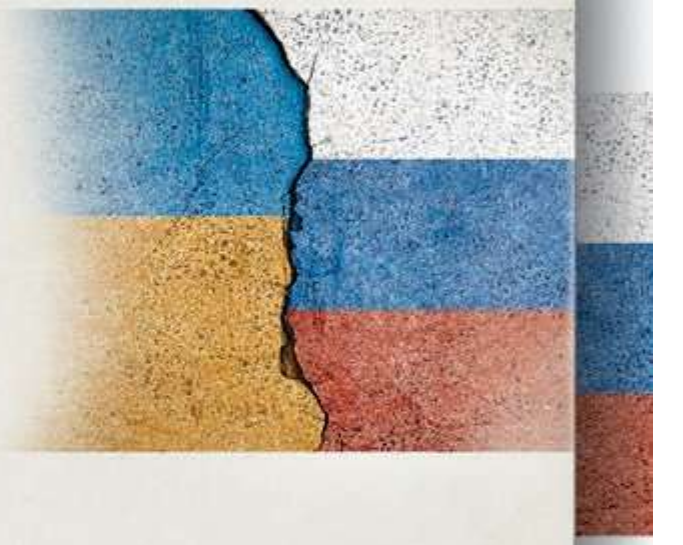

प्रो. स्वर्ण सिंह

यह आम बात है कि वर्ष 2022 का यूक्रेन संकट द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से यूरोपीय इतिहास में सबसे बड़ी उथल-पुथल का मामला प्रस्तुत करता है।

यह सामान्य बात है कि वर्ष 2022 का यूक्रेन संकट द्वितीय विश्व युद्ध[1] के बाद से यूरोपीय इतिहास में सबसे बड़ी उथल-पुथल का मामला प्रस्तुत करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) की हिंद-प्रशांत रणनीति के लिए यूक्रेन संकट का सबसे स्पष्ट परिणाम मास्को और बीजिंग की बढ़ती निकटता रहा है, जबकि यूरोपीय संघ (ईयू), उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो), ग्रुप ऑफ सेवन (जी 7) के अमेरिकी साझेदारों को अपनी असमानता और अलग-अलग दृष्टिकोणों के कारण धोखा देते देखा गया। इतना अधिक कि ऐसे सवाल पूछे जा रहे हैं कि क्या इसने रूस की केंद्रीयता और 20वीं सदी के उत्तरी अटलांटिक थिएटर को फिर से बाइडेन प्रशासन के लिए सबसे विकट चुनौती बना दिया है?

यूक्रेन संकट पर अमेरिका की प्रतिक्रिया के पहले दो महीनों के भीतर, बाइडेन प्रशासन ने सुरक्षा सहायता में 4.5 बिलियन डॉलर का वादा किया, जिसमें हजारों सैन्य हार्डवेयर और 50 मिलियन से अधिक गोला-बारूद[2] शामिल थे। क्या इसका अर्थ हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साथ अमेरिकी जुड़ाव का कम होना और चीन-रूस का बढ़ता गठजोड़ इस क्षेत्र के भविष्य का और भी मजबूत निर्धारक बनना है?

मोल्दोवा में ट्रांसनिस्ट्रिया (1992), जॉर्जिया में अबकाज़िया और दक्षिण ओसेशिया (2008), और यूक्रेन में क्रीमिया और डोनबास (2014) में रूस के पहले के सैन्य अभियानों की पृष्ठभूमि में 2022 के यूक्रेन संकट का विश्लेशण करने पर और सामूहिक सुरक्षा संधि संगठन (सीएसटीओ) के तत्वावधान में रूस के शांति अभियान और विशेष रूप से राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के व्यक्तित्व को देखते हुए इस तरह का संदेह निश्चित लगने लगता है, जो मई 2000 से सत्ता में हैं।[3] दूसरी ओर, बाइडेन प्रशासन को तेजी से अपनी महामारी से प्रेरित घरेलू कठिनाइयों और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की अन्य जटिल विरासतों का बंधक बनते देखा जा रहा है।[4] यदि कुछ हुआ है तो यह कि यूक्रेन संकट ने बाइडेन प्रशासन को अपनी कथित हिंद-प्रशांत रणनीति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को स्पष्ट करने के लिए रक्षात्मक बना दिया है और क्या चीन अभी भी इसकी सबसे विकट चुनौती बना हुआ है और यह इसके नकारात्मक प्रभावों का निवारण करने की क्या योजना बना रहा है।

चरमराती इमारत

अमेरिकी वैश्विक नेतृत्व की सापेक्ष गिरावट के बारे में चल रही बहस के संदर्भ में, महामारी की तत्काल पृष्ठभूमि और ट्रम्प के विघटनकारी चार वर्ष के वैश्विक विघटन और सहयोगियों के साथ मोहभंग के अलावा, अमेरिकी हिंद-प्रशांत रणनीति पर यूक्रेन संकट के प्रभाव की भी जांच की गई है।[5] इसने प्रलय के दिन की भविष्यवाणियों को स्पष्ट रूप से कई गुना बढ़ा दिया है, जो यूक्रेन संकट पर वर्तमान दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी नेतृत्व के लिए बहुमुखी चुनौतियों की एक पूरी श्रृंखला को सामने लाती हैं। सवाल उठाए जाते हैं कि क्या द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के, वैश्विक उदारवादी व्यवस्था का गठन करने के मानदंड, परंपराएं और संस्थाएं पुरानी नहीं हो गई हैं, जिनमें आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक है? आरंभ करने के लिए, यूरोपीय सुरक्षा संरचना इसके सदस्यों और हितधारकों के बीच समान रूप से सवालों के घेरे में आ गई है।[6]

यूक्रेन संकट ने विस्तारित यूरोपीय संघ की आंतरिक एकता की कमजोरियों के साथ-साथ

यूक्रेन संकट ने विस्तारित यूरोपीय संघ की आंतरिक एकता की कमजोरियों के साथ-साथ विस्तारित नाटो के आंतरिक विघटन को भी धोखा दिया है। विशेषज्ञ यूक्रेन संकट[7] के लिए इन दो संगठनों के पूर्व की ओर विस्तार को जिम्मेदार मानते हैं। ये दो यूरोपीय मंच हैं जो अभी भी अमेरिकी वैश्विक नेतृत्व का समर्थन करते हैं। अमेरिका के नेतृत्व वाली उदार विश्व व्यवस्था के भविष्य के बारे में, नाटो के पूर्व की ओर विस्तार की प्रभावकारिता के बारे में और इसके 'क्षेत्र के बाहर' संचालन के तर्क पर सवाल उठाए गए हैं। यहां तक कि जी7 से जी20 तक के विस्तार में भी इसी तरह की दरारें देखी गई हैं। उदाहरण के लिए, अप्रैल 2022 के जी7 शिखर सम्मेलन में भारत की भागीदारी ने पश्चिम के लिए मुश्किलें पैदा कीं, क्योंकि भारत ने रूस की निंदा करने से इनकार कर दिया।[8] जैसे-जैसे वैश्विक राजनीति का केंद्र उत्तरी अटलांटिक से एशिया-प्रशांत- या हिंद-प्रशांत में स्थानांतरित होता है, अमेरिका के नेतृत्व वाला नाटो अपने एशियाई दोस्तों के साथ अपनी साझेदारी को मजबूत करने की कोशिश कर रहा है।[9] जून 2022 के मैड्रिड शिखर सम्मेलन में, नाटो को अपने एशियाई सहयोगियों को आश्वस्त करते देखा गया था कि यूक्रेन संकट ने उनकी आंतरिक एकता और हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर उनके ध्यान को प्रभावित नहीं किया है।[10] हालाँकि, यूक्रेन संकट ने न केवल यूरोपीय सुरक्षा संरचना पर उनके दृष्टिकोण को प्रभावित किया है, बल्कि अपने यूरोपीय सहयोगियों के साथ अमेरिका के समीकरणों को भी प्रभावित किया है, जिनमें से कई ने इस क्षेत्र के साथ अमेरिकी जुड़ाव से अपनी विविधताओं को रेखांकित करते हुए अपनी खुद की हिंद-प्रशांत रणनीतियां जारी करना आरंभ कर दिया है।

इस बदलाव का सबसे स्पष्ट उदाहरण यूरोप में अपनी स्वायत्तता के बढ़ते दावे और अमेरिकी नेतृत्व से अलगाव में देखा जा सकता है। अमेरिका के नेतृत्व वाली हिंद-प्रशांत रणनीति का समर्थन करने, तोते की तरह दोहराने या खींचने के बजाय, यूरोपीय संघ या यूरोप के अलग-अलग देशों के हिंद-प्रशांत पर उभरते आख्यानों ने पहले ही अमेरिका के साथ उनके अलगाव को रेखांकित करना शुरू कर दिया है। दूसरा, अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति ने अपने एशियाई सहयोगियों पर विशेष रूप से भरोसा करने की मांग की है, जिससे उनकी हिंद-प्रशांत पहलों में यूरोपीय भागीदारों को बाहर रखा गया है। राष्ट्रपति बाइडेन का हिंद-प्रशांत इकोनॉमिक फोरम (आईपीईएफ) इस प्रवाह का सबसे हालिया और सबसे उपयुक्त उदाहरण प्रदान करता है।[11]

तीसरा, यूक्रेन संकट ने रूस और चीन को एक साथ धकेल दिया है, जिससे आंतरिक-यूरोपीय संघ और अमेरिका-यूरोपीय संघ दोनों ही अपने हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण पर विभाजित हो गए हैं।[12] आज यह जांचने के लिए यूक्रेन और ताइवान के बीच तुलना की जा रही है कि बीजिंग ने, यूक्रेन संकट में रूस के भाग्य से क्या सबक लिया है? क्या यह अमेरिका-चीन की अस्थिरता को और आगे बढ़ाने वाला है जो अमेरिकी हिंद-प्रशांत रणनीति का चालक बना हुआ है? 2-3 अगस्त की अपनी ताइवान यात्रा के बाद वाशिंगटन डीसी में अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में नैन्सी पेलोसी के बगल में खड़े डेमोक्रेटिक कांग्रेसी राजा कृष्णमूर्ति की एक टिप्पणी इस सोच को प्रकट करती है, उन्होंने कहा: "हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि यूक्रेन में जो हुआ वह दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र और विशेष रूप से ताइवान में न हो"।[13] कम से कम यूक्रेन संकट ने बाइडेन प्रशासन को हिंद-प्रशांत पर अपना ध्यान केंद्रित करने से दूर कर दिया है, लेकिन इसे रक्षात्मक बनाकर अपने एशियाई सहयोगियों और विशेष रूप से बीजिंग के बारे में उनकी साझा चिंताओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है।

फरवरी 2022 में, पदभार ग्रहण करने के एक वर्ष के भीतर-बाइडेन प्रशासन की हिंद-प्रशांत रणनीति का विमोचन और राष्ट्रपति बाइडेन और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच कार्यालय में पहले 18 महीनों के भीतर इसकी पांच ऑनलाइन बातचीत और उनकी बहुप्रतीक्षित पहली आमने-सामने की शिखर बैठक नवंबर 2022 विश्वसनीयता की अमेरिकी मजबूरियों को दर्शाता है। स्मर्ण रहे कि, जब जो बाइडेन उपराष्ट्रपति थे तब राष्ट्रपति ओबामा ने एशिया-प्रशांत के लिए यूएस 'धुरी' के एक नए चरण की शुरुआत की थी। जो उस समय उन "सहयोगियों को आश्वस्त करने" के लिए था, जो संदेह कर रहे थे कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र के लिए "अमेरिका का मन पुनर्संतुलन में नहीं है"।[14]

आज भी विशेषज्ञ इस बात पर प्रकाश डालना जारी रखते हैं कि हिंद-प्रशांत के लिए बाइडेन प्रशासन के दृष्टिकोण में "अब तक विशेष ध्यान और तात्कालिकता की कमी है," और इस क्षेत्र की "एक अपरिहार्य निवासी आर्थिक शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत करने" के लिए एक पूर्वापेक्षा के रूप में सुधार की तत्काल आवश्यकता का सुझाव देते हैं।[15] इसके लिए अमेरिकी रणनीतिक सोच के डीएनए पर एक संक्षिप्त नज़र डालना ज़रूरी है ताकि इसकी अतीत की प्रशांत रणनीति की उत्पत्ति और विकास के बारे में इसके विचारों का आकलन किया जा सके।

प्रशांत रणनीति की विरासत

संक्षेप में, प्रशांत पर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के अमेरिकी आख्यान बड़े पैमाने पर 'अमेरिकन लेक' होने की उनकी कल्पनाओं के इर्द-गिर्द बुने गए थे, जहाँ वे पूरे एशिया में नाटो जैसे गठजोड़ की नकल करके सुरक्षा का निर्माण करना चाहते थे। इसने अमेरिका को दक्षिण पूर्व संधि संगठन (एसईएटीओ), बगदाद संधि या केंद्रीय संधि संगठन (सीईएनटीओ) और ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका (एएनजेडयूएस) समझौते को अमेरिका के नेतृत्व वाले सैन्य गठबंधन के रूप में स्थापित करते देखा। लेकिन उत्तरी अटलांटिक और दक्षिण प्रशांत के विपरीत, एशियाई भूभाग की अत्यधिक विविधता जल्द ही एसईएटीओ और सीईएनटीओ को निष्क्रिय बना देने वाली थी, जिससे अमेरिका को जापान, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस, सिंगापुर आदि के साथ द्विपक्षीय सैन्य गठजोड़ के आसपास अपनी 'हब-एंड-स्पोक' रणनीति के रूप में इसे फिर से बनाने के लिए मजबूर होना पड़ता। 1960 के दशक से, अमेरिका ने आसियान को बढ़ावा देकर इस क्षेत्र में सोवियत और चीनी शैली के साम्यवाद के नरम-संतुलन प्रसार की नई रणनीतियों का भी आविष्कार किया और वर्षों से इसे सभी क्षेत्रीय पहलों की चालक सीट पर रखा। इस प्रकार एशिया में नाटो जैसे सैन्य गठजोड़ के बिना, अमेरिका "प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी रक्षा नीति के स्तंभ के रूप में आसियान की पहचान करता है।[16] 1980 के दशक की शुरुआत से, जापान के तेजी से आर्थिक विकास के बाद, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, सिंगापुर और ताइवान की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के उदय के बाद, अमेरिका 'एशिया-प्रशांत' या प्रशांत एशिया क्षेत्र शब्द के प्रति जागरूक हो गया। इसने पहले क्षेत्रीय मंच के रूप में एशिया पैसिफिक इकोनॉमिक कोऑपरेशन (एपीईसी) को बनाया, जिसमें अमेरिका प्रमुख खिलाड़ी था।[17]

शीत युद्ध के बाद पुनर्गठन की प्रक्रिया में और सोवियत संघ और उसके पूर्वी ब्लॉक के पतन के बाद, विशेष रूप से चीन और अमेरिका के अभूतपूर्व आर्थिक उदय के कारण, नए क्षेत्रीय सहयोगियों की खोज के बाद 2005 के बाद भारत-अमेरिका निकटता के आख्यानों ने 'हिंद-प्रशांत' भू-राजनीति के इस नए ढाँचे को विकसित किया, जिसका जापान के शिंजो आबे जैसे नेताओं द्वारा पहले से ही प्रचार किया जा रहा था।[18] वर्ष 2017 में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में इस सिक्के को औपचारिक रूप से प्रतिपादित किया गया था।[19] हिंद-प्रशांत के साथ राष्ट्रपति ट्रम्प की सक्रिय भागीदारी, निश्चित रूप से, इस

क्षेत्र में भी अमेरिकी परिचालन नौसैनिक पुनर्संरचना में हो रहे एक दशक लंबे क्रमिक बहाव से प्रभावित थी। वर्ष 2010 में ऑस्ट्रेलिया ने डार्विन में 200 घूर्णी अमेरिकी सैनिकों की मेजबानी करने के लिए सहमति व्यक्त की थी-यह एक ऐसी संख्या थी जिसे 2019 तक, 2,500 तक विस्तारित किया जाना था और अमेरिका ने तब से ग्लाइड प्वाइंट पर डार्विन के उत्तर-पूर्व में नई नौसैनिक सुविधाओं का निर्माण किया है जो आगे की ओर तैनात उभयचर युद्धपोत और विमान वाहकों को समायोजित करने के लिए काफी बड़ी है।[20] वर्ष 2012 में, सिंगापुर में वार्षिक शांगरी ला डायलॉग में बोलते हुए, जनरल लियोन पनेटा को यह कहते हुए उद्धृत किया गया था कि वर्ष 2020 तक, अमेरिकी नौसैनिक बेड़े का 60 प्रतिशत एशिया-प्रशांत क्षेत्र में तैनात किया जाएगा, इसे इस क्षेत्र के लिए अमेरिकी सुरक्षा नीति की "सर्वोच्च प्राथमिकता" कहा जाएगा।[21]

ट्रम्प राष्ट्रपति रहने के समय अमेरिका को विशेष रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी अतिसक्रिय रुचि को मजबूत करते हुए देखा गया और ट्रम्प की विरासत अब तक बाइडेन प्रशासन पर हावी रही है।[22] जनवरी 2017 में, कार्यालय में बमुश्किल तीन दिन बिताने पर, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने राष्ट्रपति बैरक ओबामा द्वारा हस्ताक्षरित ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप से अमेरिका की वापसी की घोषणा की थी, जिसके बाद 2018 में यूएस पैसिफिक कमांड का नाम बदलकर यूएस हिंद-प्रशांत कमांड कर दिया गया और उत्तर कोरिया के किम जोंग-उन के साथ दो शिखर बैठकें आयोजित करते हुए बीजिंग के साथ व्यापार और प्रौद्योगिकी युद्धों के एक नए युग की शुरुआत हुई।[23]

अमेरिका-चीन का यह ताना-बाना महाद्वीपीय से समुद्री और भू-रणनीतिक से भू-अर्थशास्त्र तक बड़े प्रवाह की पृष्ठभूमि में हो रहा था, जो मुख्य रूप से इसके विस्तारित ऊर्जा प्रवाह और बाद में चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव द्वारा संचालित हिंद-प्रशांत गुरुत्वाकर्षण का केंद्र बना।

अमेरिका और चीन की इस प्रतिद्वंद्विता को महामारी ने और अधिक तीव्र कर दिया, जिसके बाद से अधिकांश औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएं व्यवधान और मंदी का सामना कर रही हैं, जबकि चीन ने दावा किया है कि उसकी अर्थव्यवस्था 2020-2021 के लिए 16 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच रही है। चीन के ग्लोबल टाइम्स ने दावा किया कि वित्तीय वर्ष जनवरी-दिसंबर 2021 के बीच यह 18.11 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गई।[25] इसने यूक्रेन संकट की पृष्ठभूमि को चिह्नित किया जहां चीन ने केवल रूस के 'विशेष सैन्य अभियानों' की निंदा करने से ही इनकार नहीं किया बल्कि रूस से अपने आयात को बढ़ाकर इसे राजनीतिक समर्थन प्रदान करके मास्को के साथ खड़ा हो गया है। रूस और चीन की यह बढ़ती निकटता उनकी बढ़ती सांठगांठ को यूक्रेन संकट का सबसे दुर्जेय परिणाम बनाती है जो स्पष्ट रूप से अमेरिकी हिंद-प्रशांत रणनीति को जटिल बनाती है। यूएस हिंद-प्रशांत रणनीति पर यूक्रेन संकट के प्रभाव की जांच करने के कई तरीके हैं। निम्नलिखित खंड कुछ प्रमुख चरों और प्रभावों की जांच करता है, जिन्हें यूक्रेन संकट ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साथ अमेरिकी जुड़ाव के विकास के साथ-साथ इसके प्रमुख हितधारकों के बीच क्षेत्रीय पुनर्निर्माण के समग्र प्रक्षेपवक्र के लिए भी दिखाया है।

यूक्रेन संकट: पहेली

अधिकांश पश्चिमी विश्लेषक, यूक्रेन में रूस के "विशेष सैन्य अभियानों" की पूर्व संध्या तक दृढ़ थे कि रूस की लागत/लाभ विश्लेषण वास्तव में यूक्रेन पर आक्रमण करने की अनुमति नहीं देता है और यहां तक कि सबसे खराब स्थिति में भी, रूस अपने हस्तक्षेप को पूर्वी यूक्रेन के डोनबास क्षेत्र में रूसी अल्पसंख्यकों की

जातीय सुरक्षा तक ही सीमित रखेगा।[26] इसका मतलब यह था कि इनमें से कोई भी देश रूसी हमले का सामना करने के लिए तैयार नहीं था, जिसने पश्चिमी गठबंधन व्यवस्थाओं की पहले से ही सुलगती दरार को झकझोर कर रख दिया था। रूस के खिलाफ अमेरिकी नेतृत्व वाले प्रतिबंधों के बहुप्रचारित अभियान की सबसे स्पष्ट कमजोरी यह थी कि उसके करीबी यूरोपीय सहयोगी भी रूसी गैस खरीदना बंद नहीं कर सकते थे, कम भी नहीं कर सकते थे, जो पुतिन के सैन्य अभियानों को वित्तपोषित कर रहा था।[27]

यदि कुछ हुआ है, रूस जल्द ही 2022 की सर्दियों के करीब आते ही कई यूरोपीय देशों की शीतकालीन भंडारण योजनाओं में घबराहट पैदा करने वाली यूरोपीय गैस आपूर्ति में कटौती करने की धमकी दे रहा था।[28] यह नाटो के आंतरिक विभाजन के बारे में चल रही बहस को पुनर्जीवित करने के लिए था।[29] जी-7 का भी यही हाल था। इसलिए, यूक्रेन संकट के बीच, इसे ब्रसेल्स में जुलाई 2022 के नाटो शिखर सम्मेलन को हिंद-प्रशांत चिंताओं के लिए खुद को फिर से उन्मुख करते देखा गया। पहली बार, इस शिखर सम्मेलन में चार हिंद-प्रशांत देशों अर्थात् ऑस्ट्रेलिया, जापान, न्यूजीलैंड और दक्षिण कोरिया के नेताओं ने भाग लिया। परिणामस्वरूप, रूस को अपना "सबसे महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष खतरा" बताते हुए नाटो ने घोषणा की कि चीन उनकी "प्रणालीगत चुनौती" है, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र के एक समन्वित और अभी तक एक समानांतर नाटो जुड़ाव का संकेत देता है।[30]

इसलिए, यूक्रेन संकट के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, अमेरिका और उसके यूरोपीय सहयोगियों के बीच इन जटिल मतभेदों ने अमेरिकी हिंद-प्रशांत रणनीति के लिए एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत की।

I) यूरोपीय सहयोगी

इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि यूक्रेन संकट ने अमेरिका और उसके यूरोपीय और एशियाई सहयोगियों को कई मुद्दों पर एकजुट होकर खड़ा देखा है, जो इस संकट को उनकी साझा सुरक्षा चुनौतियों के निवारण में उनके साझा हितों को मजबूत करने के लिए उत्प्रेरक बनाता है। उदाहरण के लिए, जी7 समूह द्वारा आईएमएफ और विश्व बैंक के माध्यम से स्विफ्ट और अंतर्राष्ट्रीय वित्तपोषण दोनों से रूस की पहुंच को काटना सबसे सामंजस्यपूर्ण था और इसने विश्व व्यापार संगठन में रूस के 'सबसे पसंदीदा राष्ट्र' का दर्जा रद्द करने और यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से निलंबित करने की मांग भी उठी।[31] संयुक्त राष्ट्र महासभा में मतदान वास्तव में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद से रूस के निलंबन का कारण बना।[32]

लेकिन इसके बाद रूस ने अपने निर्यात और हिंद-प्रशांत तटीय क्षेत्र , विशेष रूप से चीन और भारत के साथ संपर्क फिर से मजबूत करने के साथ-साथ शंघाई सहयोग संगठन या ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) समूह जैसे कई बहुपक्षीय मंचों में भाग लिया और यहां तक कि पकड़ भी बनाई। इसके वोस्तोक सैन्य अभ्यास में भारत, चीन, बेलारूस, मंगोलिया, ताजिकिस्तान आदि की सेनाएँ शामिल हैं।[33]इसलिए, यूक्रेन संकट ने यूरोपीय संघ, नाटो और जी7 समूहों के भीतर स्थायी आंतरिक विभाजनों को सामने लाने के लिए स्थानांतरण संरेखण को भी प्रेरित किया, जिसने हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साथ अपने जुड़ाव सहित अमेरिकी वैश्विक नेतृत्व के लिए नई चुनौतियां प्रस्तुत कीं।

अमेरिकी नीति निर्माताओं की परेशानी इस बात से भी बढ़ी है कि यूक्रेन संकट और हिंद-प्रशांत आख्यानों, दोनों पर इसके यूरोपीय और एशियाई सहयोगियों की प्रतिक्रियाएं अमेरिका से काफी अलग हैं, जिससे कुछ

और जटिलताएँ उत्पन्न होती हैं।

अमेरिका के सबसे करीबी सहयोगी, यूनाइटेड किंगडम (यूके) के साथ शुरू करते हैं-जहां 2021 एकीकृत समीक्षा और 'ग्लोबल ब्रिटेन' के नए परिप्रेक्ष्य की उम्मीद थी कि लंदन "सबसे व्यापक, सबसे एकीकृत उपस्थिति के साथ यूरोपीय भागीदार के रूप में हिंद-प्रशांत में गहराई से जुड़ा हुआ है"-यूक्रेन संकट इसकी बढ़ती अक्षमताओं को उजागर करता नजर आया।[34] इसमें कोई संदेह नहीं है कि सितंबर 2021 में एयूकेयूएस का गठन इस गैर-प्रशांत राष्ट्र के लिए हिंद-प्रशांत की साख दिलाता है और एक चाइना हॉक लिज़ ट्रस के बाइडेन प्रशासन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े रहने की आशा थी, फिर भी घरेलू अस्थिरता, ब्रेक्सिट के बाद की पुनरावृत्ति और सबसे ऊपर लंबे समय से जारी यूक्रेन संकट के कारण विशेषज्ञों को "विशेष रूप से यूक्रेन पर रूस के आक्रमण से उत्पन्न मांगों को देखते हुए [हिंद-प्रशांत के लिए] अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने की ब्रिटेन की क्षमता के बारे में" संदेह है।[35] तुलनात्मक रूप से फ्रांस और जर्मनी ने हमेशा हिंद-प्रशांत सहित अमेरिकी नीतियों से एक निश्चित दूरी बनाए रखी है- जैसा कि चांसलर ओलाफ शोल्ज़ और राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन की मास्को और कीव के बीच शटल कूटनीति में देखा गया है।[36]

फ्रांस ऐतिहासिक रूप से यूरोपीय स्वायत्तता का पक्षधर रहा है और उसे "हिंद-प्रशांत भागीदारी के लिए एक मकसद के रूप में नाटो की आवश्यकता नहीं है" क्योंकि उसके पास प्रशांत और हिंद महासागर दोनों में क्षेत्र हैं जो उसके 1.6 मिलियन नागरिकों के साथ-साथ 7,000 स्थायी रूप से तैनात कर्मी हैं, साथ ही 20 समुद्री पोत और 4 विमानवाहक पोत इसके 9 मिलियन किलोमीटर ईईजेड की रक्षा कर रहे हैं।[37] लेकिन इसके यूरोपीय सहयोगियों में से, रूस समर्थक समस्याग्रस्त नाटो सदस्य, तुर्की, यूक्रेन संकट के मुद्दों को हल करने में सबसे प्रभावी वार्ताकार बन गया है।[38] इसने स्पष्ट रूप से यूक्रेन संकट में बाइडेन प्रशासन के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में इसकी विश्वसनीयता के निहितार्थ के साथ पैंतरेबाज़ी की जगह को सीमित कर दिया है। यूरोपीय महाद्वीप के बाहर, कनाडा उत्तरी अमेरिका का ऐसा एकमात्र नाटो या जी7 सदस्य है, जो ट्रम्प के राष्ट्रपतित्व काल तक लगातार अमेरिकी नेताओं के साथ अपने 'विशेष संबंधों' के लिए जाना जाता है-इसने अपने अधिकांश सहयोगियों से दूर 'अमेरिका फर्स्ट' के हिस्से के रूप में-कुछ असंगत टिप्पणियों की थीं कि राष्ट्रपति बाइडेन, घर पर महामारी से प्रेरित घरेलू चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, अब तक इसे पूरी तरह से हल करने में विफल रहे हैं। हालाँकि, ट्रम्प के राष्ट्रपतित्व से पहले भी कनाडा और अमेरिका के बीच मतभेद मौजूद थे। उदाहरण के लिए, कनाडा ने इराक पर अमेरिका के नेतृत्व वाले 1991 के युद्ध में शामिल होने से इनकार कर दिया था और जब राष्ट्रपति ट्रम्प ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप से बाहर निकलने पर भी कनाडा उसमें शामिल रहा।

इसी तरह, बाइडेन प्रेसीडेंसी ने कार्यभार ग्रहण करने पर कीस्टोन एक्सएल पाइपलाइन बनाने के परमिट को रद्द कर दिया और बाद में कनाडा को अपने हिंद-प्रशांत इकोनॉमिक फोरम से बाहर रखा।[39] फिर भी, दोनों ने यूक्रेन संकट का जवाब देने सहित अधिकांश मुद्दों पर घनिष्ठ सहयोग बनाए रखा है, हालाँकि कनाडा के हस्तक्षेप का आकार अपेक्षाकृत बहुत छोटा है। लेकिन जब रूस तेजी से चीन पर निर्भर हो जाएगा और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बीजिंग के रुख को मजबूत करने के लिए बाध्य होगा तो एक दूसरे की संप्रभु स्वतंत्रता के लिए उनके स्थायी सम्मान के बड़ी चुनौतियों का सामना करने की आशंका है। विशेष रूप से तब, जब ओटावा ने अपनी दीर्घ प्रतीक्षित हिंद-प्रशांत रणनीति को अंतिम रूप देते हुए कहा है, "तेजी से बढ़ता वैश्विक चीन उस साझेदारी मॉडल के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है जिसने दशकों से कनाडा-अमेरिका संबंधों को परिभाषित किया है।"[40] यह अन्य सभी हितधारकों के निहितार्थ के साथ हिंद-प्रशांत के लिए अमेरिका और कनाडा के दृष्टिकोण के बीच अंतर को प्रकट कर सकता है।

II) हिंद-प्रशांत के सहयोगी

हिंद-प्रशांत तटीय क्षेत्र में अमेरिका के सहयोगियों के बीच, जापान केवल हिंद-प्रशांत प्रतिमान का सबसे पुराना प्रस्तावक ही नहीं रहा है, बल्कि वह सबसे प्रभावशाली और अमेरिका का एक करीबी सहयोगी भी है। जब यूक्रेन संकट पर अपनी प्रतिक्रिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी नेतृत्व के लिए इसकी प्रतिक्रियाओं की बात आती है, तो द्विपक्षीय चैनलों का उपयोग करने के बजाय, जापान ने रूसी कार्रवाइयों की निंदा करने, प्रतिबंध लगाने और 300 मिलियन डॉलर वित्तीय और मानवीय सहायता पैकेज प्रदान करने पर जी7 स्थिति के साथ संरेखित होने का विकल्प चुना है, इसके साथ ही प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा ने घोषणा की कि कैसे "यूक्रेन कल का पूर्वी एशिया हो सकता है। रूस की आक्रामकता केवल यूरोप का मुद्दा नहीं है। हिंद-प्रशांत को आवृत करने वाली अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था भी दांव पर है।[41] लेकिन हिंद-प्रशांत पर जापान का दृष्टिकोण उत्तर कोरिया के बढ़ते परमाणु और मिसाइल शस्त्रागार के साथ उसकी भौतिक निकटता और अपने सबसे दुर्जेय पड़ोसी और आर्थिक महाशक्ति-चीन के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण सुनिश्चित करने की आवश्यकता से घिरा हुआ है। 30,000 से अधिक जापानी कंपनियां चीन में काम कर रही हैं और 2021 के लिए उनका द्विपक्षीय व्यापार 391.4 बिलियन डॉलर के 10 वर्ष के उच्च स्तर पर बना हुआ है, यह दर्शाता है कि टोक्यो की नीति के विकल्प किस तरह जटिल बने हुए हैं।[42]

ऑस्ट्रेलिया अमेरिका का एक अन्य सहयोगी है जो अमेरिका के नेतृत्व वाले हिंद-प्रशांत आख्यान और हाल में चीन के साथ भिड़ंत में सबसे अधिक सक्रिय रहा है। 1951 में एएनकेयूएस के गठन के बाद से ऑस्ट्रेलिया सबसे मजबूत अमेरिकी सहयोगी रहा है, लेकिन अधिकांश अन्य हिंद-प्रशांत देशों की तरह, कैनबरा भी धीरे-धीरे बीजिंग के साथ जुड़ गया था। अब, यूक्रेन संकट के बीच, चीन और रूस के बीच बनते "परेशान करने वाले नई सामरिक अभिसरण" ने कैनबरा में सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा दिया है।[43] ऑस्ट्रेलिया ने जून 2022 के अंत तक यूक्रेन को नैतिक, राजनीतिक, वित्तीय सहायता और सैन्य आपूर्ति एक साथ 390 मिलियन डॉलर प्रदान किए हैं।[44] लेकिन ट्रम्प की प्रेसीडेंसी में कैनबरा अपने बारहमासी सवाल उठाता रहा कि क्या अमेरिका पर ऑस्ट्रेलिया का सहयोगी होने का भरोसा किया जा सकता है?[45] 2021 में एएनकेयूएस के निर्माण के साथ-स्पष्ट रूप से अमेरिका-ऑस्ट्रेलिया सुरक्षा सहयोग को मजबूत करते हुए-पुरानी बहस ने एएनकेयूएस की प्रभावकारिता पर उठे सवालों को फिर से जीवंत कर दिया है।[46] न्यूजीलैंड को अपनी उपस्थिति मजबूत करते देखा गया है। संयुक्त राष्ट्र के बाहर कभी भी कोई प्रतिबंध नहीं लगाने वाले इस देश ने एक ऐतिहासिक कानून पारित किया है, जो सरकार को 400 रूसियों पर यात्रा प्रतिबंध लगाने का अधिकार देता है और यूक्रेन को समर्थन देने के लिए गैर-घातक सैन्य सहायता प्रदान कर अपना योगदान दिया है। इसके अलावा, देश ने यूक्रेनी सैनिकों को प्रशिक्षण देने के लिए यूके में सैनिक भी भेजे।[47] हालाँकि, ऑस्ट्रेलिया के विपरीत, न्यूजीलैंड ने अपनी सैन्य सहायता को गैर-घातक स्तर तक रखा है और शुरू में कोई भी हथियार भेजने से इनकार कर दिया था।[48]

अमेरिका के एक अन्य महत्वपूर्ण हिंद-प्रशांत सहयोगी, दक्षिण कोरिया ने रूसी बैंकों पर प्रतिबंध लगाया और कुछ निर्यात नियंत्रण लागू किए। हालाँकि, देश की प्रतिक्रिया काफी हद तक मौन रही है क्योंकि इसने केवल सीमित मानवीय और गैर-घातक सैन्य आपूर्ति का समर्थन किया है। वास्तव में, जब राष्ट्रपति यून सुक-योएल अपने अगस्त 2022 के एशिया दौरे में, एक ही शहर, सियोल में रहकर भी यूएस हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी से मिलने से चूकने वाले एकमात्र एशियाई नेता बन गए थे, तो इसमें चीन का स्पष्ट प्रभाव

दिखाई दे रहा था।[49]

भारत, अमेरिका के हिंद-प्रशांत जुड़ाव का दूसरा नया मित्र रहा है, लेकिन यूक्रेन संघर्ष ने नई दिल्ली के साथ इस जुड़ाव की सीमाओं को प्रकट किया है, जो मॉस्को को बदनाम करने से बच रहा है और वास्तव में रूस से तेल के अपने आयात का विस्तार कर रहा है। नई दिल्ली की आयातित तेल पर अत्यधिक निर्भरता की अपनी मजबूरियां हैं और इसलिए वह अपने समय-परीक्षित मित्र रूस से लागत प्रभावी आपूर्ति प्राप्त करने के अवसरों को गंवाना नहीं चाहता है। लेकिन नई दिल्ली की यह भी मजबूरी है कि वह मास्को को धोखा न देकर उसे बीजिंग के लालच में और अधिक न धकेले, जिसके भारत के सुरक्षा हितों के लिए खतरनाक निहितार्थ हो सकते हैं। इसलिए, भारत ने यूक्रेन को मानवीय सहायता प्रदान करते हुए दोनों पक्षों से लगातार हिंसा को तत्काल बंद करने और बातचीत करने का आग्रह किया है। नीति के संदर्भ में, भारत ने इस बात पर जोर देते हुए स्पष्ट अंतर किया कि यूक्रेनी संकट एक यूरोपीय मुद्दा है और हिंद-प्रशांत के लिए होने वाली बातचीत-जैसे कि चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद बैठकों-को अपनी क्षेत्रीय चुनौतियों पर ध्यान देना चाहिए, जबकि यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह बिना किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप की मांग किए चीन की चुनौती को संबोधित कर सके, जिससे अमेरिका के लिए अपनी हिंद-प्रशांत रणनीति को रेखांकित करने वाली चीन की नीति का मुकाबला करने में भारत को शामिल करने के अवसर बंद हो गए।

चीन-रूस धुरी

अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति के लिए यूक्रेन संकट से उभरने वाली सबसे विकट चुनौती मॉस्को और बीजिंग के बीच या राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच बढ़ती निकटता रही है। इसलिए, अपने यूरोपीय सहयोगियों के साथ अपने बहुप्रचारित प्रतिबंधों के अभियान के अलावा, 24 फरवरी 2022 को यूक्रेन में रूसी 'विशेष सैन्य अभियानों' को देखते हुए, जब राष्ट्रपति जो बाइडेन ने, मार्च के आरंभ में ऑस्ट्रेलिया, जापान और भारत के साथ अपने चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद का एक ऑनलाइन शिखर सम्मेलन आयोजित किया तो संयुक्त राज्य अमेरिका के दो सबसे महत्वपूर्ण विरोधियों को पास धकेलने वाले इस विवर्तनिक बहाव की गंभीरता को रेखांकित किया। लेकिन क्वाड नेताओं के इस ऑनलाइन शिखर सम्मेलन में केवल हिंद-प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय आक्रामकता का मुकाबला करने के लिए मिलकर काम करने की घोषणा करते हुए एक मानवीय सहायता समूह की स्थापना पर सहमति हो पाई और कोई संयुक्त बयान नहीं था, बल्कि केवल सदस्य देशों के अपने बयान पढ़े गये थे।[50] मई 2022 में टोक्यो में उनके ऑफ़लाइन शिखर सम्मेलन का भी यही परिणाम रहा, जहां उनके अंतिम संयुक्त बयान में रूस या यूक्रेन शब्दों का उल्लेख तक नहीं था।[51] इससे पता चला कि क्वाड के अन्य सदस्य मास्को और बीजिंग को एक साथ जोड़ने के इच्छुक नहीं थे। विशेष रूप से भारत के ऐतिहासिक और सैन्य-आपूर्ति कारणों के कारण, साथ ही शायद अन्य वार्ताकारों की ओर से सावधानी बरतने के कारण, क्वाड ने स्पष्ट रूप से रूस के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करने के लिए सामूहिक रूप से अपनी ऊर्जा लगाने से परहेज किया और दोनों पक्षों को हिंसा रोकने और वार्ता पर लौटने के लिए कहा, जो अधिक से अधिक केवल कहने की बात प्रतीत होती है।

इस बीच, यूक्रेन संकट रूस को चीन के और करीब धकेल रहा है। दूरदर्शिता के लाभ के साथ, आज विशेषज्ञ एक उग्र महामारी के बीच क्रमशः दिसंबर 2021 और फरवरी 2022 में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत और चीन की यात्राओं के उद्देश्यों को बताते हैं। वास्तव में, दूसरी यात्रा एक असामान्य रूप से विस्तृत और ऐतिहासिक संयुक्त वक्तव्य के रूप में सामने आई थी जिसमें कहा गया था कि "दोनों राज्यों के बीच दोस्ती की कोई सीमा नहीं है" और "सहयोग के" कोई "निषिद्ध" क्षेत्र नहीं हैं।[52] लेकिन समय के साथ, यूक्रेन

संकट की अप्रत्याशित लंबी प्रकृति ने भी चीन को रूस के समर्थन में बहुत सतर्क और सूक्ष्म बना दिया है। यूक्रेन संकट के शुरुआती चरणों में बीजिंग ने बड़े पैमाने पर रूसी लाइन को प्रतिध्वनित किया और मास्को के "वैध सुरक्षा हितों" का बचाव किया और अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो को दोषी ठहराया और रूस की निंदा करने से इनकार कर दिया, उसके बाद से चीन अपने निजी मूल हितों की रक्षा के बारे में और अधिक सूक्ष्म हो गया है और साथ ही साथ मास्को के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों को प्रदर्शित करना भी जारी रखा है।

रूस को समर्थन में चीन के इस तरह के सूक्ष्म और अंशांकित बहाव का हिंद-प्रशांत के साथ अमेरिकी जुड़ाव के लिए स्पष्ट प्रभाव है।

उदाहरण के लिए, यूक्रेन संकट के पहले समाप्त होने की प्रतीक्षा करने के बाद, अधिकांश अन्य पश्चिमी मंचों में एक स्टार वक्ता के रूप में उभरे राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने केवल राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की से बात ही नहीं की-बल्कि राष्ट्रपति पुतिन से भी यूक्रेन के साथ बातचीत की संभावनाएं तलाशने के आग्रह किया-जिन पर शी ने रूस के विशेष सैन्य अभियान के दूसरा दिन और उसके बाद से कई बार बात की थी।[53]

सात मार्च को, चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने अपनी छह सूत्री पहल में पहला बदलाव किया, जबकि उसी समय अमेरिका और उसके यूरोपीय सहयोगियों के बीच एक खूंटा भी गाड़ डाला। यूक्रेन को चीन की मानवीय सहायता की घोषणा करते हुए उन्होंने रेखांकित किया कि "यूरोप की सुरक्षा स्वयं यूरोप के लोगों के हाथों में रखी जानी चाहिए", जिसे "शामिल सभी पक्षों की वैध सुरक्षा चिंताओं" को पूरा करना चाहिए।[54] 8 मार्च, 2022 को खुद राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने फ्रांस और जर्मनी के नेताओं के साथ एक बातचीत में कहा कि वे "यूरोपीय महाद्वीप में फिर से युद्ध के प्रकोप से बहुत दुखी हैं" और सावधानी बरतते हुए विशेष सैन्य अभियानों की भाषा से अलग रहे।[55] मार्च के मध्य में, यूक्रेन में चीन के राजदूत, फैन जियानरोंग ने, एक कदम और आगे बढ़कर "यूक्रेनी लोगों की महान एकता" की प्रशंसा की[56] चीन द्वारा रूस को करीब रखने और साथ ही साथ यूरोप को अमेरिका से दूर करने के के ऐसे प्रयास परिणाम हीन नहीं रहे हैं। यूक्रेन संकट शुरू होने से पहले, यूरोपियन काउंसिल फॉर फॉरेन रिलेशंस द्वारा 2021 के एक जनमत सर्वेक्षण से पता चला कि अधिकांश यूरोपीय चाहते थे कि उनका देश चीन और अमेरिका के बीच किसी भी संघर्ष में तटस्थ रहे, जिसमें 66 प्रतिशत जर्मनो इस दृष्टिकोण के समर्थक थे।[57]

यह शायद राष्ट्रपति जो बाइडेन के कार्यालय में अपने पहले 18 महीनों में राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ पांच ऑनलाइन शिखर सम्मेलन आयोजित करने और कार्यालय में 14 महीनों में इसी तरह क्वाड नेताओं के चार (दो ऑनलाइन प्लस दो ऑफ़लाइन) शिखर सम्मेलन आयोजित करने की व्याख्या करता है। इस तरह के अतिसक्रिय संपर्क शीत युद्ध की चरम अवधि की याद दिलाते हैं, जब क्यूबा मिसाइल संकट के बाद, यूएस और यूएसएसआर ने अप्रत्याशित आपात स्थितियों को संबोधित करने के लिए सीधे संचार के लिए हॉटलाइन स्थापित की थी। 1998 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की यात्रा के दौरान अमेरिका और चीन के बीच इस तरह की पहली हॉटलाइन सक्रिय हुई थी। शीत युद्ध में उस समय शांति बनाये रखना था और यह प्रवृत्ति 2003 में अमेरिका द्वारा चीन के सह-चयन में परिलक्षित हुई थी, जब राष्ट्रपति जॉर्ज बुश जूनियर ने उत्तर कोरिया के परमाणुकरण की मांग पर छह पक्षों की वार्ता के लिए बीजिंग को संयोजक नियुक्त किया था। तथ्य यह है कि बीजिंग ने प्योंगयांग को एक परमाणु हथियार राज्य के रूप में उभरने

की अनुमति देने के लिए इसका इस्तेमाल किया, चीन-अमेरिका की भंगुरता को पुनर्जीवित किया, जो 1979 में अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप के समान प्रतीत होता है, जिससे दूसरा शीत युद्ध आरंभ हुआ। इस बीच, उत्तर कोरिया अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति में सबसे तात्कालिक चुनौती के रूप में उभरा है जबकि चीन इसकी सबसे स्थायी चुनौती बना हुआ है। उत्तर कोरिया के अगले परमाणु परीक्षण की कभी भी आशा के साथ, इसने अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति को परेशान करना जारी रखा है।

ट्रम्प की विरासत और महामारी

वर्ष 2017 की अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति रिपोर्ट में उल्लेख था कि ट्रम्प की प्रेसीडेंसी ने अपने आकलन में स्पष्ट किया था कि "चीन हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका को विस्थापित करना चाहता है" और इसे "हिंद-प्रशांत में हो रहे विश्व व्यवस्था के मुक्त और दमनकारी दृष्टि के बीच भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा" के संदर्भ में तैयार किया है" जहां अमेरिकी हित "हमारे गणतंत्र के शुरुआती दिनों से फैले हुए हैं।"[58] 2017 की इस रिपोर्ट में उत्तर कोरिया ने 16 बार राष्ट्रपति ट्रम्प को किम जोंग-उन के साथ आमने-सामने शिखर सम्मेलन आयोजित करने के लिए दो बार एशिया की यात्रा करने की अपनी सबसे दुस्साहसिक पहल का प्रयास करने का उल्लेख किया था, लेकिन बाद में निराश होने के कारण इसका कोई परिणाम नहीं निकला। दूसरे शिखर सम्मेलन को वास्तव में बीच में ही निलंबित कर दिया गया था। इसी तरह, राष्ट्रपति ट्रम्प को चीन के साथ व्यापार और प्रौद्योगिकी युद्ध छेड़ना था, जिससे राष्ट्रपति जो बाइडेन की हिंद-प्रशांत रणनीति के लिए उनकी कुछ सबसे जटिल विरासतें बची थीं। जल्द ही, महामारी और यूक्रेन संकट ने राष्ट्रपति बाइडेन के नीतिगत विकल्पों को और जटिल बना दिया। इसलिए, राष्ट्रपति जो बाइडेन की फरवरी 2022 की अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति, वही रही और अब और अधिक जटिल हो गई है:

ऑस्ट्रेलिया के आर्थिक दबाव से लेकर भारत के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर संघर्ष और ताइवान पर बढ़ते दबाव तथा पूर्व और दक्षिण चीन सागर में पड़ोसियों की धमकियों तक, इस क्षेत्र में हमारे सहयोगी और साझेदारों के पीआरसी के हानिकारक व्यवहार के कारण बहुत कुछ वहन करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में, पीआरसी मानव अधिकारों और अंतरराष्ट्रीय कानून को भी कमजोर कर रहा है, जिसमें नेविगेशन की स्वतंत्रता के साथ ही हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और समृद्धि लाने वाले कईअन्य सिद्धांत शामिल हैं।"[59]
विशेष रूप से, तथ्य यह है कि यूक्रेन संकट दो वर्ष की महामारी से पहले से था और इसके परिणामस्वरूप समग्र विकासात्मक और विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों में बड़ी रुकावटें आईं और जिसके बाद अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की गलत तरह से निकासी हुई, जिसने उस पृष्ठभूमि को चिह्नित किया जहां राष्ट्रपति बाइडेन ने फरवरी 2022 में यूक्रेन में 'विशेष सैन्य अभियान' चलाने के लिए रूस के खिलाफ प्रतिबंध अभियान चलाया था, इसे घरेलू और विदेश नीति में अपनी विफलताओं से जनता का ध्यान हटाने की कोशिश करने के लिए बाइडेन प्रशासन की ओर से एक आदर्श बहाना माना गया, भले यह आंशिक रूप से ही किया गया था। इसी तरह, व्यक्तिगत राजनीति को अगस्त 2022 में फिर से एक अन्य बहाना कहा गया था, जब यूक्रेन में एक अंतहीन गतिरोध के सामने, यूएस हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी की ताइवान यात्रा ने संक्षेप में मीडिया का ध्यान ताइवान स्ट्रेट में स्थानांतरित कर दिया था।[60] हिंद-प्रशांत की, इस यात्रा ने निश्चित रूप से चीनी शक्ति के अनुमानों में वृद्धि के माध्यम से लहर प्रभाव उत्पन्न किया और बीजिंग को जलवायु परिवर्तन सहित कई मुद्दों पर बातचीत रोकनी पड़ी। इन सबने उनकी भंगुरता को और तेज किया है और अमेरिकी हिंद-प्रशांत रणनीति में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की केंद्रीयता को मजबूत किया है।

संक्षेप में, तेजी से आपस में जुड़ी हुई दुनिया के सामने, जो अंतर-राज्य संबंधों को एक अत्यधिक जटिल क्रम बनाती है, विश्व युद्ध के बाद के नीतिशास्त्रों, मानदंडों, सम्मेलनों, संस्थानों और संरेखण के आधार पर विश्व व्यवस्था का प्रबंधन करना केवल जटिल ही नहीं बल्कि इसकी प्रासंगिकता और इसे शिथिल करना भी सीमित है। तो पहली बात यह है कि नया शीत युद्ध, यदि कोई है, तो इसके मॉस्को और वाशिंगटन डीसी के वैचारिक रूप से संचालित 20वीं सदी के मुकाबलों के करीब होने की संभावना नहीं है। आज, चीन और अमेरिका दोनों आपस में और बाकी अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ भी गहराई से जुड़े हुए हैं। घरेलू स्तर पर, राष्ट्रपति बाइडेन को गिरती रेटिंग, मध्यावधि चुनाव और 2025 में डोनाल्ड ट्रम्प के व्हाइट हाउस में लौटने की संभावनाओं से निपटना होगा। इसी तरह, चीन में, राष्ट्रपति शी के सामने भी तत्काल घरेलू चुनौतियां थीं क्योंकि उन्होंने कार्यालय में अपना तीसरा कार्यकाल जारी रखा था। एशिया-प्रशांत में मजबूत सैन्य उपस्थिति बनाए रखने वाले अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका के नेतृत्व वाली विश्व व्यवस्था में प्रमुखता हासिल कर ली थी, जो तब से कम हो गई है और एक नई व्यवस्थ अभी भी पूरी तरह से उभरने का इंतजार कर रही है। इस मोड़ पर, चीन और अमेरिका के बीच सामरिक समीकरणों में अनिश्चितता के साथ-साथ उनके घरेलू मंथन और भेद्यताएं भी इस विवर्तनिक परिवर्तन के अभिन्न अंग हैं, जहां यूक्रेन संकट को भारत के साथ इस वैश्विक मंथन के केन्द्रापसारक और केन्द्राभिमुख दोनों आवेगों को गति देने वाले संक्रमण बिंदु के रूप में याद किया जाएगा, जबकि हिंद-प्रशांत अपना केंद्र बिंदु बना रहा है।

निष्कर्ष

इसमें कोई संदेह नहीं है कि, हिंद-प्रशांत 21वीं सदी की वैश्विक भू-राजनीति के केंद्र-बिंदु के रूप में उभरा है और अमेरिका एशिया-प्रशांत या अब 'हिंद-प्रशांत' शक्ति के रूप में इसका मान्यता प्राप्त सबसे शक्तिशाली निवासी और नई कथाओं और पहलों के निर्माण में इसका प्रमुख खिलाड़ी भी है। हालाँकि, इसके मूल में, अमेरिका के नेतृत्व को प्रशांत और हिंद महासागरों में इसकी क्षेत्रीय संपत्ति के साथ-साथ इसके गठबंधन सहयोगियों और इन महासागरों में फैले सैन्य ठिकानों और नौसैनिक पहुँच द्वारा समर्थित किया गया है, विशेष रूप से कैलिफोर्निया, ओरेगन, वाशिंगटन सहित इसके पूर्वी तट पर और अलास्का में(अलेउतियन श्रृंखला सहित), जिसमें सैन डिएगो इसके हिंद-प्रशांत बेड़े का आवासी बंदरगाह है, इस बेड़े में 50 से अधिक जहाज शामिल हैं, जिसमें 20,000 से अधिक कर्मियों के साथ स्थायी विमान वाहक भी हैं।[61] इस विशाल प्रशांत महासागर के केंद्र में, अमेरिका हिंद-प्रशांत कमांड का मुख्यालय-हवाई द्वीप, हिंद-प्रशांत क्षेत्र का 'गेटवे' बना हुआ है। इसके अलावा, अमेरिका के पास डिएगो गार्सिया, गुआम और टिनियन के सैन्य ठिकाने भी हैं जो चीन जैसी एशियाई शक्तियों के उदय के साथ महत्वपूर्ण हो गई हैं और इसके परिणामस्वरूप अटलांटिक से प्रशांत क्षेत्र में वैश्विक भू-राजनीतिक बदलाव आया है। अमेरिकी नौसेना आज पश्चिमी प्रशांत नौसेना संगोष्ठी और साथ ही हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी दोनों का एक अभिन्न अंग है।

लेकिन राष्ट्रीय शक्ति के सूचकांक आर्थिक उत्तोलन को अधिक महत्व देने के लिए विकसित हुए हैं जो चीन के इस अभूतपूर्व आर्थिक उत्थान से मेल खाते हैं। इसलिए जब वैश्विक भू-राजनीति की धुरी भू-रणनीतिक से भू-अर्थशास्त्र में बदल जाती है, तो यह हिंद-प्रशांत क्षेत्र को वैश्विक अर्थव्यवस्था के विकास इंजन के रूप में प्रस्तुत करती है और यही वैश्विक ध्यान और प्रमुख शक्तियों के जुड़ाव का केंद्र है। इन हिंद-प्रशांत तटीय राष्ट्रों में, चीन क्षेत्रीय के साथ ही वैश्विक विकास का भी इंजन रहा है और यह दुनिया का सबसे बड़ा व्यापारिक राष्ट्र ही नहीं बल्कि इसके पास वैश्विक निर्माण का लगभग एक-तिहाई हिस्सा है, जिसका वैश्विक निहितार्थ है। यह इस सहूलियत के बिंदु से है कि चीन विशेष रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी वैश्विक नेतृत्व के लिए एक नई संभावित चुनौती भी प्रस्तुत करता है। लेकिन अतीत मार्गदर्शक और लंगर

बना हुआ है और विशेषज्ञों ने शीत युद्ध की आर्थिक और राजनीतिक विरासत में हिंद-प्रशांत में वर्तमान असुरक्षा और अस्थिरता के लिए स्पष्टीकरण तलाशना जारी रखा है।[62] यह आंशिक रूप से बताता है कि प्रशांत और हिंद महासागर के तटीय क्षेत्रों के आर्थिक एकीकरण का एकमात्र चालक चीन, अमेरिका के नेतृत्व वाले हिंद-प्रशांत आख्यानों और पहलों में एक बाहरी व्यक्ति क्यों बना हुआ है।

इस तेजी से बदलती भू-राजनीतिक पृष्ठभूमि में, यूक्रेन संकट, सह-अस्तित्व वाली बढ़ती प्रतिधाराओं और इसलिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की उदार विश्व व्यवस्था को बनाए रखने की जटिलता के लिए एक चेतावनी प्रस्तुत करता है। यूक्रेन संकट रूस को चीन के और करीब ले जा रहा है, यूरोपीय सुरक्षा वास्तुकला को अस्थिर कर रहा है, रूस को अमेरिका के खतरे की धारणाओं में सबसे आगे और केंद्र बना रहा है, साथ ही यह भी रेखांकित करता है कि हिंद-प्रशांत में बीजिंग और वाशिंगटन के बीच स्थायी और व्यापक भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता बनी हुई है, जिस पर उभरती हुई नई विश्व व्यवस्था की धुरी है।

यूरोपीय संघ के लिए यूक्रेन संकट के निहितार्थ

एक अन्योन्याश्रित दुनिया में फिर से सुरक्षा पर चर्चा

प्रो. उम्मु सलमा बावा

रूस द्वारा क्रीमिया के विलय के बाद यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों द्वारा लक्षित आर्थिक प्रतिबंधों और कूटनीतिक पहलों ने दोनों पक्षों के बीच के संबंधों को मौलिक रूप से नहीं बदला।

यूक्रेन के विरुद्ध 24 फरवरी 2022 को शुरू हुए रूसी सैन्य आक्रमण ने यूरोप में भू-राजनीतिक, भू-अर्थशास्त्र और सुरक्षा परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है, जबकि वैश्विक स्तर पर भी इसका समान रूप से गहरा प्रभाव पड़ा है। यूक्रेन में युद्ध ने यूरोपीय संघ-रूस संबंधों पर भी प्रकाश डाला है, जो राजनीतिक, आर्थिक और ऊर्जा संबंधों का एक लंबा इतिहास रहा है, संघर्ष की तीव्रता बढ़ने के साथ यह तेजी से सामने आने लगा। 2014 में क्रीमिया के विलय के आठ वर्ष बाद, यूक्रेन में युद्ध, रूस के साथ संबंधों को प्रभावी ढंग से संलग्न और प्रबंधित करने के लिए यूरोपीय संघ में कई स्तरों पर छूटे हुए अवसरों और विफलता की गंभीर याद दिलाता था। रूस द्वारा क्रीमिया के विलय के बाद यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों द्वारा लक्षित आर्थिक प्रतिबंधों और कूटनीतिक पहलों ने दोनों पक्षों के बीच संबंधों को मौलिक रूप से नहीं बदला। अंतर्राष्ट्रीय कानून के गंभीर उल्लंघन के बावजूद, यूरोपीय संघ ने व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति को शामिल करते हुए रूस के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को जारी रखा और इसकी ऊर्जा सुरक्षा को कम करने के लिए शायद ही कोई कदम उठाए गए। कुछ मायनों में, इसने यूक्रेन के पूर्वी प्रांत में मास्को के दावों को बल दिया और उसे पश्चिम के साथ जुड़ाव के नियमों को फिर से लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

यह रूस के सामूहिक यूरोपीय तुष्टीकरण का परिणाम था जिसने यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता पर अपनी आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा चिंताओं को प्राथमिकता दी। यह शोधपत्र यूरोपीय संघ पर यूक्रेन युद्ध के प्रभाव का विश्लेषण करता है जिसमें यूएनएससी का एक सदस्य दूसरे स्वतंत्र देश के खिलाफ क्षेत्रीय आक्रमण में शामिल है, और यह एक अन्योन्याश्रित दुनिया में, यूक्रेन संघर्ष के राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा और मानवीय आयामों की जांच करते हुए कैसे यूरोप में अपनी सुरक्षा पर फिर से चर्चा कर रहा है।

यूरोपीय संघ और रूस के बीच राजनीतिक जुड़ाव का संकट और सुरक्षा परिदृश्य

वर्ष 2014 में क्रीमिया के विलय से लेकर 2022 में यूक्रेन में युद्ध शुरू होने तक, यूरोपीय संघ और रूस के बीच के द्विपक्षीय संबंधों में गलत कदमों और कूटनीतिक प्रयासों के संकट की श्रृंखला रही है। 2015 के शरणार्थी संकट और कोविड 19 महामारी ने यूरोपीय संघ के भीतर बहुत अधिक आंतरिक संकट बिंदु उत्पन्न किए, जिससे क्रीमिया और यूक्रेन की सीमाओं, दोनों में बढ़ती रूसी गतिविधि को प्रभावी ढंग से संबोधित नहीं किया जा सका। यूक्रेन युद्ध ने यूरोप में सुरक्षा ढांचे को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है, जिससे यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ-साथ ट्रान्साटलांटिक संबंधों में भेद्यता और असुरक्षा के नए बिंदु सामने आए हैं। पश्चिम के लिए, यह केवल यूक्रेन के खिलाफ नहीं बल्कि अपने खिलाफ रूस द्वारा शुरू किया गया एक युद्ध था, जिसने यूरोप में एक नई सुरक्षा दुविधा पैदा की, जो संघर्षों को हल करने के लिए मौजूदा सुरक्षा वास्तुकला और कूटनीति के टूटने की स्थिति में उभरा, बल्कि इसने पिछले दशकों में रक्षा में निवेश की कमी, सेना की तैयारियों के कम होने और आर्थिक अन्योन्याश्रितता की ओर ध्यान आकर्षित किया।

स्रोत: नेशंस ऑनलाइन प्रोजेक्ट

मानचित्र 1: यूरोप का राजनीतिक मानचित्र

मॉस्को द्वारा 'विशेष सैन्य अभियानों' के अंतर्गत यूक्रेन पर आक्रमण और 24 फरवरी 2022 को टैंकों की गोलाबारी ने पश्चिम में शांति और सुरक्षा के सभी वर्तमान समझौतों को भंग कर दिया। 1990 में शीत युद्ध की समाप्ति ने पूर्व-पश्चिम विभाजन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की द्विध्रुवीय संरचना को समाप्त कर दिया था।

उल्लेखनीय है कि इसने सोवियत संघ के अंतःस्फोट का भी नेतृत्व किया और केवल मध्य और पूर्वी यूरोपीय देशों के ही नहीं, बल्कि सोवियत अंतरिक्ष से उभरने वाले कई नए देशों में भी भू-राजनीतिक विचारों में बदलाव आया। काउंसिल फॉर म्युचुअल इकोनॉमिक असिस्टेंस (कॉमकॉन) और वारसॉ पैक्ट का विघटन यूरोपीय संघ और नाटो बनने के यूरोपीय आर्थिक समुदाय की मजबूती के विपरीत था। इन पूर्व समाजवादी देशों के राजनीतिक-आर्थिक और सुरक्षा परमाणु प्रतिरोध में शामिल होने के साथ ही पश्चिम के नाटो संधि संस्थानों के अनुच्छेद 5 के अंतर्गत सामूहिक आत्मरक्षा ने सहयोग के एक नए भू-राजनीतिक परिदृश्य और

बाद में मास्को के साथ संघर्ष का नेतृत्व किया।

सुरक्षा के दृष्टिकोण से, एकमात्र प्रश्न यह बन गया कि रूसी हमले के सामने यूरोप की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से

सुरक्षा के दृष्टिकोण से, एकमात्र प्रश्न यह बन गया कि रूसी हमले के सामने यूरोप की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से कैसे तैयार हुआ जाए। यूरोप और सदस्यों को रूसी आक्रमण से बचाने की स्थिति में एकमात्र विश्वसनीय सुरक्षा स्रोत होने के नाते, केवल नाटो पर ध्यान केंद्रित किया गया। रूसी दृष्टिकोण से देखने पर नाटो के विस्तार को रूसी कार्रवाई के लिए उकसावे के कारण के रूप में उद्धृत किया गया था। युद्धकालीन तटस्थता और सैन्य गठबंधन से बाहर रहने के अपने लंबे समय से संरक्षित स्थिति से एक नाटकीय बदलाव में, दो स्कैंडिनेवियाई देशों फिनलैंड और स्वीडन ने हाल ही में बढ़ते रूसी आक्रमण को देखते हुए अपनी ऐतिहासिक स्थिति को छोड़ने का फैसला किया है। फ़िनलैंड अस्सी वर्षों से तटस्थ रहा है, जबकि स्वीडन दो सौ वर्षों से तटस्थ बना रहा है। नाटो सदस्यता के लिए इस तटस्थता को छोड़ना केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं था, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण सुरक्षा मूल्यांकन पर आधारित था। दोनों देशों के पास परमाणु हथियार नहीं हैं और मास्को से यूक्रेन के खिलाफ परमाणु हथियारों के इस्तेमाल के बढ़ते खतरे ने इन दोनों देशों को नाटो की सदस्यता की ओर धकेल दिया। ऐसी सदस्यता केवल विस्तारित परमाणु प्रतिरोध ही नहीं बल्कि नाटो संधि के अनुच्छेद 5 के अधीन सामूहिक आत्मरक्षा लाती है।

यूरोपीय संघ-रूस संबंधों में सुरक्षा और भू-आर्थिक विचारों को फिर से परिभाषित करना

यूरोपीय संघ-रूस संबंध मतभेदों से मुक्त नहीं रहे हैं, लेकिन पुतिन के राष्ट्रपति पद संभालने के साथ, ब्रसेल्स नीतियों के बारे में धारणाओं के संबंध में मास्को से समान प्रतिक्रिया नहीं दी गई। मास्को के लिए प्रभाव क्षेत्र का कम होना यूरोपीय संघ और नाटो के विस्तार के जुड़वां विकास से आया है। मास्को के दृष्टिकोण से, यह अब मानचित्र पर एक सौम्य बदलाव नहीं था, बल्कि पूर्व और पश्चिम के बीच एक नई गलती की रेखा का आरेखण था। नाटो का विस्तार अधिक समस्याग्रस्त था क्योंकि शीत युद्ध की आत्मरक्षा संस्था का विघटन होने के बजाय इसने अपने को फिर से स्थापित किया और यूरोप और उसके बाहर एक अनिवार्य सुरक्षा प्रदाता बन गया। नाटो के विस्तार को मास्को द्वारा ऐसे 'विस्तार' के रूप में देखा गया था जिसने उसकी सुरक्षा को प्रत्यक्ष रूप से ख़तरे में डाल दिया था। दूसरी ओर, यूरोपीय संघ ने 2004 में अपना सबसे बड़ा विस्तार किया, जिसमें मुख्य रूप से मध्य और पूर्वी यूरोप के 10 देश शामिल हुए और संघ की सीमाओं को पूर्व में विस्तारित करते हुए इसे रूस के और अधिक सीधे संपर्क में ला दिया।. 2004 के विस्तार की पृष्ठभूमि में, यूरोपीय संघ ने यूरोपीय पड़ोस नीति (ईएनपी) का शुभारंभ किया, जिसका उद्देश्य इसके पूर्वी और दक्षिणी किनारे के देशों को शामिल करना था, जो संभावित उम्मीदववार देश नहीं थे। पूर्वी दिशा में ईएनपी मास्को के प्रभाव क्षेत्र में चला गया, जिसने इस नीति को अपनी पूर्व क्षेत्रीय इकाइयों के राजनीतिक समर्थन को सुरक्षित करने के साधन के रूप में देखा।

नाटो के विस्तार को मास्को द्वारा उसकी सुरक्षा के खतरे के रूप में देखा गया था।

वर्ष 2014 में क्रीमिया का विलय यूक्रेन के खिलाफ रूस द्वारा निरंतर युद्धाभ्यास का आरंभ था, जो लंबे समय से चली आ रही उन घटनाओं की श्रृंखला में था, जिसमें कीव ने मास्को की बजाय ब्रसेल्स को अपनी राजनीतिक वरीयता में स्थानांतरित कर दिया था। हालाँकि, यूरोपीय संघ के लिए, यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता का प्रभावी ढंग से उल्लंघन करने वाले अंतरराष्ट्रीय कानून के इस प्रमुख निरसन के बावजूद आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा के विचारों ने इसे रूस के साथ जोड़े रखा।

युद्ध असममित झटके लाया, इसने यूरोपीय संघ को कई तरह से प्रभावित किया। रूस से यूरोप को ऊर्जा आपूर्ति में आया व्यवधान सबसे बड़ा था और मास्को पर अपनी ऊर्जा निर्भरता को कम करना संघ की आवश्यकता थी। रूस दुनिया का सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस निर्यात है और सऊदी अरब के बाद वैश्विक स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा तेल निर्यातक है साथ ही यह यूरोपीय संघ को ऊर्जा का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। कहा जा सकता है कि ऊर्जा संबंध यूरोपीय संघ-रूस संबंधों की आधारशिला रहे हैं। यूरोपीय संघ में आर्थिक विकास को चलाने के लिए रूस से सस्ती ऊर्जा की उपलब्धता ने हमेशा अन्य राजनीतिक चिंताओं को दूर करने में सफलता पाई है। इस प्रकार, यूक्रेन युद्ध यूरोपीय संघ को न केवल रूस पर प्रतिबंध लगाने के लिए मजबूर कर रहा था बल्कि अपनी ऊर्जा आपूर्ति में विविधता लाकर उस विषम संपार्श्विक क्षति को कम करने के लिए मजबूर कर रहा था (नीचे चित्र 1 और 2 देखें) जो मास्को ने यूक्रेन को समर्थन देने के लिए लगाया था।

यूरोपीय संघ ने लक्षित आर्थिक प्रतिबंधों की एक श्रृंखला को लागू करने और रूस से अपनी ऊर्जा खपत को कम करके इसका उत्तर दिया। युद्ध और प्रतिबंधों के परिणामस्वरूप, यूक्रेन और रूस से निर्यात भी प्रभावित हुआ और इस प्रकार खाद्यान्न, धातु, तेल और गैस की कीमतों में विश्व स्तर पर तेजी से वृद्धि हुई। इस वृद्धि ने यूरोपीय आर्थिक सुधार को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित किया है जिसने उच्च मुद्रास्फीति देखी है और मंदी की आशंका को बढ़ा दिया है क्योंकि यूक्रेन में युद्ध का कोई अंत नहीं दिख रहा है।

आरेख1: साझेदार द्वारा पेट्रोलियम तेल का अतिरिक्त-यूरोपीय संघ आयात

(मूल्य में व्यापार का हिस्सा (%))

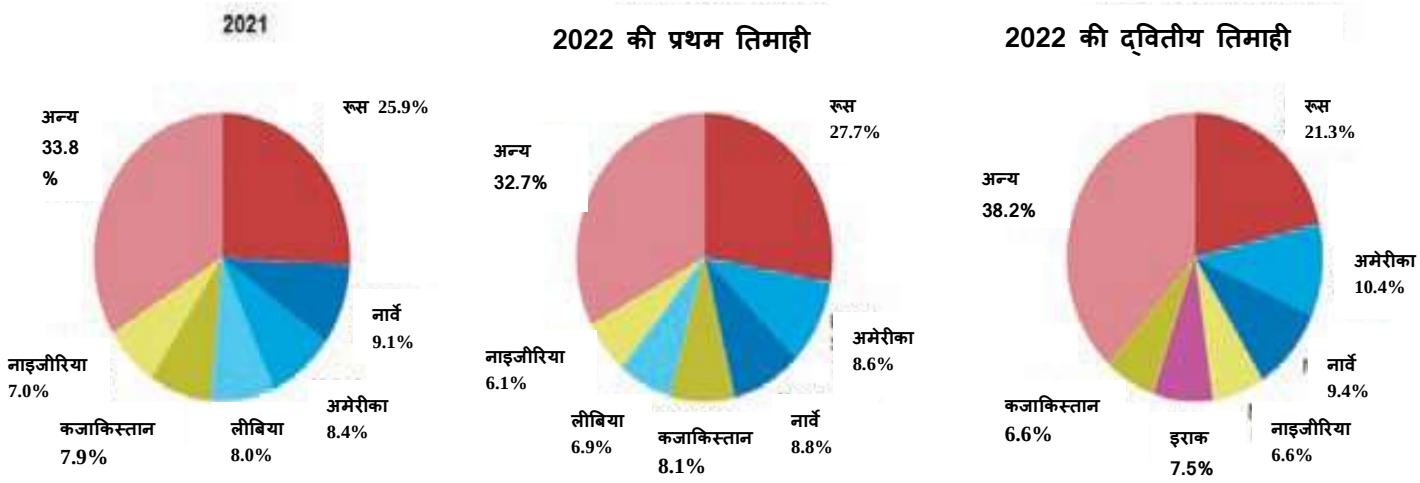

स्रोतः यूरोस्टेट डाटाबेस (कॉमेक्स) और यूरोस्टेट अनुमान

चित्र 2: साझेदार द्वारा प्राकृतिक गैस का अतिरिक्त-यूरोपीय संघ आयात

(मूल्य में व्यापार का हिस्सा (%))

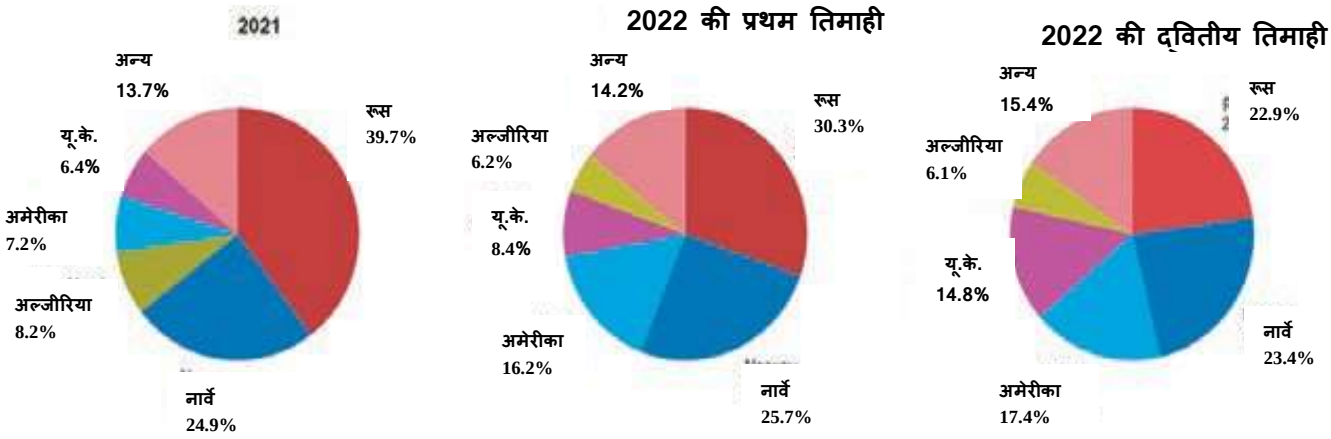

स्रोतः यूरोस्टेट डाटाबेस (कॉमेक्स) और यूरोस्टेट अनुमान

पूरे यूरोपीय संघ में यूक्रेन युद्ध का मिश्रित प्रभाव रहा है। शरणार्थी प्रवाह के संदर्भ में, लोगों को शरण देने वाले यूरोपीय संघ के शीर्ष पांच देश पोलैंड, जर्मनी, चेक गणराज्य, इटली और स्पेन हैं। रूस पर सदस्य राज्यों की ऊर्जा निर्भरता के संदर्भ में, यह कच्चे तेल, गैस और ठोस जीवाश्म ईंधन का मुख्य आपूर्तिकर्ता था। 2020 में, यूरोपीय संघ का तीन-चौथाई कच्चा तेल (29 प्रतिशत) और प्राकृतिक गैस (43 प्रतिशत) और आधा ठोस जीवाश्म ईंधन (54 प्रतिशत) रूस से आया, जो स्पष्ट रूप से मास्को के एक अनिवार्य ऊर्जा भागीदार होने के मूल्य को दर्शाता है।[1] रूस ने अपनी कम लागत वाली प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के साथ यूरोप के ऊर्जा मानचित्र में एक प्रमुख स्थान रखा, जिसने यूरोप को गुलाम बना लिया था।

निस्संदेह, इस आयात निर्भरता ने मास्को को ब्रसेल्स और सदस्य राज्यों से विभिन्न प्रकार की रियायतों का लाभ उठाने की अनुमति दी। यूक्रेन युद्ध के आरंभ के साथ, मास्को इस ऊर्जा निर्भरता को हथियार बनाने में सक्षम रहा था, इस प्रकार यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों को भारी आर्थिक लागत चुकानी पड़ी।

वर्ष 2020 में, जर्मनी ने 66 प्रतिशत, पोलैंड ने 54 प्रतिशत, हंगरी ने 95 प्रतिशत, इटली ने 43 प्रतिशत और नीदरलैंड ने रूस से 30 प्रतिशत प्राकृतिक गैस प्राप्त की, जिससे यह उनके आर्थिक विकास में एक अनिवार्य भागीदार बन गया। यूरोपीय संघ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, जर्मनी ने 2000-2020 के बीच अपने ऊर्जा आयात को 59.4 प्रतिशत से बढ़ाकर 63.7 प्रतिशत कर दिया। रूस से सस्ती गैस की प्रचुर मात्रा में आपूर्ति को देखते हुए, जर्मनी जैसे देशों ने भी आयात विविधीकरण या भूमिगत भंडारण क्षमता में वृद्धि नहीं की।[2] रूस ने यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के साथ मजबूत द्विपक्षीय ऊर्जा संबंध बनाने के लिए अपनी ऊर्जा संपत्ति का भी उपयोग किया, जिससे उनके लिए असममित भेद्यता भी उत्पन्न हुई।[3] जर्मनी के मामले में, रूस पर निर्भरता की जटिलता और भी आश्चर्यजनक है, दूसरी सबसे बड़ी भंडारण सुविधा ऑपरेटर एस्टोरा के साथ, रूसी गज़प्रोम की 100 प्रतिशत सहायक कंपनी है।[4]

रूस से सस्ती गैस की प्रचुर मात्रा में आपूर्ति को देखते हुए, जर्मनी जैसे देशों ने भी आयात विविधीकरण

या भूमिगत भंडारण क्षमता में वृद्धि नहीं की।

यूक्रेन युद्ध ने रूस को प्रतिबंधित आपूर्ति और उच्च कीमतों का दोहरा संकट पैदा करने वाली ऊर्जा को हथियार बनाने में सक्षम किया, जिसने अंततः यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों में जागृति पैदा कर दी।

जर्मन ऊर्जा परिदृश्य की यह रूसी पैठ केवल इस बात को रेखांकित करती है कि उसने कितनी मेहनत से अपनी उपस्थिति बनाई थी और जर्मन राजनीति ने सस्ती गैस का आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए किस हद तक समझौता किया था। बढ़ती ऊर्जा लागत के प्रभाव का पूरे यूरोप के आर्थिक विकास पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है, जिससे उच्च मुद्रास्फीति आई और औद्योगिक उत्पादन और उपभोक्ता मांग में कमी आई है। 2021 में, जर्मनी में, विकास दर 2.9 प्रतिशत से तेजी से गिरकर 2022 में 1.2 प्रतिशत हो गई, आईएमएफ ने मौजूदा परिस्थितियों में 2023[5] में 0.8 प्रतिशत तक और गिरावट की भविष्यवाणी की, जिसके न केवल बर्लिन के लिए बल्कि पूरे यूरोपीय संघ के लिए दूरगामी आर्थिक और राजनीतिक परिणाम होंगे क्योंकि यह आर्थिक गतिविधियों और विकास को सामूहिक रूप से कम करेगा।

नतीजतन, यूक्रेन युद्ध ने न केवल उच्च राजनीतिक क्षति पहुँचाई, बल्कि यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों को रूस पर अपनी ऊर्जा निर्भरता का प्रबंधन करने के लिए संघर्ष करना पड़ा क्योंकि उन्होंने वैकल्पिक आपूर्ति को सुरक्षित करने की मांग की ताकि आर्थिक गतिविधियों पर आपूर्ति व्यवधान के प्रभाव को कम किया जा सके और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जैसे-जैसे सर्दी शुरू होती है, घरों को गर्म करने की आवश्यकता को पूरा किया जा सके। स्पष्ट रूप से, 2014 में क्रीमिया के विलय के बाद यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों द्वारा कोई सबक नहीं सीखा गया क्योंकि रूस पर ऊर्जा निर्भरता कम होने के बजाय और बढ़ी। यूक्रेन युद्ध ने रूस को प्रतिबंधित आपूर्ति और उच्च कीमतों का दोहरा संकट पैदा करने वाली ऊर्जा को हथियार बनाने में सक्षम किया, जिसने अंततः यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों में जागृति पैदा कर दी।

यूक्रेन युद्ध और यूरोप में एक नया शरणार्थी संकट

यूक्रेन युद्ध ने आर्थिक संकट के अलावा, यूरोप में शांति के उल्लंघन और सुरक्षा व्यवस्था के विखंडन के साथ बड़े पैमाने पर मानवीय संकट उत्पन्न किया है। यूएनएचसीआर के 8 नवंबर 2022 के रिकॉर्ड के अनुसार, युद्ध ने यूक्रेन से शरणार्थियों के एक बड़े प्रवाह को विस्थापित किया और लगभग 4.7 मिलियन विस्थापित यूरोपीय संघ के देशों में फैल गए। वर्तमान समस्या की भयावहता के विपरीत, यूरोप में आने वाले दस लाख से अधिक शरणार्थियों की चरम संख्या के साथ 2015 का शरणार्थी संकट यूक्रेन से आने वाली संख्या के सामने फीका पड़ जाता है। आंतरिक रूप से और पड़ोसी देशों में समस्या के समाधान के लिए राहत उपायों की घोषणा करते हुए, 4 मार्च 2022 को, यूरोपीय संघ ने अस्थायी सुरक्षात्मक निर्देश सक्रिय किया, जो शरणार्थियों को आवास, श्रम बाजार, चिकित्सा सहायता, सामाजिक कल्याण सहायता और बच्चों के लिए शिक्षा की अनुमति देगा। इसके अलावा, मानवीय सहायता श्रेणी के अंतर्गत, यूरोपीय संघ ने यूक्रेन में युद्ध से प्रभावित लोगों की मदद के लिए 523 मिलियन यूरो का आवंटन किया है, जिसमें से लगभग 485 मिलियन यूरो यूक्रेन के लिए और 38 मिलियन यूरो मोल्दोवा के लिए है। वित्त पोषण का उद्देश्य भोजन, पानी, स्वास्थ्य सेवा और आश्रय प्रदान करना है और यूक्रेन में 113.4 मिलियन से अधिक लोग इस सहायता से लाभान्वित हुए हैं।[6] इसके अलावा, संघ यूरोपीय संघ के नागरिक सुरक्षा तंत्र के

माध्यम से यूक्रेन और पड़ोसी देशों को भौतिक सहायता भी प्रदान कर रहा है और यह अब तक का सबसे बड़ा तंत्र है। तंत्र में चिकित्सा आपूर्ति, सुरक्षात्मक कपड़े, आश्रय सामग्री, अग्निशमन उपकरण, बिजली जनरेटर, पानी पंप और चिकित्सा आपूर्ति शामिल हैं।[7]

चार्ट 1: यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के जवाब में अपनाए गए यूरोपीय संघ के कुछ उपायों और प्रतिबंधों की सूची

क्र.सं.	दिनांक	रूसी कार्रवाई	यूई कार्रवाई/प्रतिबंध	परिणाम/प्रभाव
1	23.02. 22	स्वतंत्र संस्थाओं के रूप में डोनेट्स्क और लुहांस्क की रूसी मान्यता स्वतंत्र संस्थाएं	रूस के खिलाफ प्रतिबंधों का पहला पैकेज	रूसी ड्यूमा के 351 सदस्यों और 27 व्यक्तियों के खिलाफ लक्षित प्रतिबंध दोनेत्स्क और लुहांस्क के साथ आर्थिक संबंधों पर प्रतिबंध यूरोपीय संघ की पूंजी और वित्तीय बाजारों तक रूसी पहुंच पर प्रतिबंध
2	24.02.2022	यूक्रेन पर रूसी आक्रमण	यूरोपीय संघ का विशेष शिखर सम्मेलन	प्रतिबंध लक्ष्यीकरण- वित्तीय और ऊर्जा और परिवहन क्षेत्र, दोहरे उपयोग के सामान, निर्यात नियंत्रण और वित्तपोषण, वीजा नीति, रूसी व्यक्तियों के खिलाफ प्रतिबंध।
3	25.02.22	यूक्रेन पर रूसी आक्रमण	रूस के खिलाफ प्रतिबंधों का दूसरा पैकेज	राष्ट्रपति पुतिन और विदेश मंत्री लावरोव की संपतियां फ्रीज करना राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सदस्यों और ड्यूमा के शेष सदस्यों पर प्रतिबंधात्मक उपाय
4	28.02.2022	यूक्रेन पर रूसी आक्रमण	रूस के खिलाफ प्रतिबंधों का तीसरा पैकेज	रूसी सेंट्रल बैंक के साथ लेनदेन पर प्रतिबंध। यूक्रेनी सशस्त्र बलों को वित्त उपकरण और आपूर्ति के लिए 500 मिलियन यूरो का समर्थन। रूसी विमानों पर यूरोपीय संघ के हवाई क्षेत्र और हवाई अड्डों तक पहुंचने से प्रतिबंध।

5	09.03.22	रूस को बेलारूस का समर्थन	यूरोपीय संघ ने बेलारूस के खिलाफ क्षेत्रीय उपायों की घोषणा की	वित्तीय क्षेत्र- बैंक, दोनों ओर से वित्तीय प्रवाह
6	15.03.22		रूस के खिलाफ प्रतिबंधों का चौथा पैकेज	आर्थिक और व्यक्तिगत प्रतिबंध रूसी ऊर्जा क्षेत्र में कोई नया निवेश नहीं
7	08.04.22	रूसी सशस्त्र बलों द्वारा बढ़ते अत्याचारों की रिपोर्ट	रूस के खिलाफ प्रतिबंधों का पांचवां पैकेज	रूस से कोयले और अन्य ठोस जीवाश्म ईंधन के आयात पर प्रतिबंध सभी रूसी जहाजों को यूरोपीय संघ के बंदरगाहों तक पहुंचने से रोक दिया गया है रूसी और बेलारूसी सड़क परिवहन ऑपरेटरों को यूरोपीय संघ में प्रवेश करने से रोका गया लकड़ी, सीमेंट, समुद्री भोजन और शराब जैसी अन्य वस्तुओं का आयात रोका गया रूस को अन्य सामानों का निर्यात रोका गया
8	03.06.2022	रूस द्वारा आक्रमण शुरू किए हुए 3 महीने से अधिक	रूस के खिलाफ प्रतिबंधों का छठा पैकेज	कच्चे तेल और परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध (पाइपलाइनों के माध्यम से कच्चे तेल की आपूर्ति के लिए अस्थायी छूट) अधिक रूसी और बेलारूसी बैंकों पर स्विफ्ट प्रतिबंध का विस्तार
9	26.07.2022		और छह महीने के लिए प्रतिबंधों का नवीनीकरण	वित्त, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, दोहरे उपयोग वाली वस्तुओं, उद्योग, परिवहन और विलासिता की वस्तुओं पर प्रतिबंध।
10	06.10.2022	बढ़ता युद्ध और अवैध कब्जे	नए प्रतिबंध लगाए गए	तीसरे देशों के लिए रूसी तेल के समुद्री परिवहन पर मूल्य सीमा। रूस की सैन्य और तकनीकी

			वृद्धि में योगदान करने वाली प्रतिबंधित वस्तुओं की सूची में परिवर्धन। व्यापार और सेवाओं पर और प्रतिबंध।
11	20.10.2022	रूस द्वारा यूक्रेन में विशिष्ट प्रतिबंध ईरानी ड्रोन का उपयोग	रूस को ड्रोन देने के लिए विशिष्ट ईरानियों और एक कंपनी पर प्रतिबंध

स्रोत: यूरोपीय परिषद 2022

निस्संदेह, रूस के साथ राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को पुनर्नियोजित करने के लिए यूरोपीय संघ द्वारा एक ठोस राजनीतिक प्रयास के अभाव में, इन आठ वर्षों में उसने अपने राजनीतिक व्यवहार को बदलने के बजाय क्षेत्र में यथास्थिति को

यूक्रेन में युद्ध, लक्षित प्रतिबंध और यूरोपीय संघ-रूस संबंध

बढ़ते मानवीय, आर्थिक और सुरक्षा संकट की पृष्ठभूमि में, यूरोपीय संघ को अपनी ऊर्जा निर्भरता को कम करने के लिए रूस के खिलाफ कड़ा रुख अपनाने पर मजबूर होना पड़ा और उन अरबों में कटौती करनी पड़ी जो मॉस्को के युद्ध का वित्तपोषण कर रहे थे। नीचे दिया गया चार्ट यूरोपीय संघ द्वारा अपनाए गए आर्थिक प्रतिबंधों और अन्य उपायों के प्रगतिशील विस्तार को दर्शाता है क्योंकि युद्ध अब आठ महीने से अधिक समय से जारी है। यूरोपीय संघ द्वारा अपनाए गए उपरोक्त सूचीबद्ध प्रतिबंधों में से कुछ यूक्रेन पर आक्रमण के लिए रूस के खिलाफ एक साधन के रूप में पहले लक्षित कई प्रतिक्रिया तंत्र को दर्शाता है।

दूसरा, युद्ध को समाप्त करने के लिए राष्ट्रपति पुतिन पर राजनीतिक और आर्थिक दबाव बढ़ाने के प्रयास में रूसी सरकार, व्यापार और चुनिंदा व्यक्तियों को लक्षित करने के लिए क्रमिक स्केलिंग किया गया था। तीसरा, ऊर्जा आपूर्ति पर प्रतिबंध, जो सबसे अंत में प्रभावित हुए थे, इसने स्पष्ट रूप से दिखाया कि रूस पर ऊर्जा निर्भरता ने संघ के लिए एक बड़ी भेद्यता उत्पन्न की और धीरे-धीरे आपूर्ति श्रृंखला को कम करने के लिए कदम उठाए गये।

जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ ने यूक्रेन पर आक्रमण को यूरोप के लिए एक 'ज़ीटेनवेन्डे' (युगांतरकारी बदलाव/परिवर्तन बिंदु) कहा है।

रूस द्वारा 2014 में, क्रीमिया पर कब्जा करने के बाद, यूरोपीय संघ ने प्रतिबंधित क्षेत्र विशिष्ट प्रतिबंधों की एक श्रृंखला लागू की थी जिसका उद्देश्य मास्को को अपने दावों को छोड़ने के लिए दंडित और मजबूर करना था। रूस को अपना विचार बदलने पर बाध्य करने के लिए सैन्य बल के उपयोग के बदले प्रतिबंधों को एक शक्तिशाली साधन के रूप में देखा गया। हालाँकि, इन प्रतिबंधों ने तेल, गैस और अन्य वस्तुओं के प्रमुख क्षेत्रों को लक्षित नहीं किया और इस तरह रूसी व्यवहार नहीं बदला। वास्तव में, रूस द्वारा अंतरराष्ट्रीय कानून के बड़े उल्लंघन के सामने, यूरोपीय संघ के प्रतिबंध रूस को दंडित करने और घटना को

एक विपथन के रूप में नजरअंदाज करने के आधे-अधूरे प्रयास जैसे दिखाई दिए। शायद, रूस पर आर्थिक प्रतिबंधों की प्रकृति पर सदस्य राज्यों के बीच आंतरिक कलह अधिक परेशान करने वाला तत्व था, जिसने किसी भी प्रकार की राजनीतिक सफलता मिलने से रोका और यूक्रेन समस्या को और अधिक विनाशकारी परिणामों के साथ भविष्य की तारीख में हल करने के लिए प्रेरित किया। इसमें संदेह नहीं है कि, रूस के साथ राजनीतिक और आर्थिक संबंधों पर पुनर्विचार करने के लिए यूरोपीय संघ द्वारा एक ठोस राजनीतिक प्रयास न किए जाने से, उसने इन आठ वर्षों में अपने राजनीतिक व्यवहार को बदलने के बजाय क्षेत्र में यथास्थिति को चुनौती देने की मॉस्को की महत्वाकांक्षाओं को मजबूत किया। इसके अलावा, इसने अपने अन्य द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करके व्यापार क्षेत्र में एक खिलाड़ी बने रहने के लिए कुछ मजबूत आर्थिक तंत्र भी विकसित किए ताकि प्रतिबंधों से उत्पन्न बाधाओं को दूर किया जा सके। प्रतिबंधों से संबंधित विशाल साहित्य से पता चलता है कि यह राजनीतिक व्यवहार को बदलने में एक बहुत प्रभावी उपकरण नहीं है और ऐसा तब और अधिक होता है जब निरंकुशता से निपटते हैं, जैसा कि यूरोपीय संघ-रूस संबंधों में स्पष्ट रूप से होता है।[8]

आर्थिक प्रतिबंध लगाने का यूरोपीय संघ पर प्रभाव पड़ा है और इसका प्रभाव दोनों पक्षों पर महसूस किया गया है। कई मायनों में, यूरोपीय संघ की अनिच्छा ने विभिन्न राजनीतिक और आर्थिक कारणों से रूस और अमेरिका पर उच्च ऊर्जा निर्भरता के कारण एक देश की क्षेत्रीय संप्रभुता के उल्लंघन को देखते हुए अधिक निश्चित कार्रवाई न करने को स्पष्ट रूप से मानदंडों और मूल्यों पर वास्तविक राजनीति की जीत दिखाया। यूरोपीय संघ निश्चित रूप से अपने आर्थिक हितों को उन मानदंडों से ऊपर रखता है जो उसने हमेशा व्यक्त किए और वास्तव में अपनी ऊर्जा आपूर्ति में विविधता लाने और 2014 में क्रीमिया के विलय के बाद से रूसी तेल और गैस पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए न्यूनतम पहल की। पिछले आठ वर्षों में यूक्रेन युद्ध के फैलने तक, नॉर्ड स्ट्रीम-II का निर्माण बेरोकटोक जारी रहा, जो स्पष्ट रूप से यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों की राजनीतिक प्राथमिकताओं को इंगित करता है कि अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन के बजाय ऊर्जा सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

यूक्रेन में युद्ध का सबसे बड़ा प्रभाव यूरोपीय संघ-अमेरिका संबंधों को फिर से स्थापित करना और ट्रान्साटलांटिक साझेदारी को मजबूत करना रहा है।

यूरोपीय संघ के लिए भू-राजनीतिक चेतावनी

जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ ने यूक्रेन पर आक्रमण को यूरोप के लिए एक 'ज़ीटेनवेन्डे' (युग परिवर्तन/संक्रमण बिंदु) कहा है।[9] जर्मन विदेश नीति के पारंपरिक रूप से पालन किए गए क्रम और सैन्य रूप से संलग्न होने की अनिच्छा से एक कठिन विराम में, इसने घोषणा की है सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण के लिए 100 बिलियन यूरो का एक विशेष कोष बनाकर एक प्रमुख स्केलिंग और नाटो में सहमति के अनुसार अपने रक्षा बजट को 2 प्रतिशत जीडीपी तक बढ़ाएगा, क्योंकि जर्मनी अपनी विदेश और सुरक्षा नीति को 1990 में शीत युद्ध की समाप्ति के बाद यूरोपीय महाद्वीप पर सबसे बड़े व्यवधान के अनुकूल बनाने की कोशिश करता है। एक असमंजस वाले दृष्टिकोण और अपनी नीति की प्रमुख आलोचना के बाद, जर्मनी भी यूक्रेन को हथियार प्रदान करने, मास्को के खिलाफ प्रतिबंधों का समर्थन करने और रूस पर ऊर्जा निर्भरता को कम करने के लिए सहमत हो गया। इनमें से कोई भी सोशल डेमोक्रेट्स (एसपीडी), ग्रीन्स और चांसलर शोल्ज़ के नेतृत्व वाली लिबरल पार्टी (एफडीपी) के गठबंधन के लिए आसान काम नहीं

रहा है।

वास्तव में, रूस के साथ इसके संबंध 1970 के दशक के 'ओस्टपोलिटिक' और एसपीडी द्वारा दिए गए 'वांडेलडर्च हैंडेल' (व्यापार के माध्यम से परिवर्तन) के नारे से काफी प्रभावित थे। सोवियत संघ में प्राकृतिक गैस का विकास और भौतिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकताओं-गैस को उत्पादक से उपभोक्ता तक ले जाने के लिए पाइपों का एक नेटवर्क, पश्चिमी यूरोप, विशेष रूप से जर्मनी के साथ एक नया समीकरण लाया, जो इस तरह की स्टील पाइपों का उत्पादन करनेवाला एकमात्र देश है। और इस तरह तनावमुक्ति और सहयोग की अवधि का प्रतीक, 'गैस ब्रिज' का उदय हुआ-जो शीत युद्ध के दौरान दो अलग-अलग राजनीतिक प्रणालियों को जोड़ने वाले एक सौम्य ऊर्जा पुल में बदल गया, जो बढ़ते पर्यावरणवाद के साथ जांच के दायरे में आ गया और अंत में क्षेत्र की भू-राजनीति में बदलाव और यूरोपीय संघ और रूस के बीच हितों का विचलन से सुरक्षा जांच के अधीन हो गया।[10] पश्चिम और विशेष रूप से, यूरोपीय संघ में जर्मनी ने आशा की थी कि मॉस्को के साथ मजबूत व्यापारिक संबंध होने से भी आदर्श का प्रसार होगा और रूस को एक राजनीतिक अभिनेता के रूप में बदल देगा और आंतरिक रूप से इसे और अधिक लोकतंत्र अपनाने के लिए प्रेरित करेगा। हालाँकि, पिछले दो दशकों में आक्रामक विदेश नीति के साथ-साथ रूस में ऊर्जा के शस्त्रीकरण, बढ़ते अधिनायकवाद ने यूरोपीय संघ की ऐसी नीति की सीमाओं को उजागर किया है, जो इसे एक नए भू-राजनीतिक ढांचे के भीतर व्यवधान का जवाब देने के लिए मजबूर करती है।

यूक्रेन युद्ध के कारण, यूरोप के बदलते भू-राजनीतिक क्षेत्र में सैन्य शक्ति का महत्व एक शानदार स्पष्टता के साथ वापस लौटा है।

आक्रमण के बाद पहले दो हफ्तों में विदेश मामलों और सुरक्षा नीति के उच्च प्रतिनिधि जोसेफ बोरेल ने कहा कि यूरोपीय संघ को "यूरोपीय आर्थिक लचीलापन बढ़ाने, रूस पर हमारी ऊर्जा निर्भरता समाप्त करने और यूरोपीय रक्षा को और मजबूत करने" की आवश्यकता है।[11]

हालाँकि, रूस से ऊर्जा आपूर्ति के विभिन्न स्तरों को देखते हुए और दूसरी ओर, नीतियों में आंतरिक मतभेदों के कारण, यूरोपीय संघ की व्यापक सहमति बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है, यूरोपीय संघ -अमेरिका के संबंधों को पुनर्नियोजित करना और ट्रांसअटलांटिक साझेदारी को मजबूत करना यूक्रेन में युद्ध का सबसे बड़ा प्रभाव रहा है। यूरोप में युद्ध एक और बड़े विकास, अमेरिका-चीन के बीच बढ़ते टकराव की पृष्ठभूमि में आया है, इसने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की एक जटिल शतरंज की बिसात तैयार की है। यहां तक कि यूक्रेन में युद्ध जारी रहने के बावजूद, अमेरीका की हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी की ताइवान यात्रा के बाद ताइवान स्ट्रेट में तनाव बढ़ गया था। चीन ने 'एक चीन' नीति की कड़ी चेतावनी जारी की और यात्रा के बाद द्वीप के चारों ओर सैन्य अभ्यास किया और अमेरिका के साथ आधिकारिक सैन्य वार्ता रद्द कर दी। यूक्रेन पर आक्रमण के लिए रूस को चीन द्वारा भारी समर्थन के बाद अमेरिका-चीन संबंधों में तनाव और बढ़ गया है। दूसरी तरफ इसने यूरोपीय संघ-चीन संबंधों पर भी एक गहरी छाया डाली है, जिसने देश को 'सहयोग का भागीदार, एक आर्थिक प्रतियोगी और एक प्रणालीगत प्रतिद्वंद्वी' कहा है।[12]

फोर्सबर्ग और हौक्कला ने यूरोपीय संघ-रूस संबंधों को "साझेदारी जो विफल रही" के रूप में वर्णित किया है और 2014 में क्रीमिया का विलय संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ है, जो एक ऐसा बिंदु बनाता है, जहाँ से वापसी संभव नहीं है।[13] उनका दावा है कि रूस के प्रति यूरोपीय संघ की नीतियां इसकी विश्वसनीयता और बाहरी संबंधों के लिए एक लिटमस टेस्ट हैं और इस संबंध ने इसकी "एक सुसंगत नीति

बनाने और इसे लागू करने की क्षमता, या अक्षमता" को उजागर किया है।[14] यह दावा किया जा सकता है कि यही विश्लेषण चीन पर भी लागू होता है, जिसके साथ यूरोपीय संघ के भी जटिल संबंध हैं।
युद्ध आरंभ होने के बाद यूरोपीय संघ की विदेश नीति ने कूटनीति की सीमा और सीमाओं से परे संघर्ष और संकट में प्रतिक्रिया करने के लिए संकट प्रबंधन क्षमता की कमजोरी को प्रकट किया।

रूसी कार्रवाई ने केवल यूरोपीय सहयोग को ही प्रेरित नहीं किया है, बल्कि इसने ट्रम्प प्रेसीडेंसी द्वारा फैलाए गए ट्रान्साटलांटिक बहाव को भी रोक दिया है।

यूक्रेन युद्ध के कारण, यूरोप के बदलते भू-राजनीतिक क्षेत्र में सैन्य शक्ति का महत्व एक शानदार स्पष्टता के साथ वापस लौटा है। यूरोपीय संघ के पास अपनी रक्षा के लिए किसी भी सैन्य बुनियादी ढांचे की कमी के कारण, सदस्य राज्यों ने हथियारों के लिए यूक्रेन के आह्वान का जवाब दिया और अंत में नाटो ने रूसी खतरे को संतुलित करने और अपने सदस्यों की रक्षा और सुरक्षा के बारे में एक संस्था के रूप में इसे दोहराया। यूक्रेन पर रूसी हमले ने न केवल यूरोप के सुरक्षा परिदृश्य को नष्ट कर दिया, बल्कि इसने नई कमजोरियां और दोष भी उत्पन्न किये, जिससे 2020 में पहली बार व्यापक खतरे के विश्लेषण और युद्ध के फैलने के बाद, यूरोपीय संघ को 24 मार्च 2022 को एक महीने के लिए 'सुरक्षा और रक्षा के लिए रणनीतिक कम्पास' के अनावरण और उसे अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ा।

यूरोप में युद्ध की वापसी के झटके को रूस द्वारा "विशेष सैन्य अभियान" कहा गया, यह उस दस्तावेज़ की पृष्ठभूमि थी जिसने यूरोपीय संघ के एक मजबूत और अधिक सक्षम सुरक्षा और रक्षा अभिनेता बनने के संकल्प को दृढ़ किया। रणनीतिक कम्पास को संघ के लिए प्रमुख राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा प्रभाव वाले विदेश नीति के सबसे बड़े खतरे के सामने ठोस सामूहिक कार्रवाई, एकजुटता और नेतृत्व पर ध्यान केंद्रित करने के इरादे के दस्तावेज़ के रूप में पढ़ा जा सकता है।रणनीतिक कम्पास कहता है कि 'रूस की आक्रामकता का युद्ध यूरोपीय इतिहास में एक विवर्तनिक बदलाव का गठन करता है' (यूरोपीय परिषद 2022 सी)। यह बयान स्पष्ट रूप से दिखाता है कि 2014 में क्रीमिया को रूस द्वारा हड़प लिये जाने पर, यूरोप के लोगों ने अंतर्राष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के पहले ज़बरदस्त उल्लंघन को कैसे नज़रअंदाज़ कर दिया, जो यूरोप में अंतरराज्यीय युद्ध के रूप में पारंपरिक सुरक्षा खतरे की वापसी की प्रतीक्षा कर रहा था जिसने एक बहुआयामी कार्रवाई करने पर मजबूर किया। 2022 में यूक्रेन पर रूसी आक्रमण होने से पहले आठ वर्ष तक रूस के साथ अपने आर्थिक हितों और ऊर्जा संबंधों को प्राथमिकता देने के तरीके में यूरोपीय संघ की कथनी और करनी में अंतर दिखाई दे रहा था।

युद्ध के बाद, अमेरिका के साथ, यूरोपीय संघ ने यूक्रेन को प्रतिबंधों और सैन्य और मानवीय समर्थन का एक दोहरा तंत्र अपनाया, जो युद्ध के ज्वार को मोड़ने में सहायक रहा है और मॉस्को को कई क्षेत्रों में रक्षात्मक बना दिया है। ऊर्जा निर्भरता ने एक भेद्यता उत्पन्न की, जिसका रूस द्वारा तेल और गैस के शस्त्रीकरण के माध्यम से शोषण किया जा सकता है और यूरोपीय संघ और सदस्य राज्यों ने रूस के साथ इस समीकरण को अलग करने की मांग की है। साथ ही, यूरोपीय संघ ने यूक्रेन की सदस्यता के अनुरोध का भी जवाब दिया।

यूक्रेन के राजनीतिक भाग्य को बदलने की मांग करने वाले युद्ध की शुरुआत के चार महीने बाद, यूरोपीय संसद ने 23 जून 2022 को यूक्रेन को यूरोपीय संघ की सदस्यता के लिए तत्काल उम्मीदवार का दर्जा देने के लिए एक प्रस्ताव को अपनाया, जिसे यूरोपीय परिषद ने भी स्वीकार कर लिया था। यह मॉस्को के लिए

भी एक स्पष्ट संकेत था कि यूक्रेन उसके प्रभाव क्षेत्र से बाहर जा रहा है और ब्रसेल्स के साथ संबंधों के एक विशेषाधिकार प्राप्त स्थान में प्रवेश करेगा। हालाँकि, सदस्यता प्रक्रिया में वर्षों लगेंगे और परिग्रहण प्रक्रिया पूरी होने तक कोई सुरक्षा गारंटी प्रदान नहीं की जाती है, फिर भी, यूक्रेन के अनुरोध पर सहमति जताते हुए, यूरोपीय संघ ने खुद को रूस के साथ अधिक टकराव के रास्ते पर डाल दिया था जो वर्तमान परिस्थितियों के बने रहने तक वापसी का मार्ग न होने के बिंदु को संकेतित करता है।

एक जनमत संग्रह के बाद पुतिन द्वारा चार यूक्रेनी प्रांतों के विलय की घोषणा की पृष्ठभूमि में, राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की ने आधिकारिक तौर पर नाटो सदस्यता के लिए आवेदन किया। नाटो महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने संकेत दिया कि "यूरोप में हर लोकतंत्र को नाटो की सदस्यता के लिए आवेदन करने का अधिकार है", लेकिन उन्होंने यूक्रेनी आवेदन पर कोई टिप्पणी नहीं की, जिसके लिए सभी 30 सदस्यों की एकमत स्वीकृति की आवश्यकता होगी। यूक्रेन में युद्ध, आक्रमण के विरोध में खड़े होने के लिए विविध सदस्य राज्यकों के हितों को एक साथ लाने का एक शक्तिशाली कारक रहा है। एक विलक्षण कदम में, रूसी कार्रवाई ने न केवल यूरोपीय सहयोग को प्रेरित किया है, बल्कि ट्रम्प प्रेसीडेंसी द्वारा फैलाए गए ट्रान्साटलांटिक बहाव को भी रोक दिया है और मॉस्को के खिलाफ अधिक ठोस तरीके से जवाब देने के लिए साझेदारी को बहाल किया है, जिससे क्षेत्रीय और विश्व स्तर पर एक मजबूत संकेत भेजा गया है।
वर्ष 2014 में क्रीमिया का विलय मॉस्को के भू-राजनीतिक इरादों की चेतावनी थी जिसे यूरोपीय संघ और अमेरिका दोनों ने कम करके आंका और उसकी अवहेलना की।

यूक्रेन में युद्ध ने क्षेत्र की एक नई राजनीतिक पुनर्परिभाषा के साथ मौजूदा यथास्थिति को बदलने की मांग की।

रूस को लंबे समय तक पश्चिम द्वारा पतनशील शक्ति माना जाता था और इस प्रकार क्रीमिया का विलय एक चेतावनी थी जिसे यूरोपीय संघ और अमेरिका ने नजरअंदाज कर दिया था।इसके अलावा, एक प्रतिबंध व्यवस्था को मॉस्को का मुकाबला करने और शक्ति और महत्वाकांक्षा के किसी भी प्रदर्शन को रोकने के लिए पर्याप्त मजबूत निवारक माना जाता था। कुछ मायनों में, अपने कार्यों के कारण होने वाले दीर्घकालिक व्यवधानों की तुलना में अल्पकालिक लाभ के लिए रूस के इरादों का अनुमान गलत सिद्ध हुआ था।

निष्कर्ष

फरवरी 2022 में यूक्रेन पर आक्रमण ने न केवल कोविड की पृष्ठभूमि में यूरोप में सबसे बड़ा राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा व्यवधान उत्पन्न किया, बल्कि रूस के साथ यूरोपीय संघ के सबसे महत्वपूर्ण संबंधों में से एक को मौलिक रूप से चुनौती भी दी। क्रीमिया के विलय के आठ वर्ष बाद, यूरोपीय संघ और उसके सदस्य राज्य यूरोप में अंतर्राज्यीय युद्ध की वापसी के लिए तैयार नहीं थे। उभरती भू-राजनीतिक वास्तविकता के अनुकूलन, 'सत्ता की राजनीति की वापसी' (यूरोपीय परिषद 2022सी: 5) ब्रुसेल्स में नई बात बन गई है और नीति परिवर्तन की गति और जमीन पर क्षमता के बीच के अंतर ने यूरोपीय संघ के लिए और अधिक अनिश्चितताएं उत्पन्न की हैं।

यूक्रेन में युद्ध ने, क्षेत्र की एक नई राजनीतिक पुनर्परिभाषा के साथ मौजूदा यथास्थिति को बदलने की मांग की। पुतिन ने शायद सैन्य कार्रवाई की शुरुआत में दो महत्वपूर्ण कारकों को कम करके आंका, पहला, अमेरिका और यूरोपीय संघ से यूक्रेन को मजबूत और अटूट राजनीतिक समर्थन, यहां तक कि अपने लिए

जबरदस्त कीमत पर, क्योंकि ऊर्जा का विघटन हो रहा है और दूसरा, एक बड़ी सेना के खिलाफ युद्ध लड़ने के लिए राजनीतिक नेतृत्व और यूक्रेन के लोगों के दृढ़ संकल्प।

क्षेत्रीय स्तर पर, पिछले आठ महीनों के विकास ने यूरोपीय संघ को एक पक्ष के रूप में आगे बढ़ने और अधिक सुसंगत प्रतिक्रिया करने के लिए बाध्य किया है, भले ही युद्ध का प्रभाव उनकी आंतरिक और बाहरी राजनीति को नया रूप दे रहा हो, आर्थिक व्यवधान पैदा कर रहा हो और सुरक्षा दुविधा बढ़ रही हो। यदि 2014 में भू-राजनीति की वापसी के बारे में कोई संदेह था, तो 2022 में यूक्रेन के आक्रमण के साथ वह स्पष्ट रूप से दूर हो गया था। यूरोप में 1957 से राजनीतिक एकीकरण का एक अलग रोड मैप बनाने के लिए विकसित की गई क्षेत्रीय रक्षा की वापसी को क्षेत्र की रक्षा के लिए विदेश नीति में पहले सिद्धांत पर लौटने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यूरोपीय संघ एक युद्ध प्रभावित महाद्वीप को संचालित करने की कोशिश कर रहा है, शांति, स्थिरता और सुरक्षा को संघर्ष, व्यवधान और असुरक्षा में बदल दिया गया है जिससे भविष्य बहुत अनिश्चित हो गया है और एक अन्योन्याश्रित दुनिया में सुरक्षा पर फिर से बातचीत करने की अभूतपूर्व चुनौतियां आ रही हैं।

पाद-टिप्पणीयाँ

[1]निशा गैंड व अन्य, "सेवेन वेज द वार इन यूक्रेन इज चैंजिंग ग्लोबल साइंस", नेचर, 20 जुलाई 2022, https://www.nature.com/articles/d41586-022-01960-0; जेफरी मैनकॉफ़, "रशियाज वार इन यूक्रेन:आइडेंटिटी, हिस्ट्री एंड कॉन्फ्लिक्ट", सामरिक और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केंद्र, (अप्रैल 2022),, https://csis-website-prod. s3.amazonaws.com/s3fspublic/publication/220422_Mankoff_Russiawar_Ukraine.pdf?tGhbfT.eyo9DdEsYZPaTWbTZ UtGz9o2_; स्वेन स्मिट एट अल।, "वार इन यूक्रेन:लाइव्स एंड लाइवलीहुड्स, लास्ट एंड डिस्प्टेड", मैकिन्से एंड कंपनी, 17 मार्च, 2022, https://www.mckinsey.com/business-functions/strategy-एंड-corporate-finance/our-insights/war-in-ukraine-lives-and-livelihoods-lost-and-disrupted

[2]सी, टोड लोपेज़, "यू.एस. कमिटमेंट टू इंडो-पैसिफिक नॉट लिमिटेड बाय सिक्योरिटी असिस्टेंस टू यूक्रेन", डीओडी न्यूज, 19 मई, 2022,https://www.defense.gov/news/news-Stories/Article/Article/3037989/us-commitment-to-indo-pacific-region-not-limited-by-sicority-assistance-to-ukra/

[3]बेंजामिन डोडमैन, "मोल्दोवा, देन जॉर्जिया, नाउ यूक्रेन: हाऊ रशिया ब्यूल्ट 'ब्रिजहेड्स इनटू पोस्ट सोवियत स्पेस", फ्रांस 24, 22 फरवरी 2022, https:// a n d www.france24.com/en/europe/20220222-moldova-then-georgia-now-ukraine-how-russia-built-bridgeheads-into-post-soviet-space; अलेक्जेंडर कूली, "कजाकिस्तान काल्ड फॉर असिस्टेंस। हवाई डिड रशिया डिस्पैच ट्प्स सो क्विकली?", द वाशिंगटन पोस्ट, 9 जनवरी, 2022, https://www.washingtonpost.com/ politics/2022/01/09/kazakhstan-called-assistance-why-did-russia-dispatch-troops-so-quickly/

[4]रिक स्कॉट, "टू ऑनर शिजो आबे, वी मस्ट कंटीन्यू हिज विज़न फॉर ईस्ट एशिया", *द हिल*, 21 जुलाई, 2022, https://thehill.com/opinion/congress-blog/3569180-to-honor-shinzo-abe-we-must-continue-his-vision-for-east-asia/; मार्क एस. कोगन एवं पॉल डी. स्कॉट, "डेमोक्रेसी प्रमोशन इनइंडो-पैसिफ़िक: प्रीलूड टू अ 'बाइडेन डॉक्ट्रिन'?", *द डिप्लोमेट*, 02 दिसंबर, 2021, https://thediplomat.com/2021/12/democracy-promotion-in-the-indo-pacific-prelude-to-a-biden-doctrine/; एलिस लैबॉट, "व्हेन द व्हाइट हाउस चेंज्ड हैंड्स, इट चेंज्ड टोन बट नॉट पॉलिसीज", *फॉरेन पॉलिसी*, 22 सितंबर, 2022, https://foreignpolicy.com/2021/09/22/biden-us-policy-trump-legacy-foreign-policy-aukus/

[5]विलियम आर थॉम्पसन, अमेरिकन ग्लोबल *प्री-एमिनेंस: द डिवेलपमेंट एंड इरोशन ऑफ सिस्टमेटिक लीडरशिप*, (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2022); पृष्ठ117- 119; मीरा रैप हॉपर, शिल्ड्स ऑफ द रिपब्लिक: *द ट्रम्प एंड पेरिल ऑफ अमेरिकाज इलायंस*, (कैम्ब्रिज, मॉस: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020), पृष्ठ 234-236; यान जुटांग, लीडरशिप एंड द राइज *ऑफ ग्रेट पावर्स*, (प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस,2020), पृष्ठ 23-24.

[6]पीटर विगो जैकबसन, "न्यू थ्रेट्स टू यूरोपियन सिक्योरिटी", डेविड जे गालब्रेथ, जॉक्लिन मॉडस्ले और लौरा चैपल (संपा.), *कंटेम्परेरी यूरोपियन* सिक्योरिटी, (लंदन: टेलर एंड फ्रांसिस, 2019), पृ. 132; चार्ल्स क्रुपनिक, "नॉट हवाट दे वांटेड: अमेरिकन पॉलिसी एंड द यूरोपियन सिक्योरिटी एंड डिफेंस आइडेंटिटी", एलेक्जेंडर मोएन्स एंड क्रिस्ट्रोफर एंस्टिस (संपा.) में, *डिस्कंसर्टेड यूरोप: द सर्च फॉर अ न्यू सिक्योरिटी आर्किटेक्चर*, (न्यूयार्क: रूटलेज़, 2018) पृ 81.

[7]एलेक्स किंग्सबरी, "नाटो एक्सपेंशन, काम्प्लीमेंट्स आफ मिस्टर पुतिन", *द न्यूयार्क टाइम्स,* 29 जून, 2022, https://www.nytimes.com/2022/06/29/opinion/nato-expansion-putin.html; टेड गैलेन कारपेंटर, "मेनी प्रेडिक्टेड नाटो एक्सपेंशन वुड लीड टू वार. दोज वार्निंग्स वेयर इग्नोर्ड", *द गार्जियन* (लंदन), 28 फरवरी 2022, https://www.theguardian.com/commentisfree/2022/feb/28/nato-expansion-war-russia-ukraine; साइमन स्वीनी, "हैज नाटो एंड ईयू एक्सपेंशन प्रोवोक्ड द कान्फ्लिक्ट इन यूक्रेन?", *यूके इन अ चेंजिंग यूरोप,* 2 मार्च 2022, https://ukandeu.ac.uk/has-nato-and-eu-expansion-provoked-the- conflict-in-ukraine/

[8]अल्बर्टो नार्डेली एंड माइकल नीनाबेर, "जर्मनी वेजेस स्नबिंग इंडिया ऐजजी-7 गेस्ट ओवर रशिया स्टेन्स", *ब्लूमबर्ग,* 12 अप्रैल 2022, https://www.bloomberg.com/news/articles/2022-04-12/germany-may-snub-india-as-g-7-guest-over-russia-stance#xj4y7vzkg; CFR.org. संपा., "हवेयर इज द जी7 हेडेड?" (न्यूयार्क: काउंसिल फॉर फॉरेन रिलेशन्स), 28 जून, 2022, https://www.cfr.org/backgrounder/where-g7-headed

[9]अंकित पांडा एंड कैथरीन पज, "नाटोज मैड्रिड समिट एंड द इंटरलिंकेज बिटवीन यूरोपियन एंड एशियन सिक्योरिटी", *द डिप्लोमेट,* 29 जून, 2022, https:// thediplomat.com/2022/06/natos-madrid-summit-and-the-interlinkages-between-european-and-asian-security/

[10]मिर्ना गैलिक, "डिस्पाइट यूक्रेन फोकस, एशिया-पासिफिक टू प्ले प्रॉमिनेंट रोल एट नाटो समिट", *यूनाइटेड स्टेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ पीस,* 27जून, 2022, https://www.usip.org/publications/2022/06/despite-ukraine-focus-asia-pacific-play-prominent-role-nato-summit

[11]स्वर्ण सिंह, "कैन यूएस-लीड आईपीईएफ आउटशाइन आरसीईपी आर सीपीटीपीपी?", *एशिया टाइम्स* (हांगकांग), 27 मई, 2022, https://asiatimes.com/2022/05/can-us-led-ipef-outshine-rcep-or-cptpp/

[12]ईशान थरूर, "रशिया बिकम्स चाइनाज जूनियर पार्टनर", *द वाशिंगटन पोस्ट,* 12 अगस्त, 2022, https://www.washingtonpost.com/world/2022/08/12/china-russia-power-imbalance-putin-xi-junior-partner/

[13]अमांडा कोनोली, "चाइना विल नॉट टू बी अलाउड टू 'आइसोलेट' ताइवाल, पेलोसी सेज", *ग्लोबल न्यूज,* 10 अगस्त, 2022, https://globalnews.ca/news/9050553/china-taiwan-isolation-nancy-pelosi/

[14]विलियम टी. टो, "रिबैलेन्सिंग एंड आर्डर बिल्डिंग: स्ट्रेटेजी आर इल्यूशन?", विलियम टी. टो और डगलस स्टुअर्ट (संपा.) में, *द न्यू यूएस स्ट्रटेजी टूवर्ड्स एशिया: एडॉप्टिंग टू द अमेरिकन पिवोट,* (न्यूयार्क: रूटलेज़, 2015), पृ.39.

[15]एश्ली टाउनशेंड, सुसान पैटन, टॉम कार्बेन और टाबी वार्डन, *करेक्टिंग द कोर्स: हाऊ द बाइडेन एडमिनिस्ट्रेशन शुड कम्पीट फॉर इन्फ्लुयेन्स इन द इंडो-पैसिफिक,* (संयुक्त राज्य अध्ययन केंद्र, यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी, अगस्त 2021), पृ. 3.

[16]मुथैया अलगप्पा, "यू.एस.-आसियान सिक्योरिटी रिलेशन्स: चालेंजेज एंड प्रॉस्पेक्ट्स", *कंटेम्परेरी साउथईस्ट एशिया,* (सिंगापुर), संस्करण.11, सं. (जून 1989), पृष्ठ., 35.

[17]कुनिको असिजावा, *जापान, द यूएस, एंड रिजनल इंस्टीट्यूशन-बिल्डिंग इन द न्यू एशिया,* (न्यूयार्क: पालग्रेव मैकमिलन, 2013), देखें अध्याय 4: "द यूनाइटेड स्टेट्स एंड द क्रिएशन ऑफ एपीईसी: ग्लोबल हेगमन एंड रिजनल कोऑपरेशन, 198801989", पृष्ठ 81-83.

[18]रूप के ज्योति बोरा, *द स्ट्रेटेजिक रिलेशन्स बीटवीन इंडिया, द यूनाइटेड स्टेट्स एंड जापान इन द इंडो-पैसिफिक,* (सिंगापुर: वर्ल्ड साइंटिफिक, 2022), पृष्ठ3-4.

[19]द हवाइट हाऊस, *नेशनल सिक्योरिटी स्ट्रेटेजी ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स,* द्संबर 2017, https://trumpwhitehouse.archives.gov/wp-content/uploads/2017/12/NSS-Final-12-18-2017-0905.pdf, पृष्ठ45-46.

[20]डेविड स्कॉट, "यूएस स्ट्रेटेजिक री-पोजिशनिंग टू द "इंडो-पैसिफिक", ऐश रॉजिस्टर एंड ब्रेन्डन जे. केनन (संपा.) में, कान्फ्लिक्ट एंड कोऑपरेशन इन द इंडो-पैसिफिक:न्यू जियोपॉलिटिकल रियलिटीज, (न्यूयार्क: रूटलेज़, 2020), पृ. 81.

[21]बीबीसी, "लियॉन पेनेटा: *यूएस* टू डिप्लॉय 60% ऑफ नेवी फ्लीट टू पैसिफिक", *बीबीसी न्यूज,* 2 जून 2012, https://www.bbc.com/news/world-us-canada-18305750

[22]मार्किन ग्राबोस्की, "जो बाइडेन्स स्ट्रेटेजी इन इंडो-पैसिफिक रिजन: चेंज आर कांटिन्यूटी, अ कम्परेटिव अनालिसिस", *पॉलिश पॉलिटिकल साइंस ईयरबुक,* संस्करण. 50 (2021), पृ. 87.

[23]हर्ष वी पंत एंड कशिश परपलानी, *अमेरिका एंड द इंडो-पैसिफिक: ट्रम्प एंड बियांड,* (न्यूयार्क: रूटलेज़, 2021), पृ.4.

[24]स्टेला क्वी एंड रयान वू, "फैक्टबॉक्स: हैज चाइनाज 16 ट्रिलियन इकोनॉमी फुली रिकवर्ड?", रायटर्स,16 अप्रैल, 2021, https://www.reuters.com/world/china/has-chinas-16-trillion-economy-fully-recovered-2021-04-16/

[25]लियु डिंगडिंग, "चाइना टू बी 'स्टेबलाइजर' ऑफ ग्लोबली इकोनॉमी इन 2022", *ग्लोबल टाइम्स* (बीजिंग), 6 मार्च, 2022, https://www.globaltimes.cn/page/202203/1254130.shtml

[26]फ्रैंक गार्डनर, "यूक्रेन क्राइसिस: फाइव रिजन्स ह्वाई पुतिन माइट नॉट इनवेड", *बीबीसी न्यूज*, 21 फरवरी 2022, https://www.bbc.com/ news/world-यूरोप-60468264; हर्लन अल्मान, "ह्वाई पुतिन बुड नॉट इनवेड यूक्रेन", *न्यू अटलांटिसिस्ट* (*अटलांटिक* काउंसिल, वाशिंगटन डीसी), 16 फरवरी, 2022, https://www.atlanticcouncil.org/blogs/ news -atlanticist/why-putin-wont-invade-ukraine/; रैचल पैनेट, रोबिन डिक्सन, ब्रिटनी शमाज एंड मारिया लुइसा पॉल, "पुतिन आर्डर्स ट्रूप्स टू सेपरेटिस्ट रिजन्स ऑफ यूक्रेन, क्रेमलिन अटैक्ड एट यू.एन. मीटिंग", *द वाशिंगटन पोस्ट*, 21फरवरी , 2022, https://www.washingtonpost.com/world/2022/02/21/russia-ukraine-updates

[27]इवा क्रुवोस्का एंड अल्बर्ट बम्ब्रिला, यूरोपियन एनर्जी जाएंट्स सेट टू कीप बाइंग रशियन गैस", *अल जजीरा*, 17 मई 2022, https://www.aljazeera.com/ economy/2022/5/17/european-energy-giants-set-to-keep-buying-russian-gas; हेनरी गिज़वेल, "डिस्पाइट सैंक्शन्स, यूरोप कंटिन्यूज टू बैंकरोल्स रशिया फॉर गैस, ऑयल", *भ्वॉयस ऑफ अमेरिका*, 1 मार्च, 2022, https://www.voanews.com/a/despite-sanctions-europe-continues-to-bankroll-russia-for-gas-oil/6465223.html

[28]रायटर्स, "रशिया विल वन्स अगेन शट ऑफ यूरोप'स गैस वाया नॉर्ड स्ट्रीम पाइपलाइन", *CNN Business*, August 19, 2022, https://www.cnn.com/2022/08/19/energy/ nord-stream-1-shutdown-gazprom/index.html; एल्वायज बैरी, "यूरोप रेलीस आन रशियन गैस। अ टफ विंटर लाइज अहेड अमिड फियर्स ऑफ अ कट-ऑफ", *टाइम*, 26 जुलाई, 2022, https://time.com/6200523/europe-russia-gas-future/

[29]एंड्रयू ए. मिच्टा, "नाटो इज एन अलायंस डिवाइडेड", *वाल स्ट्रीट जनरल*, 6 जुलाई, 2022, https://www.wsj.com/articles/nato-is-an-alliance-divided-11625608606; अल्बर्ट नार्डेली, माइकल नीनाबेर, एंड सैमी एडघरनी, "नाटो अलाइज आर स्पिल्ट ऑन ह्वेयर दे शुड टॉक टू पुतिन", *ब्लूमबर्ग*, 28 मार्च 2022, https://www. bloomberg.com/news/articles/2022-03-28/nato-allies-are-split-on-whether-they-should-talk-to-putin

[30]डोमिनिक फ्रेजर, "एन एलाइनमेंट विथ लिमिट्स: नाटो एंड इट्स पार्टनर्स इन द इंडो-पैसिफिक", एशिया सोसाइटी (मेलबोर्न) 7 जुलाई, 2022, https://asiasociety.org/ australia/alignment-limits-nato-and-its-partners-indo-pacific

[31]ह्वाइट हाउस, "ज्वॉयंट स्टेटमेंट बाय द जी7 अनाउंसिंग फरदर इकोनॉमिक कॉस्ट ऑन रशिया, 11 मार्च, 2022, https://www.whitehouse.gov/briefing-room/ Statement-releases/2022/03/11/joint-statement -by-the-g7-announcing-further-economic-costs-on-russia/; एंड्रयू मैकलायड, "यूक्रेन इनवेशन: शुड रशिया लूज इट्स सीट ऑन द यूएन सिक्योरिटी काउंसिल?", (लंदन: किंग्स कॉलेज लंदन), 25 फरवरी 2022, https://www.kcl.ac.uk/ukraine-invasion-should-russia- lose-its-seat-on-the-un-security-council

[32]क्रिस ज्यूअर्स, "यूनाइटेड नेशन्स वोट्स टू सस्पेंड रशिया फ्रॉम ह्यूमन राइट्स काउंसिल – बट चाइना एंड सीरिया वोट अगेंस्ट द मोशन, विद इंडिया एबसेंटिंग", *डेली मेल* (लंदन), 7 अप्रैल 2022,https:/www.dailymail.co.uk/news/article -10695827/G7 -calls-Russia-suspended-UNs-human-rights-body-atrocities-Ukraine.html

[33]रायटर्स, "चाइना टू सेंड ट्रूप्स टू रशिया फॉर ज्वायंट मिलिट्री एक्सरसाइजेज", अल जजीरा, 18 अगस्त 2022, https://www.aljazeera.com/news/2022/8/18/china-to-send-troops-to-russia-for-joint-military-exercises

[34]यूके पार्लियामेंट, "इंटीग्रेटेड रिव्यू ऑफ सिक्योरिटी, डिफेंस, डेवलपमेंट एंड फॉरेन पॉलिसी", (लंदन: हाउस ऑफ लार्ड्स लाइब्रेरी, 16 अप्रैल 2021),), https://lordslibrary. parliament.uk/integrated-review-of-security-defence-development-and-foreign-policy/

[35]को हिरानो एंड व्लियम हॉलिंगवर्थ, "यूक्रेन क्राइसिस टू स्लो यू. के. एंगेजमेंट इन इंडो-पैसिफिक", *द जापान टाइम्स* (टोकियो), 16अगस्त, 2022, https://www. japantimes.co.jp/news/2022/08/16/world/politics-diplomacy-world/ukraine-crisis-uk-indo-pacific-pm/

[36]थॉमस वीडर और फिलिप रिकार्ड, " लेकर फ्रांस एंड जर्मनी मार्क क्लियर डिफरेंस विथ द यूएस ओवर वॉर इन यूक्रेन", ले मोंडे (पेरिस), 10 मई, 2022, https:// www.lemonde.fr/en/international/article/ 2022/05/10/france-and-germany-mark-clear-differences-with-us-over-war-in-ukraine_5983016_4.html

[37]विलियम आर. हॉकिन्स, "नाटो नेवीज़ सेंड स्ट्रैटेजिक सिग्नल्स इन द इंडो-पैसिफिक", प्रोसीडिंग्स, संस्करण 48, अंक 8 (अमेरिकन नवल इंस्टीट्यूट, अगस्त 2022), https://www.usni. org/magazines/proceedings/2022/august/nato-navies-send-strategic-signals-indo-pacific

[38]यूजीन चौसोव्स्की, "तुर्की इज बिगेस्ट स्विंग प्लेयर इन रूशिया-यूक्रेन वार", फॉरेन फॉलिसी, 11 अगस्त, 2022, https://foreignpolicy.com/2022/08/11/ turkey-russia-ukraine-war-swing-player/; जारेड मालसिन, "टर्कीज एर्दोगन कैपिटलाइजेज ऑन यूक्रेन क्राइसिस एज ग्रिप एट होम वेवर्स", वॉल स्ट्रीट जर्नल, 6 जून, 2022, https://www.wsj.com/articles/turkeys-erdogan-capitalizes-on-ukraine-crisis-as-grip-at-home-wavers-11654511811

[39]डैरेन टच, "ए शिफ्ट इन कनाडा-यूएस रिलेशंस शेप्ड बाय चाइना", ऑन द नॉर्दर्न फ्रंटियर (विल्सन सेंटर:

वाशिंगटन डीसी, 13 जुलाई, 2021) https://www. wilsoncenter.org/article/shift-canada-us-relations-shaped-global-china

[40]डैरेन टच, "ए शिफ्ट इन कनाडा-यूएस रिलेशंस शेप्ड बाय चाइना", ऑन द नॉर्दर्न फ्रंटियर (विल्सन सेंटर: वाशिंगटन डीसी, 13 जुलाई, 2021), https://www. wilsoncenter.org/article/shift-canada-us-relations-shaped-global-china

[41]फिनबार बर्मिंघम, "ईयू एंड जापान टू फोर्ज यूनाइटेड फ्रंट अगेन्स्ट चाइना एंड रशिया एट समिट", *साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट (हांगकांग), 9 मई 2022*,, https://www.scmp.com/news/china/diplomacy/article/3177096/eu-and-japan-forge-united-front-against-china-and-russia

[42]रम आओयामा, "चाइना-जापान टाइज ट्विस्टेड एंड टेस्टेड बाय इंडो-पैसिफिक फ्रेमवर्क", एशिया टाइम्स (हांगकांग), 21 जुलाई, 2022, https://asiatimes.com/2022/07/china- japan-ties-twisted-and-tested-by-indo-pacific-framework/

[43]रॉयटर्स, "रशिया, चाइना इन 'स्ट्रेटेजिक कनवर्जेन्स' - ऑस्ट्रेलियन इंटेलिजेन्स", एशिया-पैसिफिक, 9 मार्च, 2022, https://www.reuters.com/world/asia-pacific/russia- attacks-ukraine-china-eyes-indo-pacific-australia-intelligence-boss-2022-03-09/

[44]टिफ़नी टर्नबुल, "यूक्रेनियन वार: ऑस्ट्रेलियन पीएम विजिट्स कीव, प्लेजेज मोर मिलिट्री ऐड", बीबीसी न्यूज, 4 जुलाई 2022, https://www.bbc.com/news/world- australia-61991110

[45]डैनियल फ्लिटन, "ऑस्ट्रेलिया: इज द यूनाइटेड स्टेट्स स्टिल अ रिलायबल अलाई?", काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस (न्यूयॉर्क), 11 मई, 2020, https://www.cfr.org/blog/australia- united-states-still-reliable-ally

[46]Stephan Fruehling, "AUKUS कुड फिल द गैप्स इन ANZUS ", द स्ट्रेटेजिस्ट, 6 अक्तूबर 2021, https://www.aspistrategist.org.au/aukus-could-help-fill-the-gaps-in-anzus/

[47]लुसी क्रेमर, "न्यूज़ीलैंड टू डिप्लॉय 120 ट्रुप्स टू ब्रिटेन टू ट्रेन यूक्रेनियन ट्रुप्स", रॉयटर्स, 14 अगस्त 2022, https://www.reuters.com/world/nz-deploy- 120-troops-britain-train-ukrainian-troops-2022-08-15/

[48]बेन मैके, "पैसिफ़िस्ट न्यूज़ीलैंड रिफ्यूजेज टू सेंड वीपन्स टू हेल्प यूक्रेन रिपेल रशियन इनवेडर्स एंड ओनली सेंड 'ह्यूम्निटेरियन' हेल्प"। डेली मेल (कैनबरा), 2 मार्च 2022, https://**Error! Hyperlink reference not valid.** html

[49]स्वर्ण सिंह, "डिकोडिंग चाइनाज़ 'न्यू नॉर्मल' ताइवान पॉलिसी", एशिया टाइम्स (हांगकांग), 12 अगस्त, 2022, https://asiatimes.com/2022/08/decoding-chinas- new-normal-taiwan-policy/

[50]मीडिया सेंटर, "3 मार्च को क्वाड लीडर्स की वर्चुअल मिटिंग", विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, 3 मार्च, 2022, https://www.mea.gov.in/ press-releases.htm?dtl/34924/Quad_Leaders_ Virtual_meeting_on_3March_2022

[51]द व्हाइट हाउस, फैक्ट शीट: क्वाड लीडर्स टोक्यो समिट 2022", 23 मई, 2022, https://**Error! Hyperlink reference not valid.** fact-sheet-quad-leaders-tokyo-summit-2022/; द व्हाइट हाउस, "क्वाड लीडर्स स्टेटमेंट", 24 मई, 2022, https://www.whitehouse.gov/briefing-room/ statements-releases/2022/05/24/quad-joint-leaders-statement/

[52]रूस के राष्ट्रपति, " एक नए युग में प्रवेश करने वाले अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और वैश्विक सतत विकास पर रूसी संघ और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का संयुक्त वक्तव्य", 4 फरवरी, 2022, http://en.kremlin.ru/supplement/5770; इवा डो "ह्वाट इज - एंड इज नॉट - इन द ज्वॉयंट स्टेटमेंट ऑफ पुतिन एंड शी", द वाशिंगटन पोस्ट, 4 फरवरी, 2022,https://www.washingtonpost.com/world/2022/ 02/04/russia-china-xi-putin-summit-statement-beijing/

[53]चाइना न्यूज, "शी जिनपिंग ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वलादिमिर ज़ेलेंस्की के साथ फोन पर बात की", संयुक्त राज्य अमेरिका में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का दूतावास, 13 जुलाई 202213 July 2022, https://www.mfa.gov.cn/ce/ceus/eng/zgyw/t1891990.htm

[54]"राष्ट्रपति शी जिनपिंग फ्रांस और जर्मनी के नेताओं के साथ एक आभासी शिखर सम्मेलन आयोजित करते हैं", 8 मार्च 2022, "राज्य पार्षद और विदेश मंत्री वांग यी प्रेस से मिले",7 जुलाई 2022, https://www.fmprc.gov.cn/eng/zxxx_662805/202203/t20220308_10649559.html

[55]पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के विदेश मंत्रालय, "President Xi Jinping Holds a Virtual Summit with Leaders of France and Germany", "राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने फ्रांस और जर्मनी के नेताओं के साथ एक आभासी शिखर सम्मेलन आयोजित किया", 8 मार्च 2022, https://www.fmprc.gov.cn/eng/zxxx_662805/202203/t20220308_10649839.html; लियू झेन, "शी टेल्स शोल्ज़ दैट यूरोपस सिक्योरिटी शुड बी केप्ट इन द हैंड ऑफ यूरोपियन्स", साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट (हांगकांग), 10 मई 2022, https://www.scmp.com/news/china/diplomacy/article/3177099/xi-tells-scholz-europes- security-should-be-kept-hands

[56]जॉन फेंग, "चाइना प्रेज़ेज़ यूक्रेन रेसिस्टेन्स, प्लेजेस इकोनॉमिक सपोर्ट", न्यूज़वीक, 16 मार्च 2022,https://www.newsweek.com/china-praises-ukraine- resistance-pledges-economic-support-1688608

[57]जॉन झी, "चाइना ड्राइव्स वेजेस इन यूरोप टू ब्रेक अप यूएस प्रपोज्ड एलायंस", वॉयस ऑफ अमेरिका, 18 फरवरी, 2021,https://www.voanews.com/a/east-asia- pacific_voa-news-china_china-drives-wedges-europe-break-us-proposed-alliance/6202236.html

[58]द व्हाइट हाउस, *नेशनल सिक्योरिटी स्ट्रेटेजी ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स*, दिसंबर 2017, https://trumpwhitehouse.archives.gov/wp-content/uploads/2017/12/NSS-Final-12-18-2017-0905.pdf,पृ. 45-46.

[59]द व्हाइट हाउस, *इंडे-पैसिफिक स्ट्रेटेजी ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स*, फरवरी 2022, https://www.whitehouse.gov/wp-content/uploads/2022/02/U.S.-Indo-Pacific- Strategy.pdf, p. 5.

[60]स्वर्ण सिंह और यवेस तिबरघियन, "पेलोसी की यात्रा ताइवान पर यूएस-चीन समझौता को पटरी से उतार सकती है", ईस्ट एशिया फोरम, (कैनबरा), 8 अगस्त 2022,https://www. eastasiaforum.org/ 2022/08/08/pelosis-visit-could-derail-us-china-compromise-over-taiwan/

[61]डेविड स्कॉट, ऐश रॉसिटर और ब्रेंडन जे. कैनन (संपा) में "यूएस *स्ट्रेटेजिक री-पोजिशनिंग टू द* इंडो-पैसिफ़िक", कान्फ्लिक्ट्स एंड कोऑपरेशन इन इंडो-पैसिफ़िक न्यू ज्योग्राफिकल रियलिटीज (न्यूयॉर्क: रूटलेज, 2020), पृ.. 81.

[62]टिमोथी डॉयल और डेनिस रुमली, द राइज एंड रिटर्न ऑफ द इंडो-पैसिफिक, (न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019), पृ.2.

---

[1]Eurostat, 2022, फ्रॉम ह्वेयर डू वी इंपोर्ट एनर्जी? https://ec.europa.eu/eurostat/cache/infographs/energy/bloc-2c.html

[2]हल्सर, सी. और पाराशिव, एफ. (2022)। "पाथवेज टू ओवरकमिंग नेचुरल गैस डिपेंनडेन्सी ऑन रशिया- - द जर्मन केस", एनर्जी, 15(14): 1-24।

[3]बरन जे, (2007). "ईयू एनर्जी सिक्योरिटी: टाइम टू रशियन लेवरेज", वाशिंगटन क्वार्टर्ली, 30(4): 131-144.

[4]हल्सर, सी. और पाराशिव, एफ. (2022)। "पाथवेज टू ओवरकमिंग नेचुरल गैस डिपेंनडेन्सी ऑन रशिया- - द जर्मन केस", एनर्जी, 15(14): 1-24.

[5]आईएमएफ, (2022) जर्मनी, आर्टिकल IV कंशल्टेशन—प्रेस रिलीज; स्टॉफ रिपोर्ट; एंड स्टेटमेंट बाय द एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर फॉर जर्मनी, सं.22/229: 1-88.

[6]यूरोपियन काउंसिल, (2022) ईयू सॉलिडरिटी विद यूक्रेन, https://www.consilium.europa.eu/en/policies/eu-response-ukraine-invasion/eu-solidarity-ukraine/

[7]पूर्वोक्त

[8]ड्रेज़नर, डेनियल.डब्ल्यू., (2003) "हाउ स्मार्ट आर स्मार्ट सैंक्शन्स," इंटरनेशनल स्टडीज रिव्यू,5(1): 107-110.

[9]स्कोल्ज, ओलाफ, (2022), पॉलिसी स्टेटमेंट, जर्मनी के संघीय गणराज्य के चांसलर और जर्मन बुंडेस्टाग, बर्लिन के सदस्य, https://www. bundesregierung.de/breg-en/news/policy-statement-by-olaf-scholz-chancellor-of-the-federal-republic-of-germany-and-member-of-the-german-bundestag-27-february-2022-in-berlin-2008378

[10]गुस्ताफसन, ठाणे (2020)। द ब्रिज - नेचुरल गैस इन ए रिडिवाइडेड यूरोप। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[11]ईईएएस, (2022) जोसेप बोरेल, द वार इन यूक्रेन एंडइट्स इंप्लिकेशन्स फॉर ईयू, https://www.eeas.europa.eu/eeas/war-ukraine-and-its-implications-eu_en

[12]यूरोपियन काउंसिल, (2022) ईयू सॉलिडरिटी विद यूक्रेन, https://www.consilium.europa.eu/en/policies/eu-response-ukraine-invasion/eu-solidarity-ukraine/

[13]फोर्सबर्ग, टूमास और हिस्की हौक्कला। 2016. द यूरोपीयन यूनियन एंड रशिया। लंदन: पालग्रेव मैकमिलन।

[14]पूर्वोक्त

राजदूत
पी.एस. राघवन

राजदूत पी.एस. राघवन भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड (एनएसएबी) के अध्यक्ष हैं, जो रणनीतिक और सुरक्षा मुद्दों पर भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद को सलाह देता है। वह भारत और बाहर के विभागों और थिंक टैंकों के साथ इन मुद्दों पर काम करता है। उन्होंने 1979 से 2016 तक, यूएसएसआर, यूके, पोलैंड, दक्षिण अफ्रीका और वियतनाम में राजनयिक पदों पर कार्य किया और चेक गणराज्य, आयरलैंड और रूस में भारत के राजदूत रहे। 2000 से 2004 तक, वे प्रधानमंत्री कार्यालय में संयुक्त सचिव थे, तथा विदेशी मामलों, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित थे। विदेश मंत्रालय में सचिव (2013-14) के रूप में, वे भारत के बाहरी आर्थिक संबंधों और प्रशासन, सुरक्षा और ई-गवर्नेंस विभागों के प्रभारी थे। उन्होंने डेवलपमेंट पार्टनरशिप एडमिनिस्ट्रेशन की स्थापना की और उसका नेतृत्व किया, जो विकासशील देशों के साथ भारत की आर्थिक

राजदूत
डी. बी. वेंकटेश वर्मा

राजदूत डी. बी. वेंकटेश वर्मा 1988 से 2021 तक भारतीय विदेश सेवा के सदस्य थे। अपने राजनयिक करियर के दौरान, उन्होंने विदेश मंत्रालय, विदेश मंत्री के कार्यालय और प्रधानमंत्री कार्यालय में काम किया। अक्तूबर 2021 तक, वे जिनेवा में निरस्त्रीकरण पर सम्मेलन में भारत के राजदूत के रूप में, स्पेन के साम्राज्य और रूसी संघ में कार्यरत रहे। उनके पास परमाणु, मिसाइल और अंतरिक्ष कार्यक्रमों सहित भारत की सुरक्षा और रक्षा नीतियों का व्यापक अनुभव है। उन्होंने 2010-2013 के बीच विदेश मंत्रालय में निरस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रभारी संयुक्त सचिव के रूप में भी कार्य किया। वे सिविल न्यूक्लियर इनिशिएटिव वार्ता में उनके योगदान के लिए 2011 में भारतीय विदेश सेवा में उत्कृष्टता के लिए एस. के. सिंह पुरस्कार के पहले प्राप्तकर्ता थे। वर्तमान में वे विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन में एक प्रतिष्ठित फेलो हैं।

प्रोफेसर
स्वर्ण सिंह

डॉ. स्वर्ण सिंह वर्तमान में, राजनीति विज्ञान विभाग, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय (वैंकूवर परिसर) विजिटिंग प्रोफेसर हैं; वे कैनेडियन ग्लोबल अफेयर्स इंस्टीट्यूट (कैलगरी) के फेलो; प्रोफेसर और पूर्व अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति संगठन और निरस्त्रीकरण केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) और द चारहर इंस्टीट्यूट (बीजिंग) में एसोसिएशन ऑफ एशिया स्कॉलर्स के अध्यक्ष और राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन के वरिष्ठ फेलो संस्थान श्री लंका) और युन्नान आर्थिक और वित्त विश्वविद्यालय (चीन) में विजिटिंग प्रोफेसर रहे हैं।

उनकी हाल की किताबों में चाइना एंड द इंडो-पैसिफिक: मैन्यूवर्स एंड मेनिफेस्टेशंस (पालग्रेव फरवरी 2023), मल्टीलेटरलिज्म इन द इंडो-पैसिफिक: कॉन्सेप्चुअल एंड ऑपरेशनल चैलेंजेस (लंदन: रूटलेज 2022), रिविजिटिंग गांधी: लेगेसीज फॉर वर्ल्ड पीस एंड नेशनल इंटीग्रेशन (सिंगापुर): वर्ल्ड साइंटिफिक, 2021) और कॉरिडोर्स ऑफ एंगेजमेंट (नई दिल्ली: नॉलेज वर्ल्ड 2020) शामिल हैं। वे पूर्व में ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, बीजिंग यूनिवर्सिटी, चुओ, क्योटो और हिरोशिमा यूनिवर्सिटी, फिलीपींस यूनिवर्सिटी, साइंस पो (बोर्डो), स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट, ज़ियामेन यूनिवर्सिटी और अन्य में विजिटिंग प्रोफेसर/स्कॉलर रह चुके हैं।

वे कई चयन समितियों के बोर्ड में बैठते हैं और कई पत्रिकाओं के संपादकीय/सलाहकार बोर्ड दृश्य, ऑडियो, प्रिंट और ऑनलाइन मीडिया की एक श्रृंखला में एशियाई मामलों (विशेष रूप से चीन) पर नियमित रूप से टिप्पणी करते हैं।

प्रोफेसर सिंह ने 39 पीएचडी और 50 से अधिक एमफिल डिग्री के पुरस्कार का पर्यवेक्षण किया है और सोसाइटी ऑफ इंडियन ओशन स्टडीज, कम्युनिटीज विदाउट बॉर्डर्स जैसे संस्थानों के बोर्ड सदस्य हैं और वे देश और विदेश में विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रक्षा और शैक्षणिक संस्थानों में नियमित रूप से व्याख्यान देते हैं। उनके आलेख कोलंबिया जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स; जर्नल ऑफ इंडियन ओशन रीजन, इश्यूज एंड स्टडीज, बीआईआईएसएस जर्नल में प्रकाशित हो चुके हैं और नियमित रूप से एशिया टाइम्स, चाइना डेली, ग्लोबल टाइम्स जैसे समाचार पत्रों के लिए लिखते हैं। उन्होंने चौदह पुस्तकें लिखी हैं और वे चीन और पूर्वी एशिया में उच्च शिक्षा के कई संस्थानों के साथ काम करते हैं। उनसे ट्विटर @SwaranSinghJNU पर संपर्क किया जा सकता है।

योगदानकर्ताओं के बारे में

प्रोफेसर

उम्मु सलमा बावा

प्रोफेसर डॉ. उम्मु सलमा बावा यूरोपीय अध्ययन की प्रोफेसर हैं और यूरोपीय संघ, सुरक्षा, शांति और संघर्ष समाधान (ईयू-एसपीसीआर) में जीन मोनेट चेयर हैं। वे, यूरोपीय अध्ययन केंद्र (अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल की पूर्व अध्यक्ष; यूजीसी यूरोप क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम की निदेशक और जवाहरलाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत की निदेशक हैं। वे विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में एक अतिथि संकाय भी थीं। शिक्षण और अनुसंधान और प्रशासनिक क्षेत्र के तीस से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ, वे घरेलू और विदेशी और सुरक्षा नीति पर ध्यान देने के साथ समकालीन यूरोप, यूरोपीय संघ, जर्मनी और भारत के प्रमुख भारतीय विशेषज्ञों में से एक हैं। वे क्षेत्रीय एकीकरण और संगठन, उभरती शक्तियों, अंतरराष्ट्रीय राजनीति, वैश्विक शासन, मानदंडों और शांति और संघर्ष समाधान और उच्च शिक्षा पर भी काम करती है। प्रोफेसर बावा को जर्मनी के संघीय गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा जनवरी 2012 में जर्मनी के सर्वोच्च नागरिक सम्मान-प्रतिष्ठित ऑर्डर ऑफ मेरिट (बुंडेसवर्डिएनस्टक्रेउज़) से सम्मानित किया गया था।

भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ **एच.एन.** कुंजरू के नेतृत्व में प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। परिषद आज इन-हाउस फैकल्टी के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान आयोजित करती है। यह नियमित रूप से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यानों सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित करता है और कई प्रकार के प्रकाशन निकालता है। इसके पास एक अच्छी तरह से भंडारित पुस्तकालय और एक सक्रिय वेबसाइट है, साथ ही यह भारत त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आईसीडब्ल्यूए के पास अंतर्राष्ट्रीय थिंक टैंक और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन हैं। भारत के प्रमुख अनुसंधान संस्थानों, थिंक टैंकों और विश्वविद्यालयों के साथ भी परिषद की भागीदारी है।

भारतीय वैश्विक परिषद

सप्रू हाउस, नई दिल्ली